G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

ISSN : 2320-0391

सृजन ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अप्रैल-जून २०१७ त्रैमासिक पत्रिका

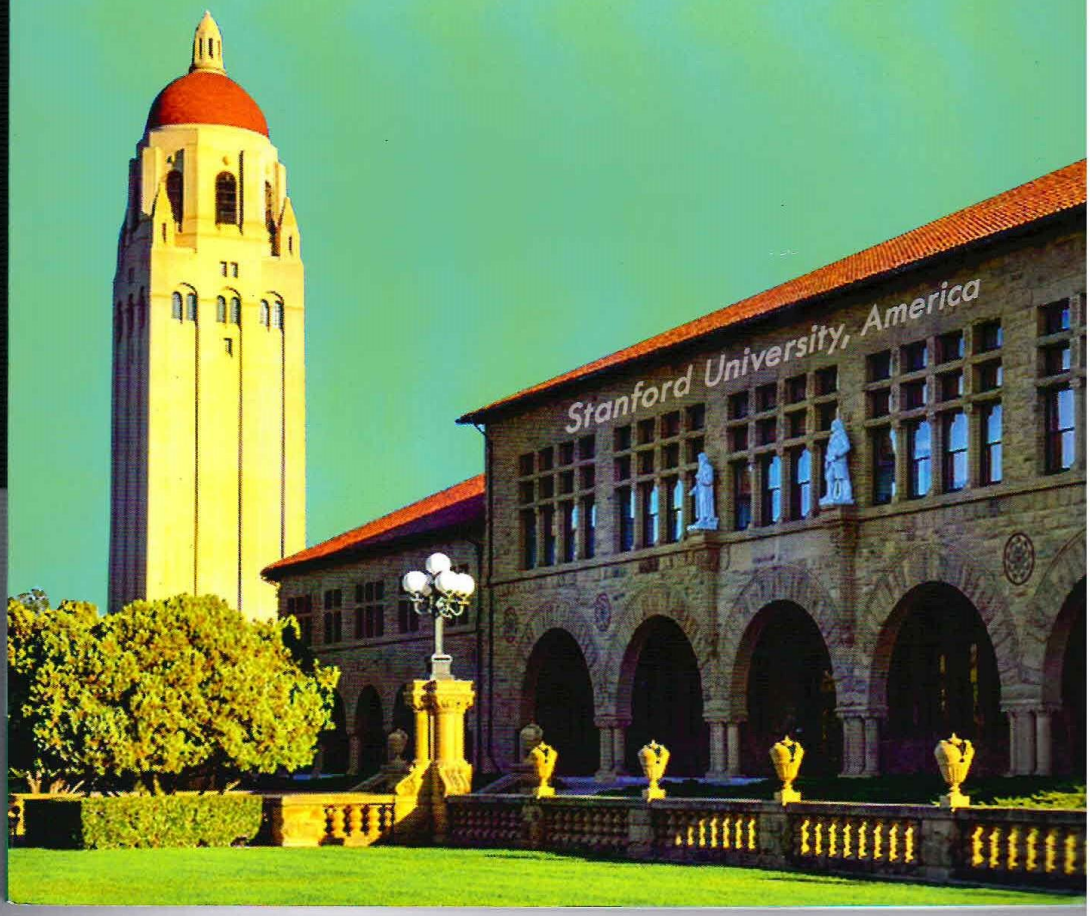

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

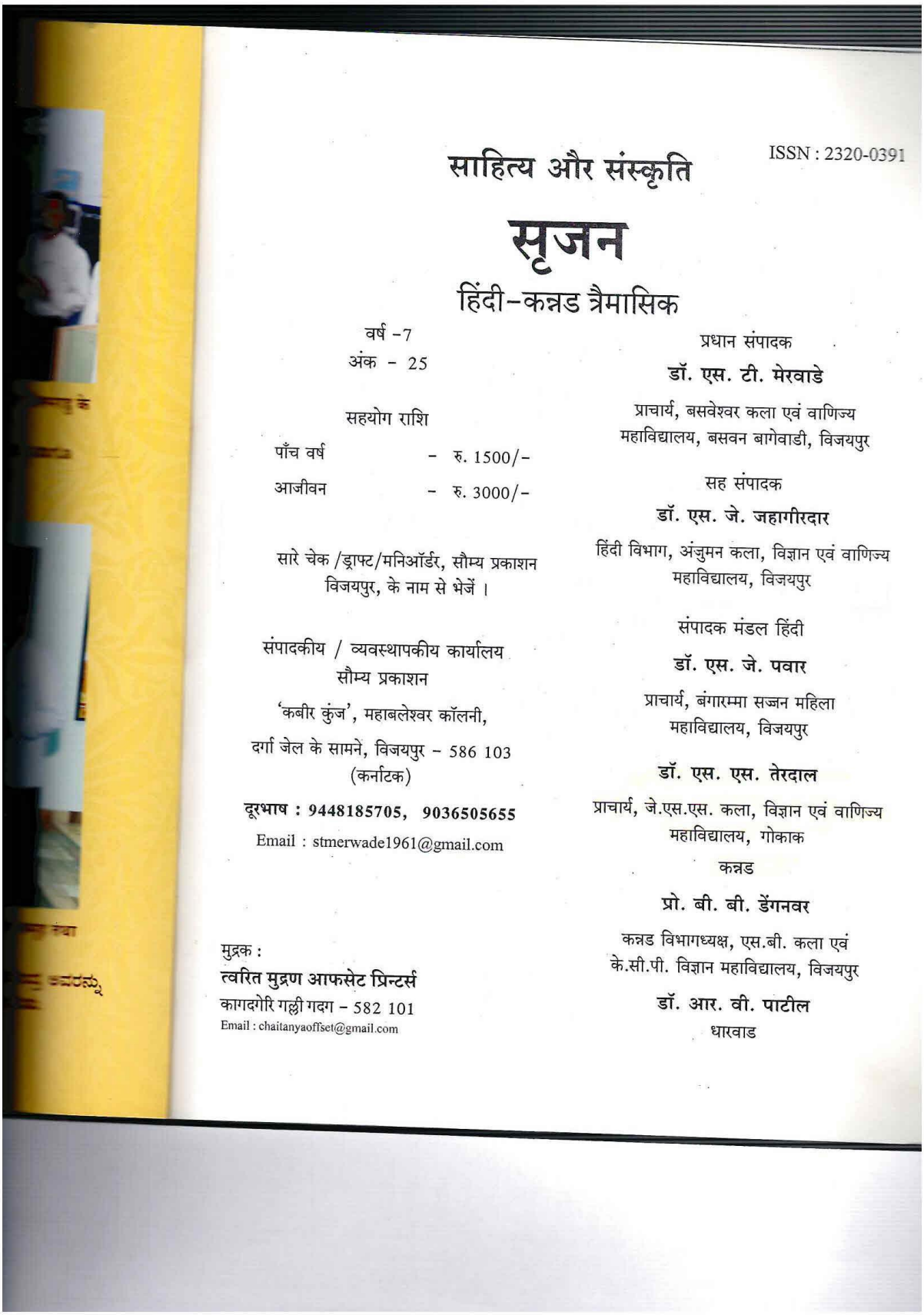

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी–कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -7
अंक - 25

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-

आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
प्राचार्य, बंगारम्मा सज्जन महिला महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
प्राचार्य, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभागध्यक्ष, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अक्टूबर-दिसम्बर २०१९

Dr.S.S.Terdal
'Shivashanti' Professor colony
Extestion, Gokak Dist-Belagavi

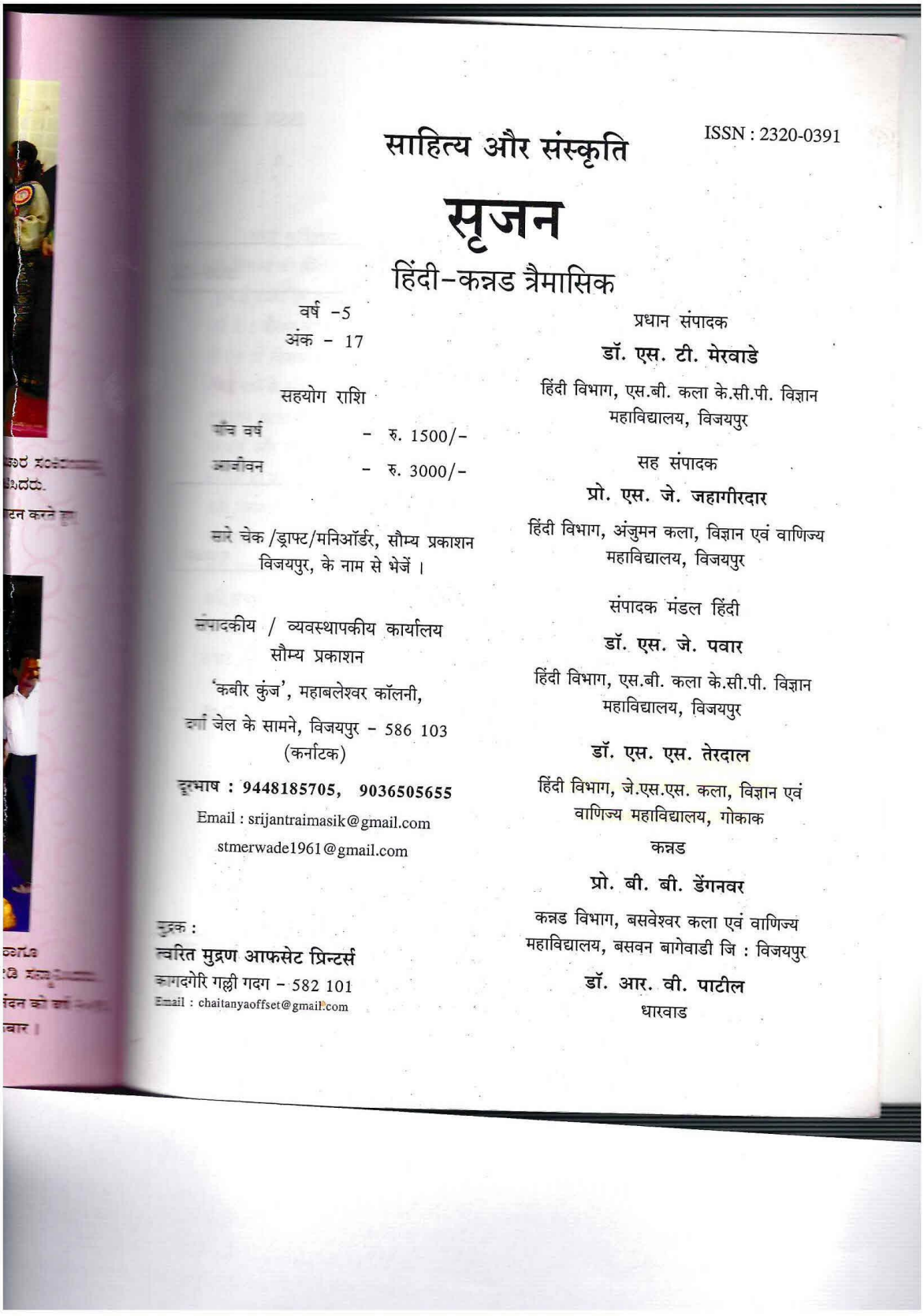

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 17

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-
आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
प्रो. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

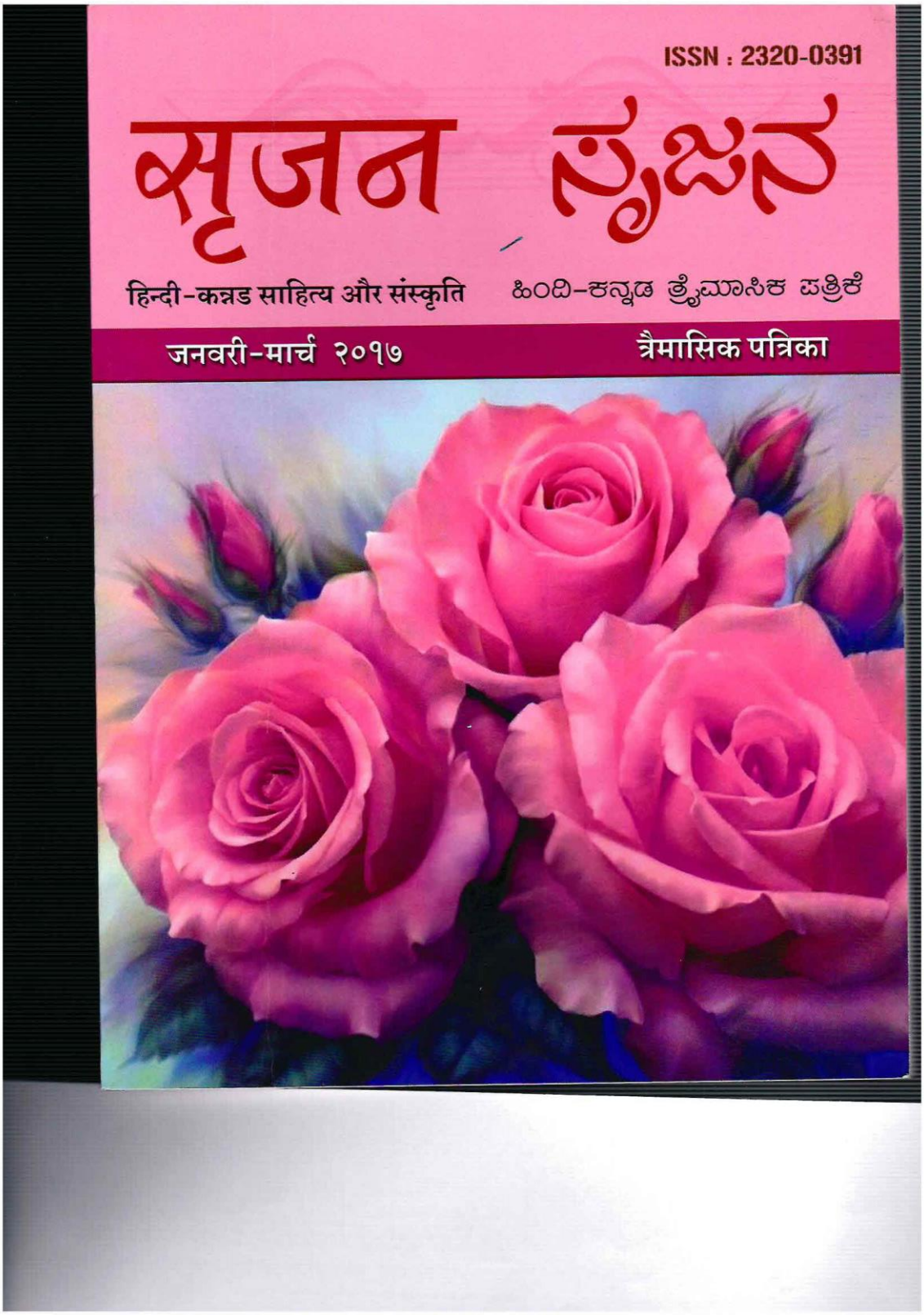

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 19

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-

आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
प्रो. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

जुलाई - सितम्बर २०१७

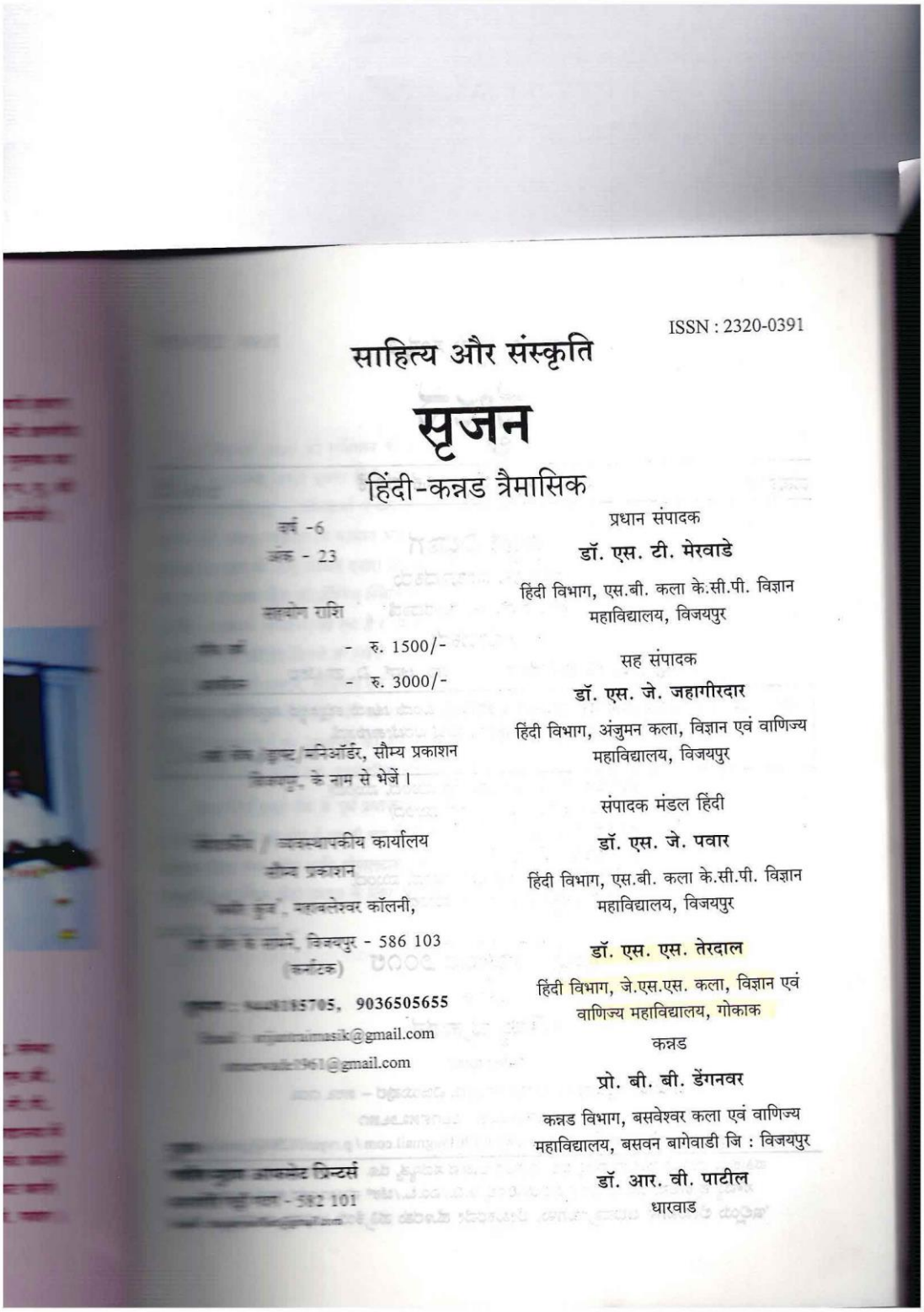

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -6
अंक - 23

सहयोग राशि
[illegible] - रु. 1500/-
[illegible] - रु. 3000/-

[illegible] ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन
[illegible] के नाम से भेजें ।

[illegible] / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
[illegible], महाबलेश्वर कॉलनी,
[illegible] के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
[illegible]85705, 9036505655
[illegible]masik@gmail.com
[illegible]961@gmail.com

[illegible] आफसेट प्रिन्टर्स
[illegible] - 582 101

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान
महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान
महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

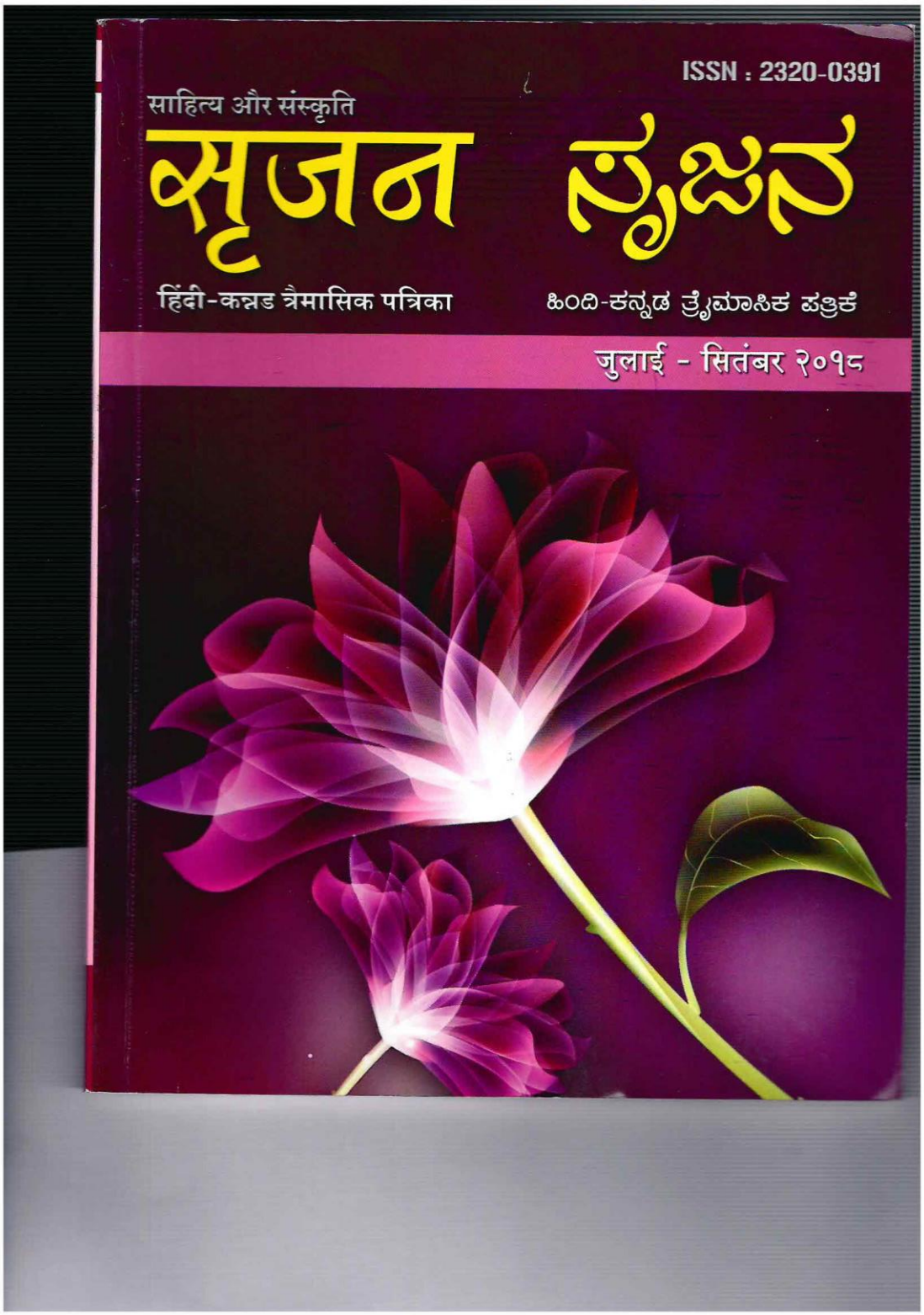

अनुक्रम

लेख

1.	हिन्दी की आदर्श गुरु माता डॉ. नंदिनी गुंडुराव	• डॉ. जुबेदा हाशिम मुल्ला	1
2.	महानगरीय ग्लैमर की पड़ताल करता उपन्यास 'देशनिकाला'	• डॉ. शंकर एस. तेरदाल	3
3.	आदिवासियों के अस्तित्व से जूझता उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता'	• डॉ. एस. जे. जहागीरदार	5
4.	सारिकयुक्त वीणा की स्वरस्थापन-विधि और स्वरों के क्रमिक विकास	• श्री काशिलिंग मठ	13
5.	दिविक रमेश की बाल कविता में मित्रता का भाव	• अश्विनी के.	18
6.	वर्तमान शिक्षा पध्दति का खुला दस्तावेज : उसका सपना	• वर्षाराणी जबड	20
7.	राजेन्द्रमोहन भटनागर के साहित्य में अछूतोध्दार के हेतु अम्बेडकर का योगदान	• विजयकुमार मेघण्णवर	24
8.	'युगपुरुष अंबेडकर' उपन्यास में इतिहास और कल्पना	• डॉ. हनमंत जी. मलतवाडकर	26
9.	असगर वजाहत के कहानियों में सामाजिक अंतर्विरोध	• राघवेन्द्र वी. मिस्किन	29

कविता

10.	सत्तर साल कहानी	• प्रो. देवराज	31
11.	जलपरियाँ	• बाबुषा कोहली	34

पुस्तक समीक्षा

12.	मुक्तिबोध जन्म शती पर हैदराबाद की पहल - 'अंधेरे में : पुनर्पाठ'	• डॉ. मंजु शर्मा	33

■■

ಓದಗರೆ....

ದೇಶದ ಬಗ್ಗೆ ಗೌರವ-ತಿಳುವಳಿಕೆ ಇಂದಿನ ಸಮುದಾಯದಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನರೂಪ ತಳೆದಿದೆ. ಸತ್ಯ,
ಸೌಹಾರ್ದಯುತ ಸಮಾಜ ನಿರ್ಮಾಣದ ಕನಸು ಹೊತ್ತ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರ ದೇಶ ಪ್ರೇಮ
ಕಾರಿ ಹೋರಾಟಗಾರರ ದೇಶಭಕ್ತಿ. ಎರಡು ಅಷ್ಟೇ ಮುಖ್ಯ. ಆದರೆ ಇಂದು ಅವುಗಳ
ಯವಿಲ್ಲದೆ ಭಿನ್ನರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಅರ್ಥೈಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ ಏರ್ಪಟ್ಟಂತಿದೆ. ಇಂದು ಮಹಾತ್ಮಾ
ಕಾಗಿದೆ. ಇಡೀ ವಿಶ್ವವೇ ಗಾಂಧೀಜೀಯವರ ಕುರಿತು ಅಪಾರ ಗೌರವವನ್ನು ಇಂದಿಗೂ
ರ ಇಲ್ಲದ, ಮುಖ್ಯ ಸ್ಥಾನ ಮಾನಗಳಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರು ಮಡಿದಾಗ, ವಿಶ್ವಸಂ
ಲ್ಲಿ ದೇಶಗಳ ಧ್ವಜಗಳನ್ನು ಅರ್ಧಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಿದರು. ಆಗ ಒಬ್ಬರು ವಿಶ್ವ ಸಂಸ್ಥೆಯ ಸೆಕ್ರೆಟ್ರಿಯಟ್
ತ ಧ್ವಜವನ್ನಷ್ಟೇ ಅರ್ಧಕ್ಕೆ ಇಳಸಬೇಕಿತ್ತು ಆದರೆ ಎಲ್ಲ ದೇಶಗಳ ಧ್ವಜವನ್ನು ಏಕೆ ಅರ್ಧಕ್ಕೆ
ಯಟ್ ಜನರಲ್ ಹೀಗೆ ಹೇಳಿದರು- ಗಾಂಧೀಜಿ ಮಾನವೀಯತೆಯ ಪ್ರತೀಕವಾಗಿದ್ದರು.
ನುಷತ್ವ ನಾಶವಾಯಿತು ಅದಕ್ಕೆ ಎಂದರಂತೆ. ಹೀಗೆ ಮಾನವೀಯತೆ, ಶಾಂತಿ, ತ್ಯಾಗ,
ಸಿದವರು ಮಹಾತ್ಮ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರು ಇಂದು ನಮಗೆಲ್ಲ ಅನುಕರಣೀಯ. ಐನಸ್ಟೈನ್
ಹೀಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ ಮಾಂಸ, ರಕ್ತಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಗಾಂಧಿಯಂತ ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯ ಭೂಮಿ
ಂಬಲಸಾಧ್ಯ ಎಂದು. ಇಂದಿನ ಯುವ ಜನಾಂಗಕ್ಕೆ ಬೇಕಾಗಿರುವುದು ಗಾಂಧೀಜಿ ಶಾಂತಿ,
ರಸ್ಪರ ಸಹಬಾಳ್ವೆ, ಇವುಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು ಬದುಕಿದ್ದೆ ಆದರೆ ಭಾರತ ಬದುಕುತ್ತದೆ,
ವುಗಳ ಮೂಲಕ ನಮ್ಮೊಂದಿಗಿರುತ್ತಾರೆ. ಹೀಗೆ ನಾವೆಲ್ಲಾ ಈ ಗಾಂಧೀಜಿ ಹಾಗೂ
ನೆಯ ದೇಶಭಕ್ತಿಯನ್ನು ರಕ್ತದ ಕಣ-ಕಣದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು ಭಾರತಕ್ಕಾಗಿ ಉಸಿರು,
ಕ್ಕಾಗಿ ಬುದ್ಧಿ, ಅಧ್ಯಾತ್ಮಕ್ಕಾಗಿ ಮನಸ್ಸು, ಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಚರ್ಚೆ, ಪ್ರೀತಿ-ನಂಬಿಕೆಗಾಗಿ
ಅಂದಾಗ ಈ ಇಬ್ಬರು ಮಹಾತ್ಮರ ಜಯಂತಿಯ ಆಚರಣೆ ಸಾರ್ಥಕ ಎಂಬ ಸದಾಶಯದೊಂ
ಮ್ಮ ಕೈಯಲ್ಲಿದೆ.

ಖನಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳು ಆಯಾ ಲೇಖನದ ಲೇಖಕರದ್ದೆ ಹೊರತು ಪತ್ರಿಕೆ ಹಾಗೂ ಸಂ

ಧನ್ಯವಾದಗಳು.

अनुक्रम

लेख

... अली	• डॉ. जुबेदा एच. मुल्लाँ	1
... का पर्दाफाश करता उपन्यास : ...	• डॉ. एस. टी. मेरवाडे	3
... के संघर्ष की कथा 'भ्रमभंग'	• डॉ. शंकर तेरादाल	7
... विश्वभाषा की ओर	• प्रो. एम. ए. पीराँ	10
... की त्रासदी को व्यक्त करता उपन्यास ...	• डॉ. साहेबहुसैन जे. जहागीरदार	12
... के संघर्ष में प्रमिला	• डॉ. बसवराज के. बारकेर	19
... क्रांतिकारी विचारधारा के प्रवर्तक	• सुमी चोपडे	22
... की कहानियों में यथार्थबोध	• लोकेश	25

दोपहर से पूर्व दोनों 'कोठारी मेंशन' के छोटे से कमरे
हुँच गए। कमरे के अंदर सभी घरेलू आवश्यक वस्तुएँ
ूद थी। रेवा चाय बनाने के लिए स्टोव्ह जलाने लगी।
न जैसे ही खिड़की खोलने के लिए गया तो दादा को
नी ओर ताकते हुए पाया और खिड़की पुन: बंद कर दी।
से विरेन ने दादा के नीचे खड़े होने की बात बता दी।
न सोच रहा था कि दादा कहीं यहाँ भी फसाद न कर
वह टेलीफोन कर पुलीस को बुलाना चाहता था लेकिन
ने ऐसा न करने की सलाह दी। रेवा स्वयं खिड़की खोलने
गई। बोली, दादा बाहर क्यों खड़े हो? ऊपर आ जइए।

विवेच्य उपन्यास से यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती
क यह मटियानी जी की पहली कृति है जिसे उन्होंने 'श्री
भलेपुरी हॉउस' में काम से अवकाश के क्षणों में लिखा
चूँकि प्रस्तुत रचना में शैलेश मटियानी जी ने अपना
हुआ यथार्थ ज्यों-का-त्यों चित्रित कर दिया है। दूसरी
यह कि लेखक अपने 'गर्दिश' के दिनों में जब मुंबई
में संघर्षरत थे उसे बड़ी तल्खी के साथ उकेरा है। हाँ,
अवश्य कहा जा सकता है कि सन 60 आते-आते
उपन्यास में शिल्प के धरातल पर नये प्रयोग हो रहे थे।
ग्रास लेखन में काफी बदलाव आ गए थे। 'बहती गंगा'
व प्रसाद मिश्र 'रूद्र' 'काशिकेय'), 'सूरज का सातवाँ

घोडा' (धर्मवीर भारती) जैसे उपन्यासों में [illegible]
का सफलतम प्रयोग हो चुका था। यह बात [illegible]
मटियानी जी का अध्ययन सिमित था, साथ ही [illegible]
विशेषकर अंग्रेजी उपन्यासों में जो बदलाव आ [illegible]
परिचित नहीं थे, फिर भी लिखने की जबर्दस्त [illegible]
कारण प्रतिकूल परिस्थितियों में रहते हुए भी [illegible]
प्रथम कृति के माध्यम से यह प्रतीति तो करा [illegible]
उनके अंदर लिखने की अदभुत क्षमता है। मुंबई [illegible]
का बड़ा ही सजीव, सशक्त तथा विशद् चित्रण [illegible]
उपन्यास में किया गया है। विशेषकर वेश्याओं [illegible]
लेकर। लेकिन मटियानी जी ने जिस प्रकार विरेन, [illegible]
दादा को अंत में इकट्ठा दिखाया है, वह फिल्मी [illegible]
अधिक कुछ नहीं है। मटियानी जी उपन्यास को [illegible]
समापन की दिशा में बढ़ाए हैं, उससे उप[illegible]
सरलीकरण हुआ है। फिल्मी प्रभाव से यह उप[illegible]
आप को बचा नहीं पाया है। शैलेश जी फिल्मी [illegible]
कथा को सुखांत बनाने के अपने लोभ का संवरण [illegible]
पाए हैं। फिर भी 'बोरीवली से बोरीबंदर तक' [illegible]
महानगर के चित्रण में मटियानी जी सफल रहे हैं।

हिंदी विभाग, एस.बी.कला एवं के.सी.पी.विज्ञान महाविद्यालय, [illegible]
मो. [illegible]

[illegible] परिवार के संघर्ष की कथा 'भ्रमभंग'

• डॉ. शंकर तेरादाल

[illegible] ठाकुर की प्रथम
[illegible] 'भ्रमभंग' है जिसका प्रकाशन सन
[illegible] के चर्चित हिंदी उपन्यासों में
[illegible]। प्रस्तुत उपन्यास में निम्न
[illegible] जो आर्थिक विपन्नता के
[illegible] हालत दयनीय है।
[illegible] अपने अनिश्चित भविष्य
[illegible] तमाम प्रकार के अभावों
[illegible] की परीक्षा उत्तीर्ण करता
[illegible] नौकरी से अवकाश प्राप्त कर
[illegible] बेटा भी फौज में हवलदार
[illegible] में उनकी मदद कर
[illegible] जो आगे पढना चाहता
[illegible] और पूरे परिवार को बेहतर
[illegible]। चंदन संघर्ष कामी
[illegible]। कैंटीन में जूठी
[illegible] काम करने में, अखबार
[illegible]। वह कोचिंग क्लास
[illegible] ट्यूशनों के लिए अपनी
[illegible] के एक कोने से दूसरे कोने
[illegible] अपनी पढाई जारी रख सके
[illegible]।

एम. ए. की उपाधि मिलने पर वह अपना भाग्य आजमाने के लिए मुंबई महानगर में अपने चाचा के पास आता है। सांताक्रुज में कालूराम वर्मा की चाल में कुछ कमी तक वह गुजरा करता है और फिर अपने मित्र रमेश पालिवाल के पास 'भारत लॉज' में रहने के लिए चला जाता है। वह बी.एड. करने के इरादे से देहरादून लौट जाता है लेकिन इसके पूर्व उसने सिटी कॉलेज में व्याख्याता पद हेतु आवेदन पत्र दे दिया था। सिटी कॉलेज में जब उसे साक्षात्कार के लिए रमेश ने सूचना दी, उस समय चंदन के पास न तो ठीक से कपड़े ही थे, न ही ट्रेन का किराया। किसी प्रकार मित्रों के सहयोग से चंदन मुंबई पहुँच गया। सिटी कॉलेज में उसका साक्षात्कार हुआ और बाद में चलकर वह उस कॉलेज में हिंदी का प्राध्यापक बन गया।

मुंबई सिटी कॉलेज में पढने वाले उच्च वर्ग के लडके-लडकियाँ। डेढ़ सौ विद्यार्थियों की क्लासें। एक अलग वातारवण। हिंदी के प्रति छात्रों में कोई ललक नहीं। क्लास में छात्रों की उद्दंडता। आखिर इन सारी परिस्थितियों के बीच चंदन को समझौता करना ही पड़ा। तीन सौ रुपये महीने की नौकरी जो थी। जीने का एक सहारा तो मिल ही गया था। चंदन प्रतिमाह अपने वेतन का आधा हिस्सा घर भेज दिया करता था। फिर भी घरवालों का दबाव बढ़ता ही जा रहा था। कॉलेज में पढ़ते समय मेघा नामक एक लडकी

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

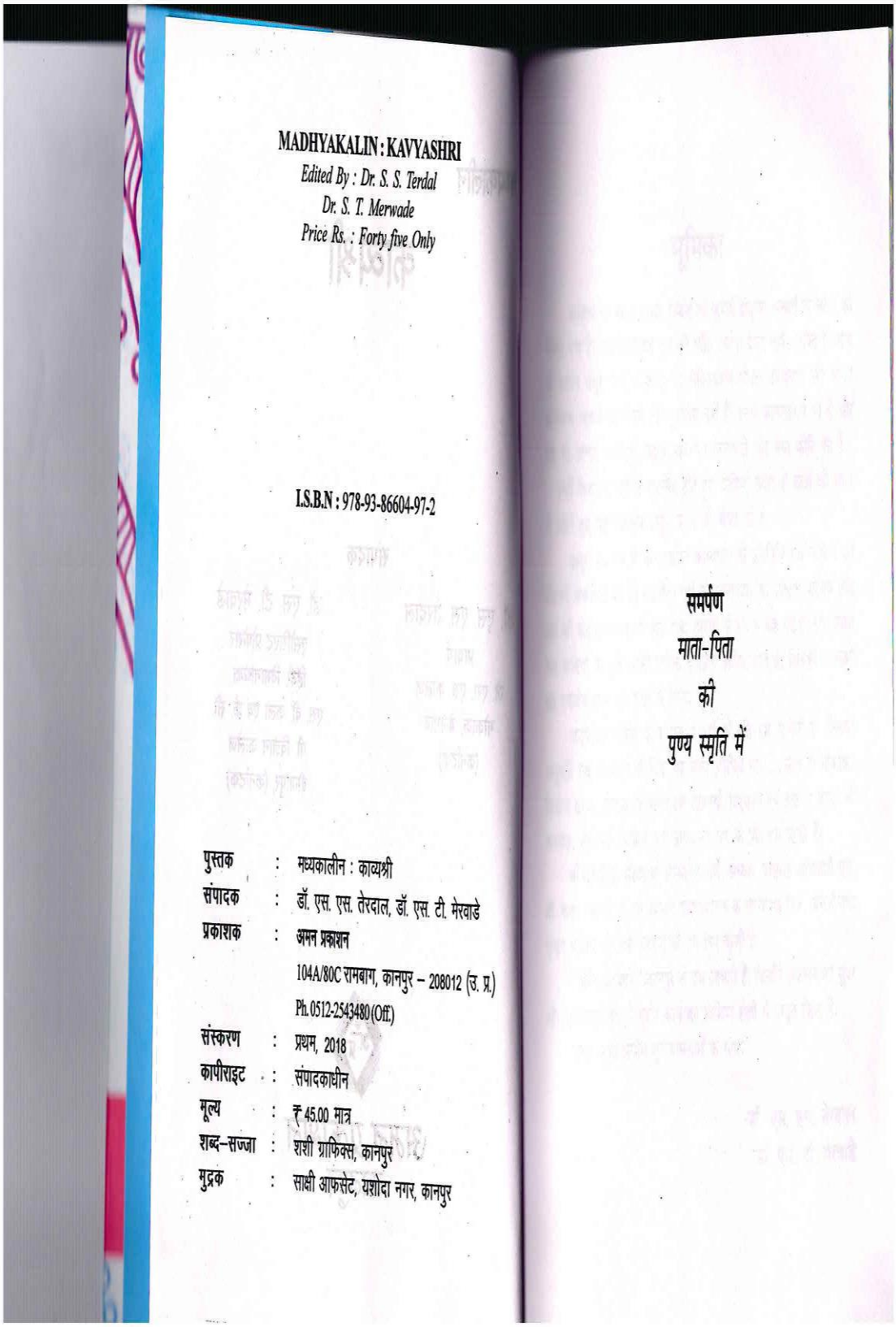

MADHYAKALIN : KAVYASHRI

Edited By : Dr. S. S. Terdal
Dr. S. T. Merwade
Price Rs. : Forty five Only

I.S.B.N : 978-93-86604-97-2

समर्पण
माता-पिता
की
पुण्य स्मृति में

पुस्तक : मध्यकालीन : काव्यश्री
संपादक : डॉ. एस. एस. तेरदाल, डॉ. एस. टी. मेरवाडे
प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104A/80C रामबाग, कानपुर – 208012 (उ. प्र.)
Ph. 0512-2543480 (Off.)
संस्करण : प्रथम, 2018
कापीराइट : संपादकाधीन
मूल्य : ₹ 45.00 मात्र
शब्द-सज्जा : शशी ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : साक्षी आफसेट, यशोदा नगर, कानपुर

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

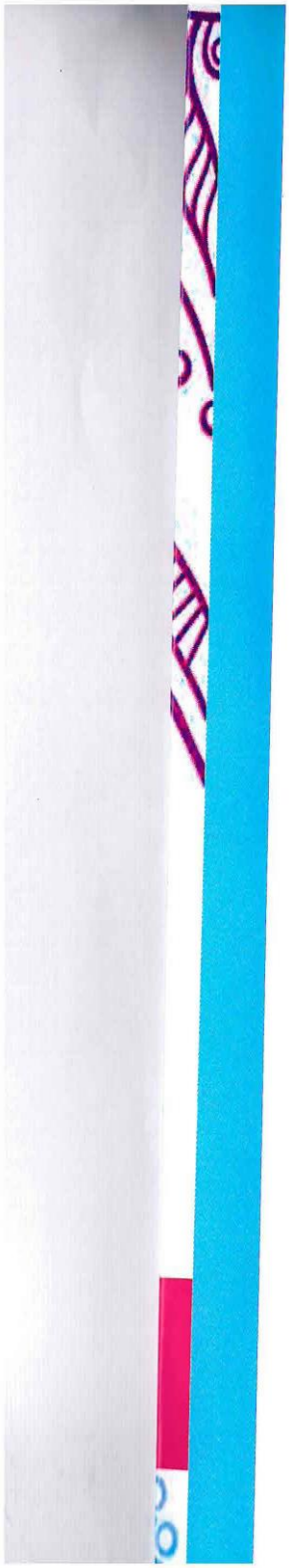

काव्यश्री

संपादक

डॉ. एस. टी. मेरवाडे
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
एस. बी. कला एवं के. सी.
पी. विज्ञान कालेज
बीजापुर, (कर्नाटक)

जागृत प्रकाशन
कानपुर

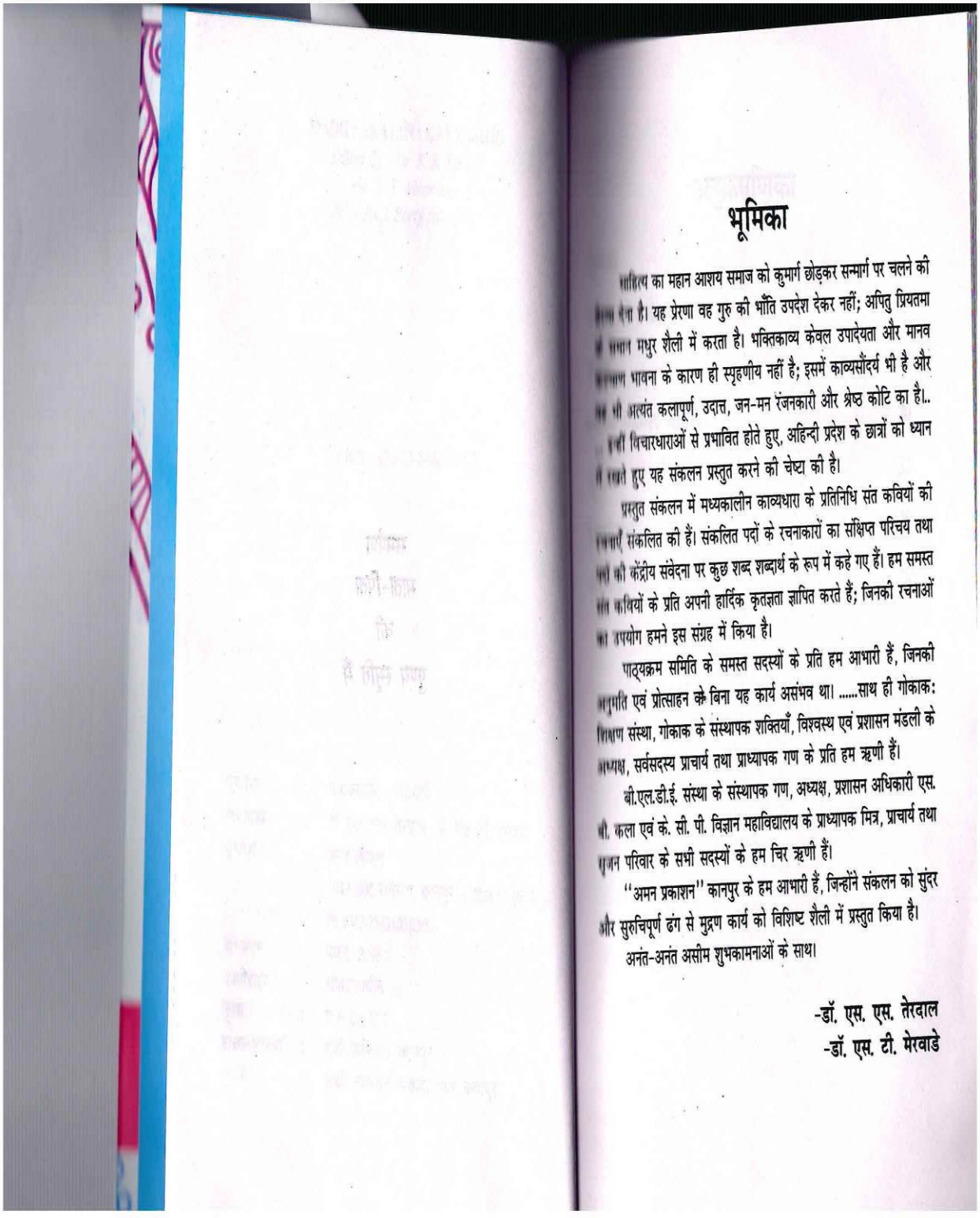

भूमिका

साहित्य का महान आशय समाज को कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना है। यह प्रेरणा वह गुरु की भाँति उपदेश देकर नहीं; अपितु प्रियतमा के समान मधुर शैली में करता है। भक्तिकाव्य केवल उपादेयता और मानव कल्याण भावना के कारण ही स्पृहणीय नहीं है; इसमें काव्यसौंदर्य भी है और वह भी अत्यंत कलापूर्ण, उदात्त, जन-मन रंजनकारी और श्रेष्ठ कोटि का है।.. इन्हीं विचारधाराओं से प्रभावित होते हुए, अहिन्दी प्रदेश के छात्रों को ध्यान में रखते हुए यह संकलन प्रस्तुत करने की चेष्टा की है।

प्रस्तुत संकलन में मध्यकालीन काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवियों की रचनाएँ संकलित की हैं। संकलित पदों के रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय तथा पदों की केंद्रीय संवेदना पर कुछ शब्द शब्दार्थ के रूप में कहे गए हैं। हम समस्त संत कवियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं; जिनकी रचनाओं का उपयोग हमने इस संग्रह में किया है।

पाठ्यक्रम समिति के समस्त सदस्यों के प्रति हम आभारी हैं, जिनकी अनुमति एवं प्रोत्साहन के बिना यह कार्य असंभव था। .....साथ ही गोकाक: शिक्षण संस्था, गोकाक के संस्थापक शक्तियाँ, विश्वस्थ एवं प्रशासन मंडली के अध्यक्ष, सर्वसदस्य प्राचार्य तथा प्राध्यापक गण के प्रति हम ऋणी हैं।

बी.एल.डी.ई. संस्था के संस्थापक गण, अध्यक्ष, प्रशासन अधिकारी एस. बी. कला एवं के. सी. पी. विज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापक मित्र, प्राचार्य तथा सृजन परिवार के सभी सदस्यों के हम चिर ऋणी हैं।

"अमन प्रकाशन" कानपुर के हम आभारी हैं, जिन्होंने संकलन को सुंदर और सुरुचिपूर्ण ढंग से मुद्रण कार्य को विशिष्ट शैली में प्रस्तुत किया है।

अनंत-अनंत असीम शुभकामनाओं के साथ।

-डॉ. एस. एस. तेरदाल
-डॉ. एस. टी. मेरवाडे

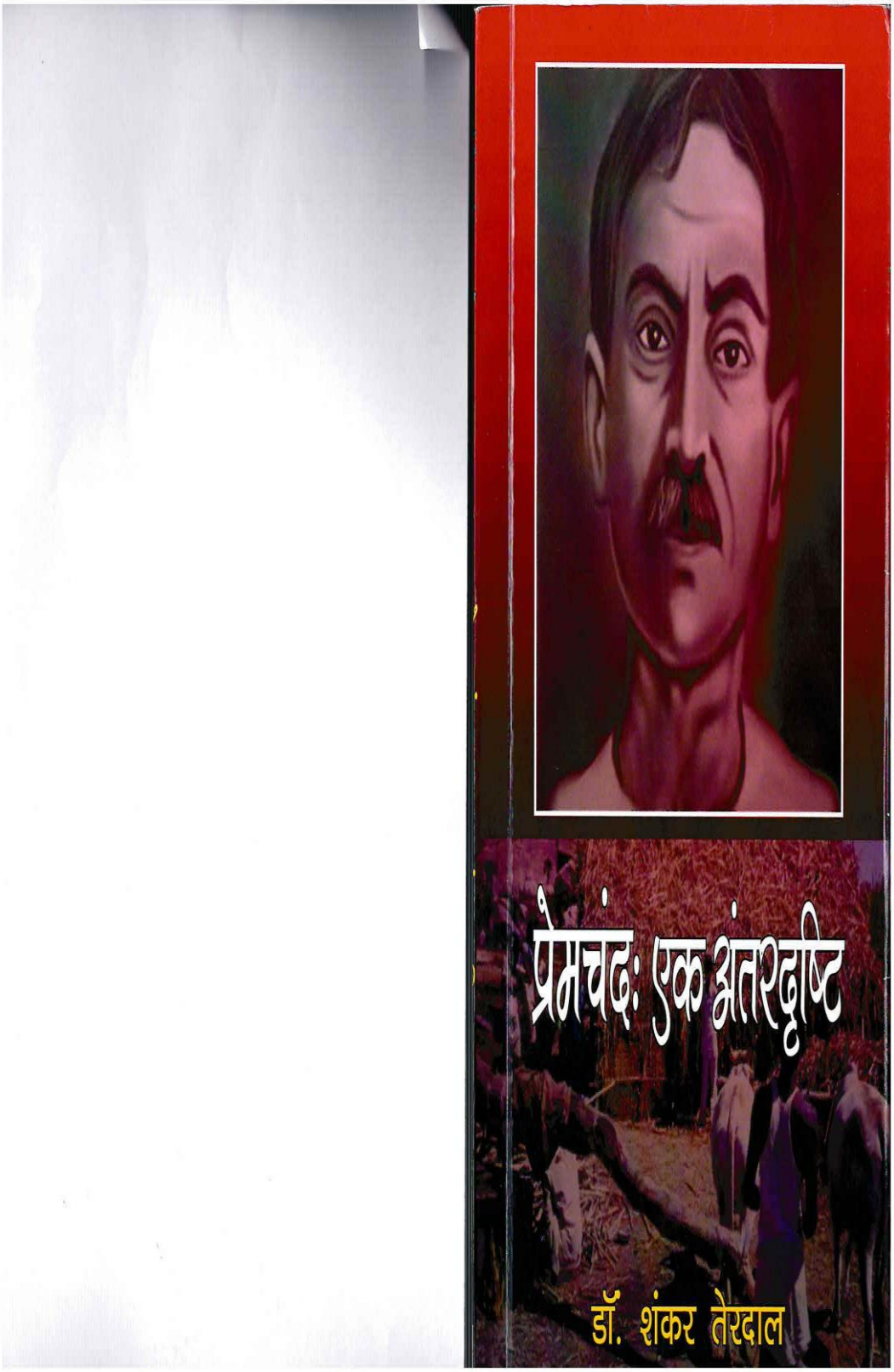
प्रेमचंद: एक अंतर्दृष्टि
डॉ. शंकर तेरदाल

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलैक्ट्रानिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकापी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रेमचंदः एक अंतरदृष्टि

© लेखक

आई एस बी एन : 978-93-81326-71-8

मूल्य : 300/-

प्रथम संस्करण : 2017

प्रकाशक : लेखनी

सरस्वती निवास, यू-9, सुभाष पार्क,
नजदीक सोलंकी रोड,
उत्तम नगर, नई दिल्ली - 110059 (भारत)
दूरभाष: 011-25333264, 9911242336
ई-मेल: rkgpost@gmail.com
वेबसाईट: www.aegop.com

शब्दांकन : स्टार ग्रॉफिक्स एण्ड प्रिंटर्स, नई दिल्ली

मुद्रक : मास्टर बिजनेस सॉलुशन, नई दिल्ली – 110059

दो बातें

[illegible] के लिए जीना सिखाते हैं। प्रेमचन्द को बचपन से ही न [illegible] वातावरण से परिचय प्राप्त हुआ, अपितु निम्न [illegible] में पालित-पोषित होने के कारण जीवन की कठिनाइयों का [illegible]

[illegible] युगांतकारी सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार है। साहित्य में विशेष रूप [illegible] जीवन का चित्रण मिलता है। हिन्दी साहित्य के [illegible] प्रेमचन्द ने अनेक विधाओं में साहित्य का सृजन किया है। [illegible] उपन्यास, नाटक, आलोचना और अन्य साहित्यिक विधाओं [illegible] की छाप छोड़ी है। प्रेमचन्द की कृतियों ने हिन्दी [illegible] शिल्प के नूतन आयामों से समृद्ध कर हिन्दी रंगमंच को भी [illegible]। प्रेमचन्द ने अपने निजी जीवन तथा साहित्य के क्षेत्रों में [illegible] संवेदनाओं तथा कष्टों का अनुभव किया है, उन्होंने उन्हें [illegible]। सतही तौर पर ऐसा लगता है कि प्रेमचन्द का व्यक्तित्व [illegible] और उनकी जिन्दगी अव्यवस्था की अनवरत श्रृंखला है।

[illegible] की प्रक्रिया जितनी अनिवार्य होती है, उतनी ही [illegible] चेतना का विकास जैसे बढ़ता है अभिव्यक्ति के नये-नये [illegible]

[illegible] शिक्षण संस्था के प्रशासन एवं विश्वस्थ मंडली के अध्यक्ष, [illegible] प्राध्यापक गण के प्रति बहुत आभारी हैं।

[illegible], नई दिल्ली के हम अभारी हैं, जिन्होंने संकलन को सुन्दर तथा [illegible] मुद्रण-कार्य को विशिष्ठ शैली में प्रस्तुत किया है।

[illegible] शुभकामनाओं के साथ.....

डॉ. शंकर तेरदाल

प्रेमचंद: एक अंतरदृष्टि

[illegible] और विचार

[illegible] किसान परिवार में 31 जुलाई, सन् 1880 को बनारस के [illegible] हुआ था। पिता का नाम मुन्शी अजायब राय और माता का [illegible]। माता-पिता ने इनका नाम धनपतराय रखा था। पाँच-छः वर्ष [illegible] गाँव के करीब लालगंज नामक गाँव में एक मौलवी [illegible] और उर्दू पढ़ने के लिए भेजा गया। थोड़ी-सी पढ़ाई और ढेरों [illegible] जिन्दगी के साथ-साथ माँ और दादी के लाड़-प्यार में लिपटे [illegible] दिन बड़े मस्ती में व्यतीत हो रहे थे कि उसकी माँ बीमार पड़ [illegible] बीमार पड़ीं कि बालक धनपत को इस भरे संसार के अकेला [illegible]। तब धनपत केवल सात साल का था। जिसे माँ पान के पत्ते [illegible] करती थीं, वह बालक धनपत अब बेसहारा-सा हो गया था। [illegible] सारे काम के बोझ के कारण दबे रहते थे। ऊपर से तबादलों [illegible] कभी बस्ती, कभी गोरखपुर, कानपुर, इलाहाबाद तो कभी [illegible] आदि। वे किसी एक स्थान पर जमकर न रह पाते थे।

[illegible] बचपन से ही न केवल कृषक-जीवन के वातावरण से परिचय [illegible] मध्यवर्गीय परिवार में पालित-पोषित होने के कारण जीवन [illegible] भी अनुभव हुआ। इससे कठिनाइयों को झेलने की पर्याप्त शक्ति [illegible] अभिलाषाएँ भी प्रायः अधूरी रह जाती थीं। अपूर्ण [illegible] जीवन को लेकर वे जीवनपथ पर आगे बढ़े। जब वे पांच [illegible] शिक्षा प्रारंभ हुई। पिता को उर्दू के प्रति अत्यधिक रुचि थी।

समीक्षकों ने आलोच्य रचनाकार के व्यक्तित्व पर कई
किन्तु वे एक स्वतंत्र एवं सशक्त व्यक्तित्व को लेकर
नयी जीवन-दृष्टि एवं मानवीय संवेदना को मार्मिक
प्रतीत होते हैं। अपने विचित्र स्वभाव, स्वतंत्र विचार
वैयक्तिक मामलों के कारण वे कठघरे के रचनाकार
किन्तु प्रेमचन्द की कृतियों की अपेक्षा उनकी व्यक्तिगत
गये आरोपों के कारण समीक्षकों ने प्रेमचन्द की
को सीमाओं में बाँधने की कोशिश की है, जो अत्यन्त
की दृष्टि से वे अपने आप में एक संस्था हैं। वे
और लेखन-कार्य में प्रवृत्त होना चाहते थे। उन्हें प्रतिकूल
नहीं आता। वे किसी भी प्रभाव को ओढ़ना नहीं चाहते।
की तलाश में पस्त हो जाने के कारण वे कुछ
गए और अपने इस खालीपन और आंतरिक
अव्यवहारिकता एवं अप्रतिबद्धता के कारण उन्हें अपने
तीव्र दृष्टि सहन करनी पड़ी। वे अपने जीवन में
बरदाश्त नहीं करते। सतही तौर पर वे जितना असंगठित
संघटित और सुव्यवस्थित है उनकी लेखन की प्रक्रिया
जीवन के कई पक्षों ने उनके व्यक्तित्व को संघर्षशील
है। उनकी कृतियों में दिल और दिमाग का, सृजन
दिखाई पड़ता है। यथार्थ का प्रबल आग्रह और अनुभव
उनके बेचैन एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के विशिष्ट

हिन्दी साहित्य के प्रतिभावान रचनाकार प्रेमचन्द
साहित्य का सृजन किया है। प्रेमचन्द ने कहानी, उपन्यास,
अन्य साहित्यिक विधाओं पर अपने सर्जक व्यक्तित्व

...कता, अनुभूति की सच्चाई और यथार्थ के प्रबल आग्रह के कारण
...की कहानियों और उपन्यासों ने हिन्दी कथा-साहित्य के विकास को
...प्रदान की है। प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से नाटककार प्रेमचन्द की
...और उनकी मौलिक चिन्तन पद्धति उनकी रचना-साधना के कई
...में स्पष्टत: अभिव्यंजित होती है। परंपरागत एवं प्रचीन
...तथा प्रतिमानों को रौंदकर वस्तु, नाट्य-शिल्प और रंग-शिल्प के
...युक्तियों के सफल प्रयोग की दृष्टि से प्रेमचन्द की नाट्य-कृतियाँ
...विशिष्ट बन पड़ी हैं। अपने नाट्य-सिद्धांतों में नवीनता का समर्थन
...सृजनात्मक कलाकार के रूप में अपने सामयिक साहित्य की
...आरोप-प्रत्यारोप करने में आलोच्य रचनाकार की व्यवहारिक तथा
...समीक्षा पद्धति को अभिव्यक्ति के अनेक अवसर संप्राप्त हुए हैं।
...निबंध-साहित्य में मानव समाज के हित के पक्ष में साहित्य के मूल
...संबद्ध कई मुद्दों पर निबंध का स्वस्थ दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।
...में संकलित साहित्यिक निबंध प्रेमचन्द की समीक्षात्मक प्रतिभा व
...विचारों को स्पष्ट करते हुए समकालीन एवं परवर्ती रचनाकारों
...करते हैं। प्रेमचन्द ने अपनी समीक्षात्मक कृतियों में साहित्य
...नए सिद्धान्तों व प्रतिमानों की स्थापना का प्रबल आग्रह न कर
...परिवर्तित सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप सर्जनात्मक
...का प्रयास किया है। साहित्य रचना की पद्धति, स्वरूप और
...लेखकीय स्वतंत्रता के संबंध में प्रेमचन्द की मान्यतायें अत्यन्त
...मौलिक दृष्टिगत होती हैं। नई कहानी, नई कविता तथा अन्य नवीन
...में नवीनता पर प्रेमचन्द ने अपनी समीक्षाओं में जो महत्त्वपूर्ण
...उन्होंने आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास को नए आयाम
...दिए हैं। समीक्षक के रूप में यह निश्चय ही प्रेमचन्द की स्पृणीय

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

डॉ. एस. एस. तेरदाल का जन्म 1961 में गोकाक, जिला बेलगाँव, कर्नाटक में हुआ। उन्होंने शिक्षा एम.ए. (हिन्दी) शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर एवं पीएच.डी 2000 में कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड से की।

डॉ. तेरदाल ने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया है तथा वह विविध विश्वविद्यालय तथा कॉलेज पाठ्यक्रम एवं परीक्षा समिती के सदस्य के रूप में भी कार्यरत है।

डॉ. तेरदाल द्वारा अनेक पुस्तकों एवं लेखों का प्रकाशन भी हुआ है। वह सृजन-त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादक भी है। शोध निर्देशक एवं शोध प्रबन्ध का मौल्य मापक भी रहे है।

संप्रति : प्राचार्य
जे. एस. एस. कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं वि.वि.ए. महाविद्यालय एवं स्नातकोत्तर विभाग, गोकाक - 591307,
मो. 09844008078, 08332-225881
कार्यालय: 08332-225141

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

सुबोध हिन्दी व्याकरण

ISBN 978-93-83813-29-2

लेखक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे
डॉ. एस. एस. तेरदाल
डॉ. एस. जे. जहागीरदार

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
10, 'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कालोनी
दर्गा रोड, ओम शांति के पास
विजयपुर -586103 (कर्नाटक)
मो. 09448185705

संस्करण : 2017

पुट : viii + 110 = 118

मूल्य : **रु. 50/- मात्र**

मुद्रण :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगीर गल्ली, गदग - 582 101 (कर्नाटक)
Office : 8884495331

दो बातें

[illegible] विद्या है जिसके माध्यम से हमें शुद्ध रूप से लिखने-पढने [illegible] होता है। प्रत्येक भाषा का अपना अलग-अलग व्याकरण [illegible] भाषा विशेष के वर्ण, शब्द, ध्वनि और वाक्य के शुद्ध रूप और [illegible] नियम का सम्यक निरूपण किया जाता है। दूसरे शब्दों में [illegible] है जिसका निर्माण भाषा विशेष के लिए होता है और इससे [illegible] रूप तथा प्रयोग की नियमावली का ज्ञान होता है। भाषा [illegible] होता है और उसी के आधार पर उसका व्याकरण लिखा जाता [illegible] ही उस भाषा के स्वरूप और प्रयोग को नियमित तथा [illegible]। इसलिए व्याकरण, भाषा का विधान बनाने वाला शास्त्र है। [illegible] का सही ज्ञान न होने पर हमें भाषा का शुद्ध ज्ञान नहीं हो सकता [illegible] उसका शुद्ध अर्थ और प्रयोग समझ सकते हैं। अतः भाषा और [illegible] आपस में बहुत गहरा संबंध है।

[illegible] और व्याकरण के इस अंतःसंबंध को सरल रूप में समझने के लिए [illegible] बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को तैयार किया [illegible]। हमारा यह प्रयास है कि विद्यार्थी व्याकरण को सरल रूप से ग्रहण [illegible] भाषा को शुध्द बना सकें।

■■

मछुआरों की जिन्दगी की कथा-व्यथा [illegible] करता उपन्यास 'सागर, लहरें और [illegible]

• डॉ. शंकर तेरादाल

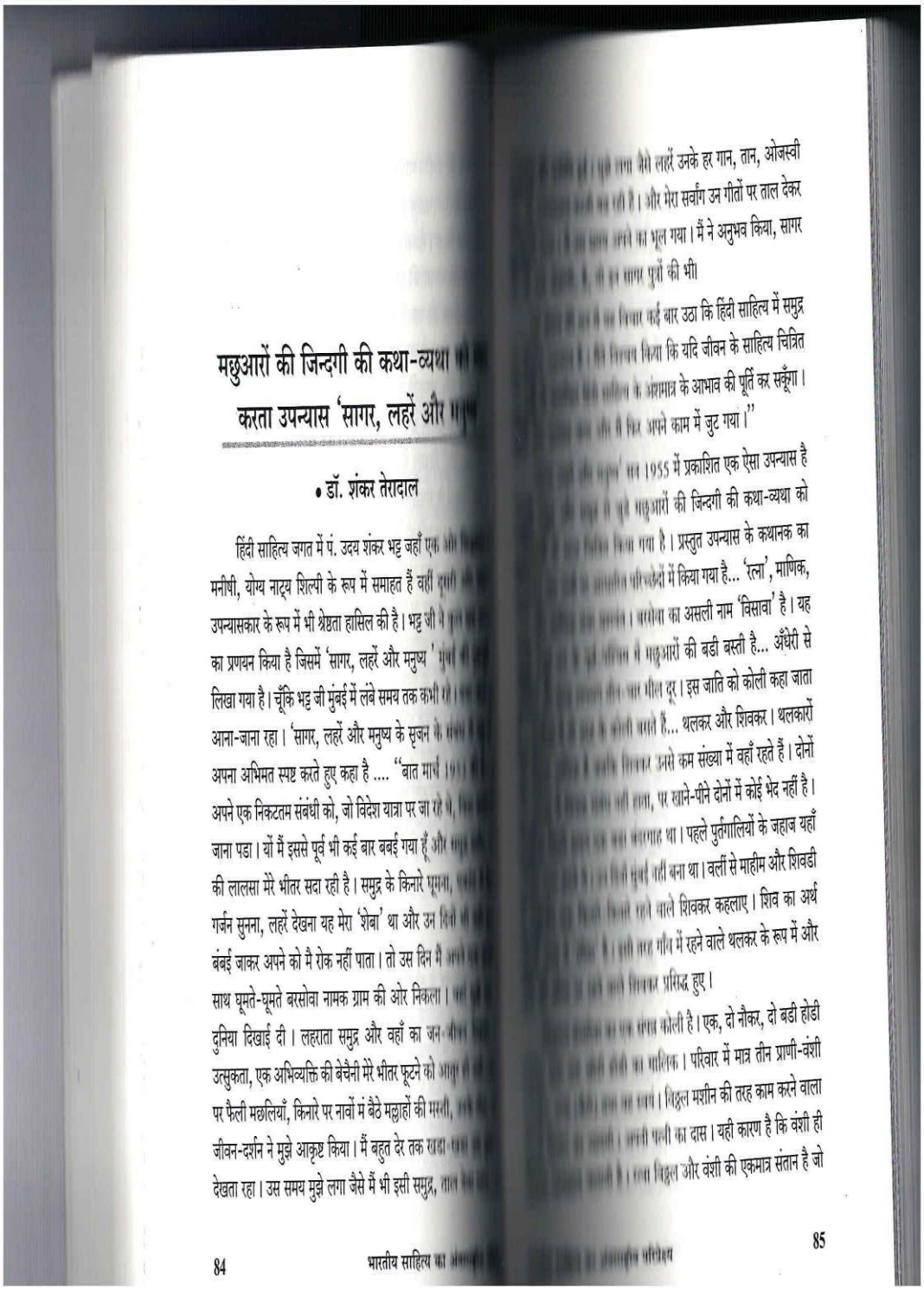

हिंदी साहित्य जगत में पं. उदय शंकर भट्ट जहाँ एक [illegible]
मनीषी, योग्य नाट्य शिल्पी के रूप में समाहत हैं वहीं [illegible]
उपन्यासकार के रूप में भी श्रेष्ठता हासिल की है। भट्ट जी ने [illegible]
का प्रणयन किया है जिसमें 'सागर, लहरें और मनुष्य' [illegible]
लिखा गया है। चूँकि भट्ट जी मुंबई में लंबे समय तक कभी [illegible]
आना-जाना रहा। 'सागर, लहरें और मनुष्य के सृजन [illegible]
अपना अभिमत स्पष्ट करते हुए कहा है .... "बात मार्च [illegible]
अपने एक निकटतम संबंधी को, जो विदेश यात्रा पर जा रहे [illegible]
जाना पडा। यों मैं इससे पूर्व भी कई बार बबई गया हूँ और [illegible]
की लालसा मेरे भीतर सदा रही है। समुद्र के किनारे घूमना, [illegible]
गर्जन सुनना, लहरें देखना यह मेरा 'शेबा' था और उन [illegible]
बंबई जाकर अपने को मै रोक नहीं पाता। तो उस दिन मैं [illegible]
साथ घूमते-घूमते बरसोवा नामक ग्राम की ओर निकला। [illegible]
दुनिया दिखाई दी। लहराता समुद्र और वहाँ का जन-[illegible]
उत्सुकता, एक अभिव्यक्ति की बेचैनी मेरे भीतर फूटने को [illegible]
पर फैली मछलियाँ, किनारे पर नावों में बैठे मल्लाहों की मस्ती, [illegible]
जीवन-दर्शन ने मुझे आकृष्ट किया। मैं बहुत देर तक खडा [illegible]
देखता रहा। उस समय मुझे लगा जैसे मैं भी इसी समुद्र, [illegible]

[illegible] लहरें उनके हर गान, तान, ओजस्वी
[illegible] । और मेरा सर्वांग उन गीतों पर ताल देकर
[illegible] का भूल गया। मैं ने अनुभव किया, सागर
[illegible] सागर पुत्रों की भी।

[illegible] विचार कई बार उठा कि हिंदी साहित्य में समुद्र
[illegible] किया कि यदि जीवन के साहित्य चित्रित
[illegible] अंशमात्र के आभाव की पूर्ति कर सकूँगा।
[illegible] फिर अपने काम में जुट गया।"

[illegible] सन 1955 में प्रकाशित एक ऐसा उपन्यास है
[illegible] मछुआरों की जिन्दगी की कथा-व्यथा को
[illegible] किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास के कथानक का
[illegible] परिच्छेदों में किया गया है... 'रत्ना', माणिक,
[illegible] । बरसोवा का असली नाम 'विसावा' है। यह
[illegible] मछुआरों की बडी बस्ती है... अँधेरी से
[illegible] मील दूर। इस जाति को कोली कहा जाता
[illegible] है... थलकर और शिवकर। थलकारों
[illegible] शिवकर उनसे कम संख्या में वहाँ रहते हैं। दोनों
[illegible], पर खाने-पीने दोनों में कोई भेद नहीं है।
[illegible] था। पहले पुर्तगालियों के जहाज यहाँ
[illegible] नहीं बना था। वर्ली से माहीम और शिवडी
[illegible] वाले शिवकर कहलाए। शिव का अर्थ
[illegible] गाँव में रहने वाले थलकर के रूप में और
[illegible] शिवकर प्रसिद्ध हुए।

[illegible] कोली है। एक, दो नौकर, दो बडी होडी
[illegible] का मालिक। परिवार में मात्र तीन प्राणी-वंशी
[illegible] । विठ्ठल मशीन की तरह काम करने वाला
[illegible] पत्नी का दास। यही कारण है कि वंशी ही
[illegible] । रत्ना विठ्ठल और वंशी की एकमात्र संतान है जो

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

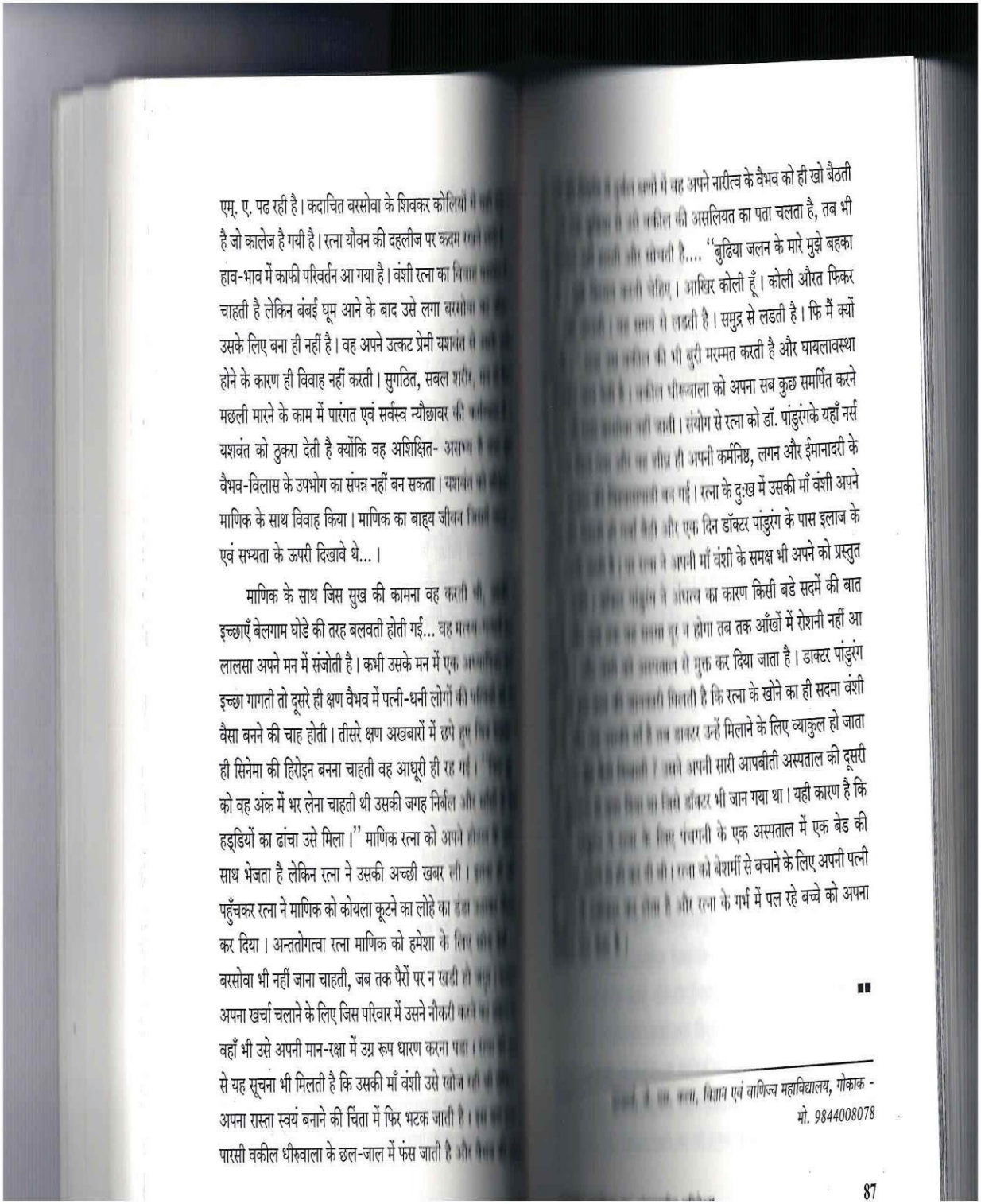

एम्. ए. पढ रही है। कदाचित बरसोवा के शिवकर कोलियों में
है जो कालेज है गयी है। रत्ना यौवन की दहलीज पर कदम
हाव-भाव में काफी परिवर्तन आ गया है। वंशी रत्ना का
चाहती है लेकिन बंबई घूम आने के बाद उसे लगा बरसोवा
उसके लिए बना ही नहीं है। वह अपने उत्कट प्रेमी यशवंत से
होने के कारण ही विवाह नहीं करती। सुगठित, सबल शरीर,
मछली मारने के काम में पारंगत एवं सर्वस्व न्यौछावर की
यशवंत को ठुकरा देती है क्योंकि वह अशिक्षित- असभ्य
वैभव-विलास के उपभोग का संपन्न नहीं बन सकता। यशवंत
माणिक के साथ विवाह किया। माणिक का बाह्य जीवन
एवं सभ्यता के ऊपरी दिखावे थे...।

माणिक के साथ जिस सुख की कामना वह करती थी,
इच्छाएँ बेलगाम घोडे की तरह बलवती होती गई... वह मत
लालसा अपने मन में संजोती है। कभी उसके मन में एक
इच्छा गागती तो दूसरे ही क्षण वैभव में पत्नी-धनी लोगों की
वैसा बनने की चाह होती। तीसरे क्षण अखबारों में छपे
ही सिनेमा की हिरोइन बनना चाहती वह आधूरी ही रह गई।
को वह अंक में भर लेना चाहती थी उसकी जगह निर्बल और
हड्डियों का ढांचा उसे मिला।" माणिक रत्ना को अपने
साथ भेजता है लेकिन रत्ना ने उसकी अच्छी खबर ली।
पहुँचकर रत्ना ने माणिक को कोयला कूटने का लोहे का
कर दिया। अन्ततोगत्वा रत्ना माणिक को हमेशा के लिए
बरसोवा भी नहीं जाना चाहती, जब तक पैरों पर न खडी हो
अपना खर्चा चलाने के लिए जिस परिवार में उसने नौकरी
वहाँ भी उसे अपनी मान-रक्षा में उग्र रूप धारण करना पडा।
से यह सूचना भी मिलती है कि उसकी माँ वंशी उसे
अपना रास्ता स्वयं बनाने की चिंता में फिर भटक जाती है।
पारसी वकील धीरुवाला के छल-जाल में फंस जाती है और

वह अपने नारीत्व के वैभव को ही खो बैठती
की असलियत का पता चलता है, तब भी
और सोचती है.... "बुढिया जलन के मारे मुझे बहका
चाहिए। आखिर कोली हूँ। कोली औरत फिकर
से लडती है। समुद्र से लडती है। फि मैं क्यों
की भी बुरी मरम्मत करती है और घायलावस्था
धीरुवाला को अपना सब कुछ समर्पित करने
जाती। संयोग से रत्ना को डॉ. पांडुरंगके यहाँ नर्स
ही अपनी कर्मनिष्ठ, लगन और ईमानदारी के
गई। रत्ना के दु:ख में उसकी माँ वंशी अपने
और एक दिन डॉक्टर पांडुरंग के पास इलाज के
ने अपनी माँ वंशी के समक्ष भी अपने को प्रस्तुत
पांडुरंग ने अंधत्व का कारण किसी बडे सदमें की बात
होगा तब तक आँखों में रोशनी नहीं आ
से मुक्त कर दिया जाता है। डाक्टर पांडुरंग
मिलती है कि रत्ना के खोने का ही सदमा वंशी
डाक्टर उन्हें मिलाने के लिए व्याकुल हो जाता
अपनी सारी आपबीती अस्पताल की दूसरी
डॉक्टर भी जान गया था। यही कारण है कि
पंचगनी के एक अस्पताल में एक बेड की
रत्ना को बेशर्मी से बचाने के लिए अपनी पत्नी
और रत्ना के गर्भ में पल रहे बच्चे को अपना

■■

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक -
मो. 9844008078

साहित्य की आधुनिक विश्वचेतना का आकलन भी जरूरी है। देशों और भाषाओंकी सीमाओंके पार आज भारतीय साहित्य 'लोक' और 'ग्लोबल' दोनों प्रकार के सरोकारो कों संबोधित कर रहा है। विधापरक प्रयोगों की दृष्टि से भी भारतीय साहित्यकार वैश्विक आंदोलनो में निरंतर जुडे हुए हैं।

मेरी दृष्टि में भारतीय साहित्य का वैश्विक परिप्रेक्ष्य भौतिक की तुलना में बौध्दिक मानसिक और आध्यात्मिक अधिक है। इसके व्दारा दुनिया भर के देश भारतीय जीवन मूल्यों से परिचय ही नहीं प्राप्त कर सकते इस धरती को शांतिपूर्ण बनाने के लिए विरूद्धों के सामंजस्य और लोकमंगल के सूत्रों को अपना भी सकेंते हैं। इसके लिए अनुवाद की अनन्य भूमिका से तो किसी को इनकार हो ही नहीं सकता। अत: भौतिक सृजन और अनुवाद दोनों ही मिलकर इस साहित्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य को सुदृढता प्रदान कर सकते है।

एस. बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय में प्रो. एस. टी. मेखाडे और उनके तमाम मित्रों ने इस परिप्रेक्ष्य के विविध पंक्षों को रेखांकित करने की दृष्टि से जो आंतर्राष्ट्रीय संगोष्टी विजयपुर में आयोजित की उसके निश्चय ही उनके महत्वपूर्ण और मौलिक निष्कर्ष सामने आयेंगे। इस इस अवसर पर इस ग्रंथ का प्रकाशन अत्यंत प्रसांगिक एवं समीचीन है।

इस हेतु संपादक मण्डल, साम्मिलित लेखक गण, और संयोजक गण बधाई तथा अभिनंदन के पात्र हैं।

फरवरी 2018 शुभकामनाओंके सहित

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
ऋषभदेव शर्मा
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
हैदराबाद और एरणाकुलम परिसर
मोबाइल नं. 0807474272

अनुक्रमणिका

1. भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य : विविध आयाम
• प्रो. ऋषभदेव शर्मा 1
2. कन्नड़ साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य
• डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' 8
3. मराठी नाटक की विकास यात्रा
• प्रो. प्रतिभा मुदलियार 19
4. कोंकणी कहानी साहित्य: नारी एवं वृद्ध विमर्श के सन्दर्भ में
• प्रो. प्रभा भट् 32
5. भारतीय साहित्य में तेलुगु साहित्य का योगदान
• डॉ. पठान रहीम खान 42
6. भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य : तमिल के विशेष संदर्भ में
• डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा 50
7. भारतीय साहित्य को गुजराती उपन्यास साहित्य का योगदान
• डॉ. ए. डी. चावडा 56
9. 20 वीं सदी की प्रमुख कहानियों में आदिवासी समूह का सामाजिक संघर्ष
• प्रो. एस. के. पवार 65
10. हिंदी दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत
• प्रो. कांबले अशोक 72
11. कर्नाटक में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता
• डॉ. एस. टी. मेखाडे 78

12. मछुआरों की जिन्दगी की कथा-व्यथा को व्यक्त करता उपन्यास 'सागर, लहरें और मनुष्य'
• डॉ. शंकर तेरादाल 84

13. भारतीय मुस्लिम समाज की मानसिकता की पडताल करता उपन्यास 'अपवित्र आख्यान'
• डॉ. साहेबहुसैन जे. जहागीरदार 88

14. महानगरीय श्वेत-श्याम पक्ष को दर्शाता उपन्यास 'कबूतरखाना'
• डॉ. सदाशिव पवार 99

15. हिन्दी काव्य साहित्य में स्त्री-विमर्श : मंगलेश डबराल के संदर्भ में
• डॉ. श्रीमती विद्यावती जी. रजपूत 103

16. अनामिका के साहित्य में वृद्धास्था विमर्श
• डॉ. चंदन कुमारी 108

17. सुभाष शर्मा का 'भूख' कहानी संग्रह समकालीन समाज का आईना
• प्रो. एम. ए. पीरॉं 114

18. हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श: आत्मकथाओं के संदर्भ में
• प्रो. असजद एम. सिद्दीकी 118

19. 'साहित्य में पर्यावरण विमर्श'
• डॉ. अमिता मानव 123

20. हिन्दी पत्रकारिता
• डॉ. सुजाता एन. मगदुम 127

21. हिंदी बाल साहित्य
• डॉ.एम.ए. लिंगसूर 132

22. हिंदी भाषा : स्थिति-गति
• डॉ. एच. एम. अत्तार 135

23. हिन्दी भाषा तथा मीडिया
• डॉ. बी. एम. राठोड 141

24. भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य
• डॉ. शैलजा 144

25. हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप : भविष्य की हिंदी के संदर्भ में
• डॉ. भूपिंदर कौर 148

26. मन्नू भंडारी की कहानियों में वृद्धा नारी के मातृत्व मोह का चित्रण
• डॉ. लविन्द्रसिंह रणजितसिंह लबाना 154

27. शेखर जोशी- बहुस्तरीय और बहुआयामी यथार्थ के विरल चितेरे
• डॉ. रोहिनी जे. पाटील 157

28. मैत्रेयी पुष्पा कथा साहित्य स्त्रियों का आर्थिक संघर्ष
• डॉ. नीलांबिका पाटील 162

29. आधुनिक समाज में थेर्ड जेंडर का जीवन
• मंजू नायर एस. 165

30. दलित सहित्य आंदोलन के पूर्व के हिन्दी कथा साहित्य में दलितवादी स्वर
• डॉ. शैलजा तुलजाराम होटकर 169

31. हिन्दी भाषा तथा मीडिया
• डां. मंहातेश. आर. अंची 174

32. ऋग्वेद का मुक्ति विमर्श
• डॉ. विष्णुप्रसाद चन्द्रकान्त त्रिवेदी 176

33. स्त्री - विमर्श
• प्रा. नयन भादुले - राजमाने 179

34. हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श
• स्वपना गोरे 185

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5

Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshawar Colony
Vijayapur – 586 103

© Publisher

First Edition : 2018
Copies : 1000
Pages : xii + 448 = 460
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 448 = 460
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो
मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

दो शब्द

भारत सुंदर अतीत में अपने बहुमुखी वैभव से पूरी दुनिया को आकर्षित और प्रभावित करता रहा। मध्यकाल में विविध प्रकार के आकर्षण और शोषण का शिकार होने पर इसका विश्वगुरुत्व खंडित अवश्य हुआ लेकिन नवजागरण काल में हमने अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुन: समेटना आरंभ किया। इससे उन भ्रांत धारणाओं मिथ्या प्रचारों को ध्वस्त किया जा सका जिनका प्रयोग उपनिवेशवादी ताकतें हमें गुलाम बनाने के लिए कर रही थी। आजादी के बाद भारत तथा विश्व के बीच वैचारिक आवाजाही के दरीचे और भी खुले तथा आधुनिक अर्थ से एक नया लोकतंत्र होते हुए भी भारत ने कुछ ही वर्षों के भीतर राख में से पुनर्जीवित होकर सारी दुनिया को दिखा दिया कि इस महादेश की जिजीविषा, मनीषा और उदीषा अदम्य, अपार और अक्षुण्ण है।

भारत की यह आंतरिक शक्ति अपने बहुवचन चरित्र के कारण आज फिर संपूर्ण भूमंडल को आकर्षित और प्रभावित करने की दिशा में अग्रसर है। विश्व के विभिन्न देश भारत की ओर उत्सुकता से देखते हैं। भारत सबसे बडे लोकतंत्र के रूप में विश्व भर में एक अनुपेक्षणीय और अपरिहार्य आवाज बन गया है। अनेक भीतरी, बाहरी अंतर्विरोधों और संकटों के बावजूद भारत अपनी विविधवर्णी और अविरोधी संस्कृति के कारण समूची दुनिया को सामंजस्य पूर्वक जीने के अनेक सूत्र प्रदान करने में समर्थ है। ये सांस्कृतिक सूत्र हमारी समस्त भाषाओं के मौखिक साहित्य और लिखित साहित्य में सुरक्षित हैं। इन्हीं के ताने-बाने से भारतीय साहित्य का वैश्विक परिवेश निर्मित होता है।

भारतीय साहित्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य के अनेक आयाम तो हैं ही, उसे देखने-दिखाने के भी अनेक कोण हो सकते हैं। यह परिप्रेक्ष्य कोई गढा-गढाया उपलब्ध पाठ नहीं है। बल्कि यह निरंतर बनता हुआ खुला पाठ है। इसके तरह विविध भारतीय भोषाओं के साहित्य की श्रीवृध्दि में भारतीयों, भारतवंशियों प्रवासियों और विदेशियोंके योगदान का मूल्यांकन तो अपेक्षित है। भारतीय

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

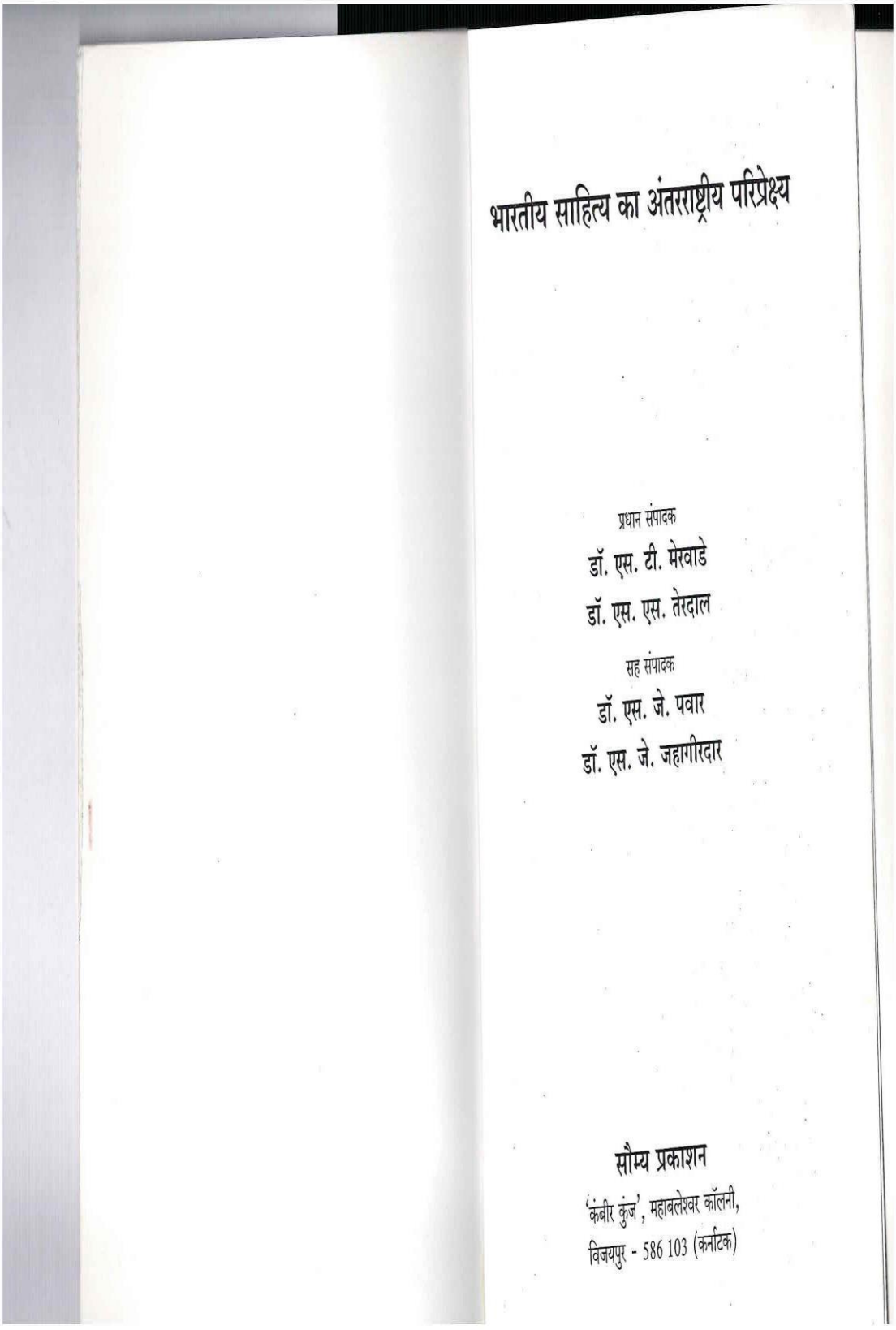

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक
डॉ. एस. जे. पवार
डॉ. एस. जे. जहागीरदार

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

सुबोध हिन्दी व्याकरण

ISBN 978-93-83813-29-2

लेखक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे
डॉ. एस. एस. तेरदाल
डॉ. एस. जे. जहागीरदार

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
10, 'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कालोनी
दर्गा रोड, ओम शांति के पास
विजयपुर -586103 (कर्नाटक)
मो. 09448185705

संस्करण : 2017

पृष्ठ : viii + 110 = 118

मूल्य : रु. 50/- मात्र

मुद्रण :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली, गदग - 582 101 (कर्नाटक)

दो बातें

व्याकरण वह विद्या है जिसके माध्यम से हमें शुद्ध रूप से लिखने-पढने और बोलने का ज्ञान होता है। प्रत्येक भाषा का अपना अलग-अलग व्याकरण होता है। इससे भाषा विशेष के वर्ण, शब्द, ध्वनि और वाक्य के शुद्ध रूप और उनके प्रयोग के नियम का सम्यक निरूपण किया जाता है। दूसरे शब्दों में व्याकरण वह शास्त्र है जिसका निर्माण भाषा विशेष के लिए होता है और इससे भाषा विशेष के शुद्ध रूप तथा प्रयोग की नियमावली का ज्ञान होता है। भाषा का निर्माण पहले होता है और उसी के आधार पर उसका व्याकरण लिखा जाता है फिर भी व्याकरण ही उस भाषा के स्वरूप और प्रयोग को नियमित तथा नियंत्रित करता है। इसलिए व्याकरण, भाषा का विधान बनाने वाला शास्त्र है। इसके नियमों का सही ज्ञान न होने पर हमें भाषा का शुद्ध ज्ञान नहीं हो सकता है और न ही उसका शुद्ध अर्थ और प्रयोग समझ सकते हैं। अत: भाषा और व्याकरण का आपस में बहुत गहरा संबंध है।

भाषा और व्याकरण के इस अंत:संबंध को सरल रूप में समझने के लिए विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को तैयार किया गया है। हमारा यह प्रयास है कि विद्यार्थी व्याकरण को सरल रूप से ग्रहण कर अपनी भाषा को शुध्द बना सकें।

■■

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

भारतीय साहित्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य के अनेक आयाम तो हैं ही, उसे देखने-दिखाने के भी अनेक कोण हो सकते हैं। यह परिप्रेक्ष्य कोई गढा-गढाया उपलब्ध पाठ नहीं है। बल्कि यह निरंतर बनता हुआ खुला पाठ है। इसके तरह विविध भारतीय भाषाओं के साहित्य की श्रीवृध्दि में भारतीयों, भारतवंशियों प्रवासियों और विदेशियों के योगदान का मूल्यांकन तो अपेक्षित है। भारतीय साहित्य की आधुनिक विश्वचेतना का आकलन भी जरूरी है। देशों और भाषाओं की सीमाओं के पार आज भारतीय साहित्य 'लोक' और 'ग्लोबल' दोनों प्रकार के सरोकारो कों संबोधित कर रहा है। विधापरक प्रयोगों की दृष्टि से भी भारतीय साहित्यकार वैश्विक आंदोलनो में निरतंर जुडे हुए हैं।

प्रो. ऋषभदेव शर्मा

978-93-83813-31-5
ISBN : 978-93-83813-31-5

सौम्य प्रकाशन, विजयपुर

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

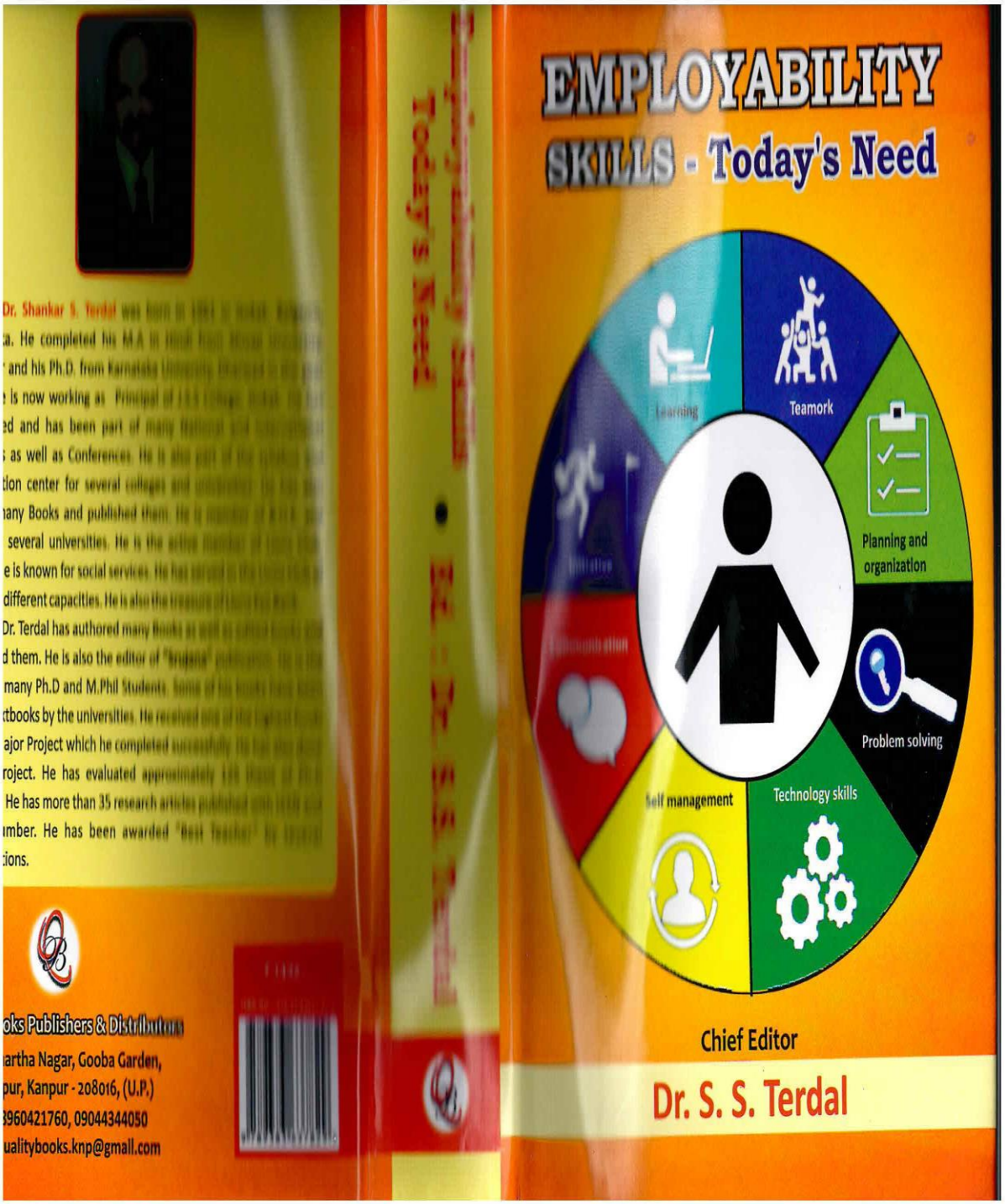

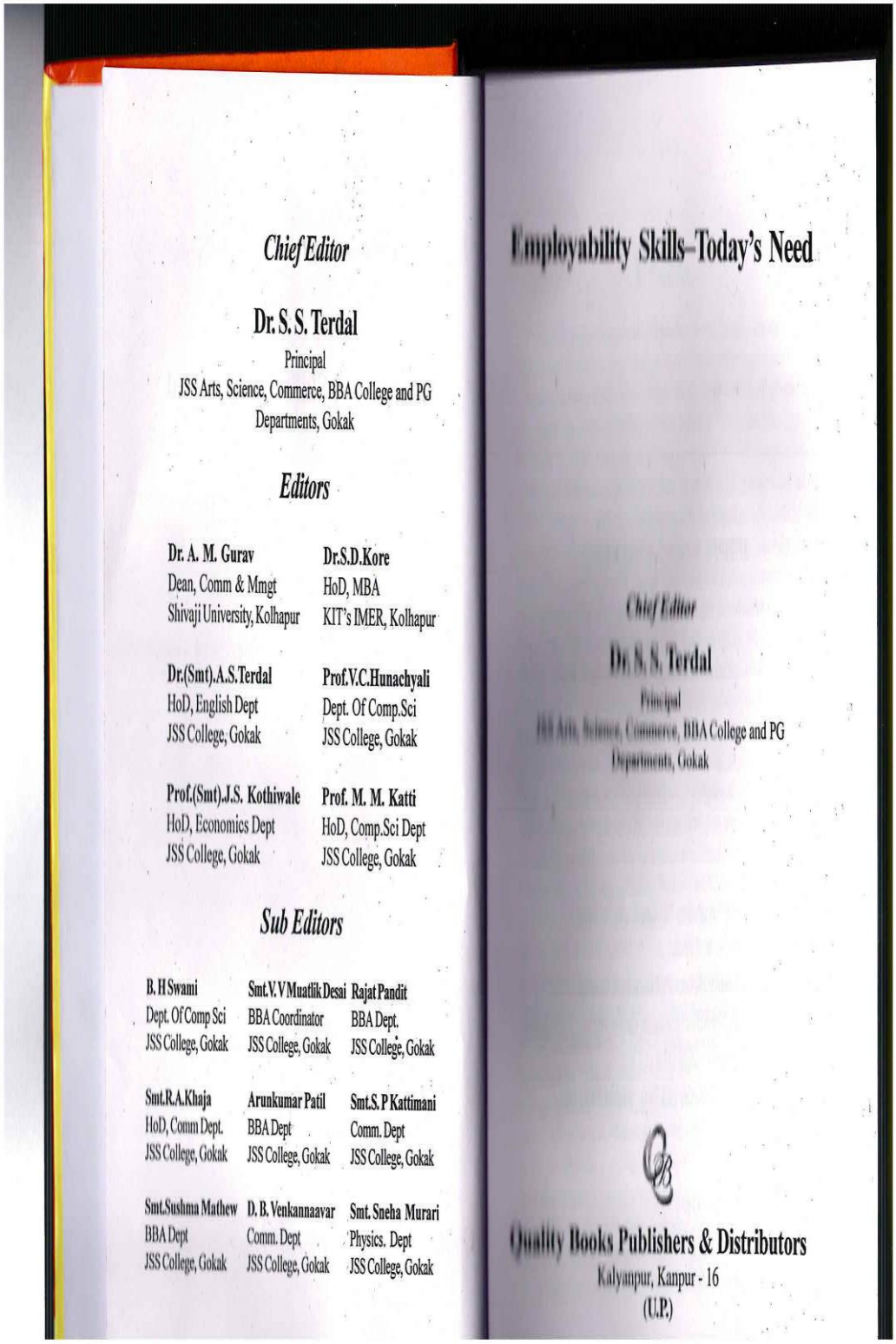

Chief Editor

Dr. S. S. Terdal
Principal
JSS Arts, Science, Commerce, BBA College and PG Departments, Gokak

Editors

Dr. A. M. Gurav
Dean, Comm & Mmgt
Shivaji University, Kolhapur

Dr.S.D.Kore
HoD, MBA
KIT's IMER, Kolhapur

Dr.(Smt).A.S.Terdal
HoD, English Dept
JSS College, Gokak

Prof.V.C.Hunachyali
Dept. Of Comp.Sci
JSS College, Gokak

Prof.(Smt).J.S. Kothiwale
HoD, Economics Dept
JSS College, Gokak

Prof. M. M. Katti
HoD, Comp.Sci Dept
JSS College, Gokak

Sub Editors

B. H Swami
Dept. Of Comp Sci
JSS College, Gokak

Smt.V. V Muatlik Desai
BBA Coordinator
JSS College, Gokak

Rajat Pandit
BBA Dept.
JSS College, Gokak

Smt.R.A.Khaja
HoD, Comm Dept.
JSS College, Gokak

Arunkumar Patil
BBA Dept
JSS College, Gokak

Smt.S. P Kattimani
Comm. Dept
JSS College, Gokak

Smt.Sushma Mathew
BBA Dept
JSS College, Gokak

D. B. Venkannaavar
Comm. Dept
JSS College, Gokak

Smt. Sneha Murari
Physics. Dept
JSS College, Gokak

Employability Skills–Today's Need

Chief Editor

Dr. S. S. Terdal
Principal
JSS Arts, Science, Commerce, BBA College and PG Departments, Gokak

Quality Books Publishers & Distributors
Kalyanpur, Kanpur - 16
(U.P.)

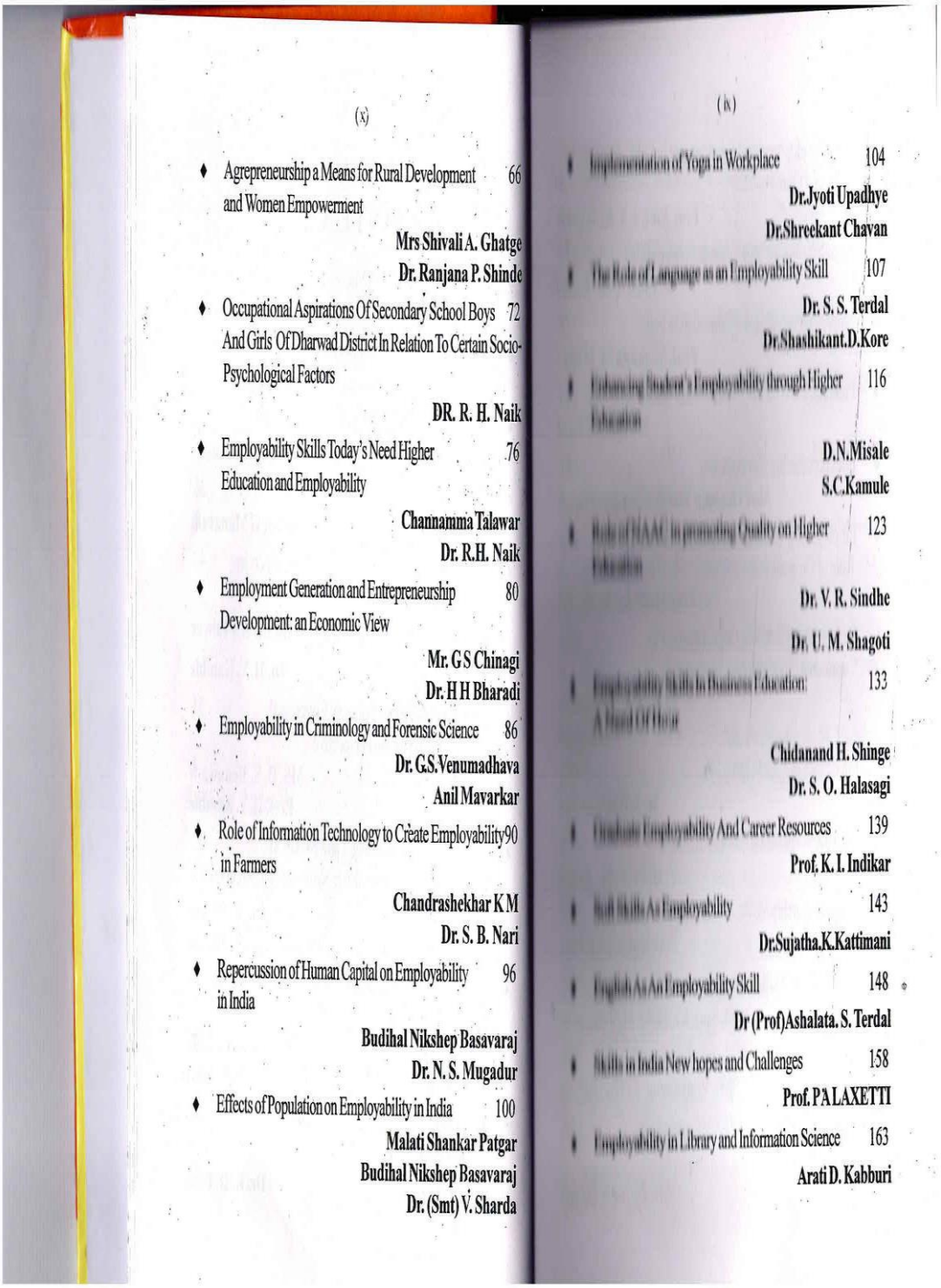

- Agrepreneurship a Means for Rural Development and Women Empowerment 66
  Mrs Shivali A. Ghatge
  Dr. Ranjana P. Shinde
- Occupational Aspirations Of Secondary School Boys And Girls Of Dharwad District In Relation To Certain Socio-Psychological Factors 72
  DR. R. H. Naik
- Employability Skills Today's Need Higher Education and Employability 76
  Channamma Talawar
  Dr. R.H. Naik
- Employment Generation and Entrepreneurship Development: an Economic View 80
  Mr. G S Chinagi
  Dr. H H Bharadi
- Employability in Criminology and Forensic Science 86
  Dr. G.S.Venumadhava
  Anil Mavarkar
- Role of Information Technology to Create Employability in Farmers 90
  Chandrashekhar K M
  Dr. S. B. Nari
- Repercussion of Human Capital on Employability in India 96
  Budihal Nikshep Basavaraj
  Dr. N. S. Mugadur
- Effects of Population on Employability in India 100
  Malati Shankar Patgar
  Budihal Nikshep Basavaraj
  Dr. (Smt) V. Sharda

- Implementation of Yoga in Workplace 104
  Dr.Jyoti Upadhye
  Dr.Shreekant Chavan
- The Role of Language as an Employability Skill 107
  Dr. S. S. Terdal
  Dr.Shashikant.D.Kore
- Enhancing Student's Employability through Higher Education 116
  D.N.Misale
  S.C.Kamule
- Role of NAAC in promoting Quality on Higher Education 123
  Dr. V. R. Sindhe
  Dr. U. M. Shagoti
- Employability Skills In Business Education: A Need Of Hour 133
  Chidanand H. Shinge
  Dr. S. O. Halasagi
- Graduate Employability And Career Resources 139
  Prof. K. I. Indikar
- Soft Skills As Employability 143
  Dr.Sujatha.K.Kattimani
- English As An Employability Skill 148
  Dr (Prof)Ashalata. S. Terdal
- Skills in India New hopes and Challenges 158
  Prof. P A LAXETTI
- Employability in Library and Information Science 163
  Arati D. Kabburi

ISBN : 978-93-83637-82-9

Book : Employability Skills–Today's Need
Chief Editor : Dr. S. S. Terdal
Published by : Quality Books Publishers & Distributors
15, Shiddharthanager, Guba garden, Kalyanpur
Kanpur - 208 016 (U.P.)
Mob : 08960421760, 09044344050
Edition : First, 2018
© : Writer
Price : 1495.00 Only
Type Setting : Shashi Graphics, Naubasta, Kanpur
Printed by : Sakshi offset, Kanpur

Preface

In the globalization era, there has been lot of inter dependency between company's expectation and individual's employability. The changing needs and expectation from corporate has given more emphasis on employability skills. Human Resource Management (HRM) is vital activity in organization's performance through employee skills and quality. India, at present, is recognized as one of the youngest nations (demographic dividend) of the world with over 50% of population under the age of 30 years. Considering this scenario, "Skilling India" is the buzz word in India. Considering this background, the College Management has decided to organize the International Conference on **"Employability Skills: Today's Need" with Sub Themes e.g.** Employability and Humanities, Employability and Social Sciences, Employability in Commerce and Management, Employability in Banking-Finance-Insurance, Entrepreneurship Development, Employability in Management, Higher Education and Employability, Employability in Information Technology, Employability in Agriculture and Agro Processing Industries, Employability in Travel and Tourism, Yoga-Spirituality-Meditation and Employability, Role of NGOs in Employability, Role of NAAC, IQAC, NBA, ISO, QS in Employability, Start up India, Make in India, Digital India, Skill India, Stand up India and Employability, Employability is Science Sector, Employability in Sport Field and other topic related to Employability. I feel very proud that this book includes 113 Papers which were written by Authors and Co Authors. These papers have been written by academicians, research scholars, Professors and NGO's from India and Outside India. All papers are blind reviewed and the plagarum related issues is on the shoulder of the concern Author and Co-Author. About 230 participants have participated and presented papers and their thoughts. This conference includes key note address, one panel discussion and 10 Tracks for paper presentation which are organized in two sessions. One Panel Discussion is organized with 7+ Eminent

G.E.Society's

J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak

(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)

Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

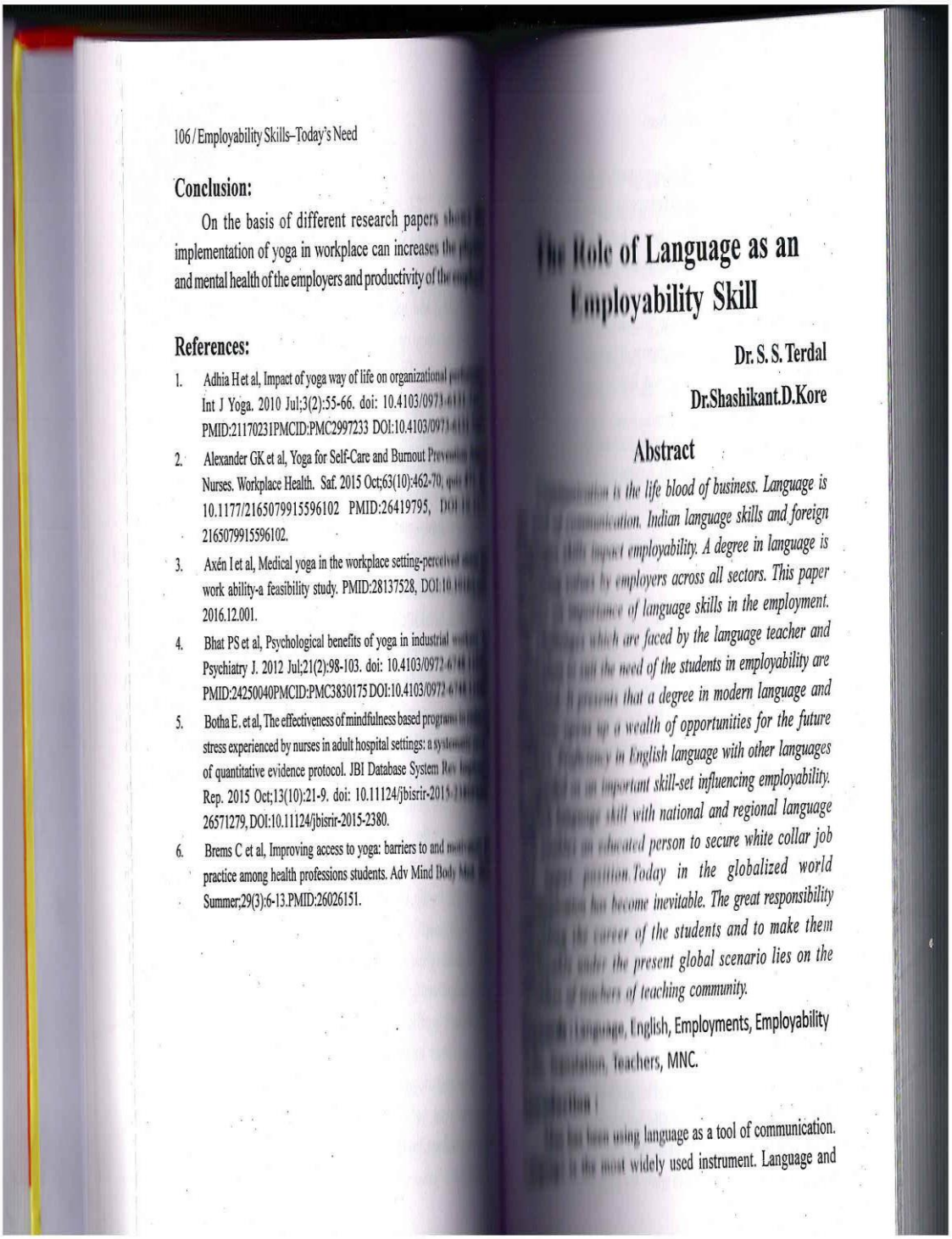

Conclusion:

On the basis of different research papers ... implementation of yoga in workplace can increases the ... and mental health of the employers and productivity of the ...

References:

1. Adhia H et al, Impact of yoga way of life on organizational ... Int J Yoga. 2010 Jul;3(2):55-66. doi: 10.4103/0973-... PMID:21170231PMCID:PMC2997233 DOI:10.4103/0973-...
2. Alexander GK et al, Yoga for Self-Care and Burnout Prevention ... Nurses. Workplace Health. Saf. 2015 Oct;63(10):462-70, ... 10.1177/2165079915596102 PMID:26419795, DOI ... 2165079915596102.
3. Axén I et al, Medical yoga in the workplace setting-perceived ... work ability-a feasibility study. PMID:28137528, DOI:10.... 2016.12.001.
4. Bhat PS et al, Psychological benefits of yoga in industrial ... Psychiatry J. 2012 Jul;21(2):98-103. doi: 10.4103/0972-6748... PMID:24250040PMCID:PMC3830175 DOI:10.4103/0972-6748...
5. Botha E. et al, The effectiveness of mindfulness based programs ... stress experienced by nurses in adult hospital settings: a systematic ... of quantitative evidence protocol. JBI Database System Rev ... Rep. 2015 Oct;13(10):21-9. doi: 10.11124/jbisrir-2015-... 26571279, DOI:10.11124/jbisrir-2015-2380.
6. Brems C et al, Improving access to yoga: barriers to and ... practice among health professions students. Adv Mind Body Med ... Summer;29(3):6-13.PMID:26026151.

...he Role of Language as an ...mployability Skill

Dr. S. S. Terdal

Dr.Shashikant.D.Kore

Abstract

... is the life blood of business. Language is ... Indian language skills and foreign ... employability. A degree in language is ... by employers across all sectors. This paper ... of language skills in the employment. ... which are faced by the language teacher and ... the need of the students in employability are ... that a degree in modern language and ... up a wealth of opportunities for the future ... in English language with other languages ... important skill-set influencing employability. ... skill with national and regional language ... educated person to secure white collar job ... position.Today in the globalized world ... has become inevitable. The great responsibility ... the career of the students and to make them ... under the present global scenario lies on the ... of teachers of teaching community.

... Language, English, Employments, Employability ... Teachers, MNC.

...ction :

... been using language as a tool of communication. ... the most widely used instrument. Language and

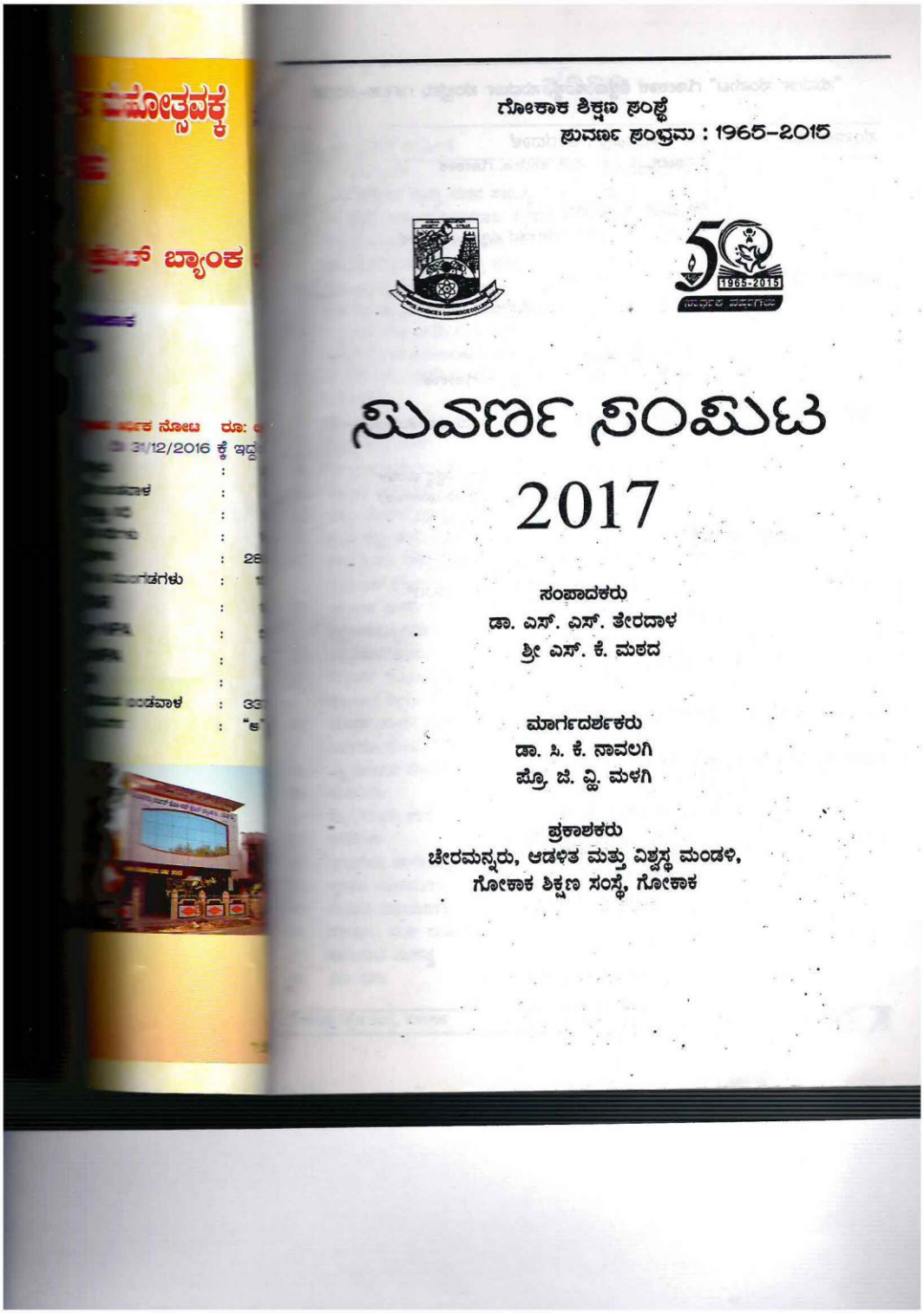

ಗೋಕಾಕ ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಸ್ಥೆ
ಸುವರ್ಣ ಸಂಭ್ರಮ : 1965–2015

ಸುವರ್ಣ ಸಂಪುಟ

2017

ಸಂಪಾದಕರು
ಡಾ. ಎಸ್. ಎಸ್. ತೇರದಾಳ
ಶ್ರೀ ಎಸ್. ಕೆ. ಮಠದ

ಮಾರ್ಗದರ್ಶಕರು
ಡಾ. ಸಿ. ಕೆ. ನಾವಲಗಿ
ಪ್ರೊ. ಜಿ. ವ್ಹಿ. ಮಳಗಿ

ಪ್ರಕಾಶಕರು
ಚೇರಮನ್ನರು, ಆಡಳಿತ ಮತ್ತು ವಿಶ್ವಸ್ಥ ಮಂಡಳಿ,
ಗೋಕಾಕ ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಸ್ಥೆ, ಗೋಕಾಕ

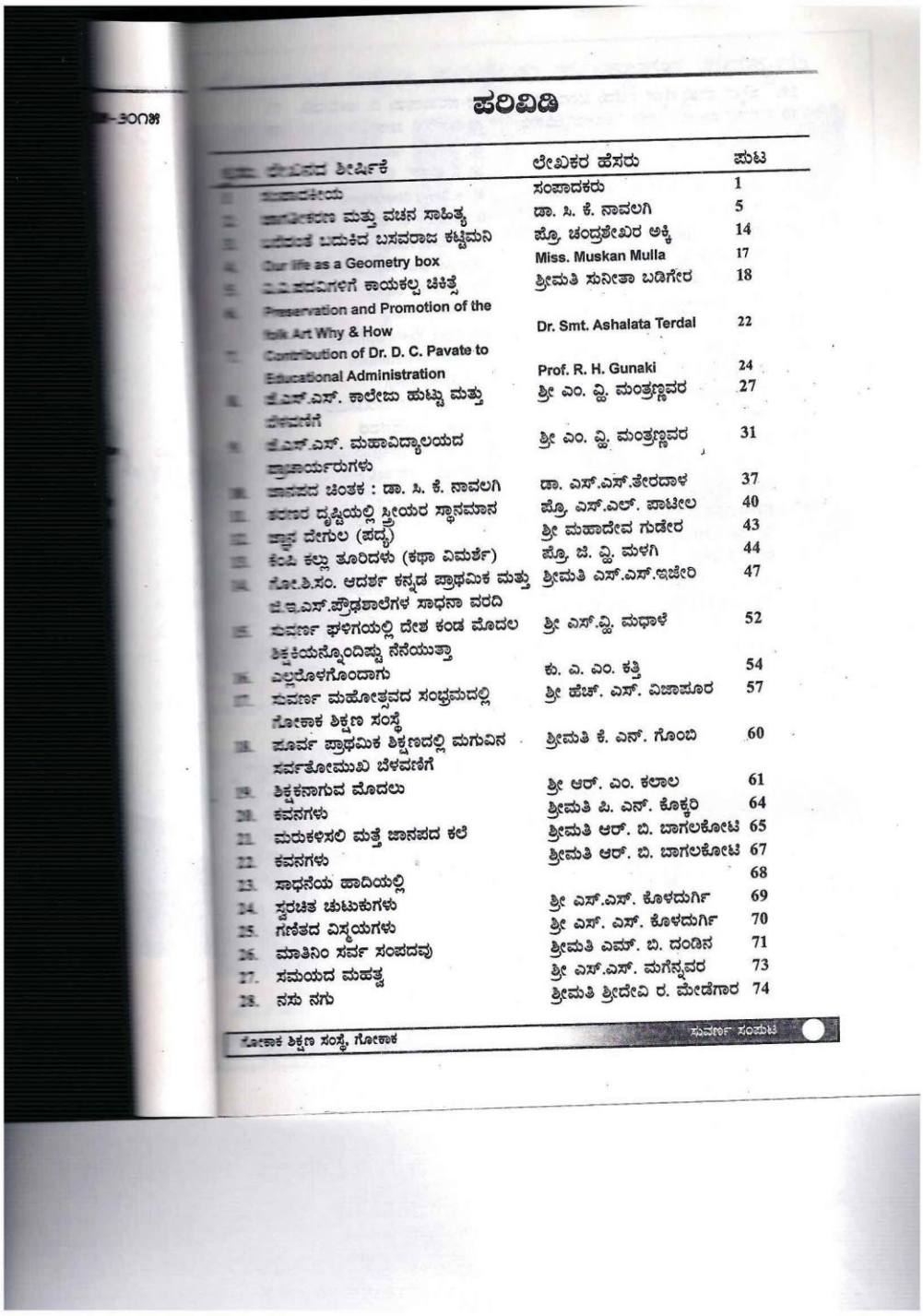

ಪರಿವಿಡಿ

ಕ್ರ.ಸಂ.	ಲೇಖನದ ಶೀರ್ಷಿಕೆ	ಲೇಖಕರ ಹೆಸರು	ಪುಟ
1.	ಸಂಪಾದಕೀಯ	ಸಂಪಾದಕರು	1
2.	ಜಾಗತೀಕರಣ ಮತ್ತು ವಚನ ಸಾಹಿತ್ಯ	ಡಾ. ಸಿ. ಕೆ. ನಾವಲಗಿ	5
3.	ಬರೆದಂತೆ ಬದುಕಿದ ಬಸವರಾಜ ಕಟ್ಟೀಮನಿ	ಪ್ರೊ. ಚಂದ್ರಶೇಖರ ಅಕ್ಕಿ	14
4.	Our life as a Geometry box	Miss. Muskan Mulla	17
5.	[illegible] ಪದವಿಗಳಿಗೆ ಕಾಯಕಲ್ಪ ಚಿಕಿತ್ಸೆ	ಶ್ರೀಮತಿ ಸುನೀತಾ ಬಡಿಗೇರ	18
6.	Preservation and Promotion of the folk Art Why & How	Dr. Smt. Ashalata Terdal	22
7.	Contribution of Dr. D. C. Pavate to Educational Administration	Prof. R. H. Gunaki	24
8.	ಜೆ.ಎಸ್.ಎಸ್. ಕಾಲೇಜು ಹುಟ್ಟು ಮತ್ತು ಬೆಳವಣಿಗೆ	ಶ್ರೀ ಎಂ. ವ್ಹಿ. ಮಂತ್ರಣ್ಣವರ	27
9.	ಜೆ.ಎಸ್.ಎಸ್. ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯದ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರುಗಳು	ಶ್ರೀ ಎಂ. ವ್ಹಿ. ಮಂತ್ರಣ್ಣವರ	31
10.	ಜಾನಪದ ಚಿಂತಕ : ಡಾ. ಸಿ. ಕೆ. ನಾವಲಗಿ	ಡಾ. ಎಸ್.ಎಸ್.ತೇರದಾಳ	37
11.	ಶರಣರ ದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ಥಾನಮಾನ	ಪ್ರೊ. ಎಸ್.ಎಲ್. ಪಾಟೀಲ	40
12.	ಜ್ಞಾನ ದೇಗುಲ (ಪದ್ಯ)	ಶ್ರೀ ಮಹಾದೇವ ಗುಡೇರ	43
13.	ಕೆಂಪಿ ಕಲ್ಲು ತೂರಿದಳು (ಕಥಾ ವಿಮರ್ಶೆ)	ಪ್ರೊ. ಜಿ. ವ್ಹಿ. ಮಳಗಿ	44
14.	ಗೋ.ಶಿ.ಸಂ. ಆದರ್ಶ ಕನ್ನಡ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಮತ್ತು ಜಿ.ಇ.ಎಸ್.ಪ್ರೌಢಶಾಲೆಗಳ ಸಾಧನಾ ವರದಿ	ಶ್ರೀಮತಿ ಎಸ್.ಎಸ್.ಇಜೇರಿ	47
15.	ಸುವರ್ಣ ಘಳಿಗಯಲ್ಲಿ ದೇಶ ಕಂಡ ಮೊದಲ ಶಿಕ್ಷಕಿಯನ್ನೊಂದಿಷ್ಟು ನೆನೆಯುತ್ತಾ	ಶ್ರೀ ಎಸ್.ವ್ಹಿ. ಮಥಾಳೆ	52
16.	ಎಲ್ಲರೊಳಗೊಂದಾಗು	ಕು. ಎ. ಎಂ. ಕತ್ತಿ	54
17.	ಸುವರ್ಣ ಮಹೋತ್ಸವದ ಸಂಭ್ರಮದಲ್ಲಿ ಗೋಕಾಕ ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಸ್ಥೆ	ಶ್ರೀ ಹೆಚ್. ಎಸ್. ವಿಜಾಪೂರ	57
18.	ಪೂರ್ವ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಶಿಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ ಮಗುವಿನ ಸರ್ವತೋಮುಖ ಬೆಳವಣಿಗೆ	ಶ್ರೀಮತಿ ಕೆ. ಎನ್. ಗೊಂಬಿ	60
19.	ಶಿಕ್ಷಕನಾಗುವ ಮೊದಲು	ಶ್ರೀ ಆರ್. ಎಂ. ಕಲಾಲ	61
20.	ಕವನಗಳು	ಶ್ರೀಮತಿ ಪಿ. ಎನ್. ಕೊಕ್ಕರಿ	64
21.	ಮರುಕಳಿಸಲಿ ಮತ್ತೆ ಜಾನಪದ ಕಲೆ	ಶ್ರೀಮತಿ ಆರ್. ಬಿ. ಬಾಗಲಕೋಟಿ	65
22.	ಕವನಗಳು	ಶ್ರೀಮತಿ ಆರ್. ಬಿ. ಬಾಗಲಕೋಟಿ	67
23.	ಸಾಧನೆಯ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ		68
24.	ಸ್ವರಚಿತ ಚುಟುಕುಗಳು	ಶ್ರೀ ಎಸ್.ಎಸ್. ಕೊಳದುರ್ಗಿ	69
25.	ಗಣಿತದ ವಿಸ್ಮಯಗಳು	ಶ್ರೀ ಎಸ್. ಎಸ್. ಕೊಳದುರ್ಗಿ	70
26.	ಮಾತಿನಿಂ ಸರ್ವ ಸಂಪದವು	ಶ್ರೀಮತಿ ಎಮ್. ಬಿ. ದಂಡಿನ	71
27.	ಸಮಯದ ಮಹತ್ವ	ಶ್ರೀ ಎಸ್.ಎಸ್. ಮಗೆನ್ನವರ	73
28.	ನಸು ನಗು	ಶ್ರೀಮತಿ ಶ್ರೀದೇವಿ ರ. ಮೇಡೆಗಾರ	74

ಗಳು, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಹಿತ ಚಿ
ರಂದು ಸೇವೆಯಿಂದ ನಿವೃ
ಉತ್ತಮ ಪುಸ್ತಕ ಕೂಡ
ಇವರು ಪ್ರಾಚಾರ್ಯ

ವರು. ತಮ್ಮ ಪ್ರಾಥಮಿಕ,
ಎಸ್. ಎಸ್. ಮಹಾವಿದ್ಯಾ
ಮ ಕೊಲ್ಲಾಪೂರದಿಂದ
ಲ್ಲಿ 01–07–1986 ರಿಂ
ಸೌಮ್ಯ ಸ್ವಭಾವದವರು
07–2016 ರಂದು ನಿವೃತ್ತಿ
ವರನ್ನು ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರ
ಂದ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯ

ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರುಗಳ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ
ತಿಗಳಾದ ಸಿ.ಕೆ.ನಾವಲಗಿ
ಶ್ರಮ ಸಾರ್ಥಕವೆಂದು ಭಾ

ಗೋಕಾಕ ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಸ್ಥೆ
ರ್ಣ ಮಹೋತ್ಸವದ ಶುಭಾ

ಕು. ಸ್ವಾತಿ ಎಚ್. ಪತ್ತಾ
ಭಾರತ ಸ್ಕೌಟ್ಸ್ ಮತ್ತು ಗೈಡ್
ರಾಷ್ಟ್ರಪತಿ ಪುರಸ್ಕಾರ
ಪಡೆದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿನಿ

ಜಾನಪದ ಚಿಂತಕ : ಡಾ। ಸಿ. ಕೆ. ನಾವಲಗಿ

· ಡಾ. ಎಸ್. ಎಸ್. ತೇರದಾಳ
ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರು,
ಜೆ.ಎಸ್.ಎಸ್.ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಗೋಕಾಕ

... ಕನ್ನಡ ಜಾನಪದ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾತಕೋತ್ತರ ಪದವಿ ಪಡೆದು, ಕನ್ನಡ ... ಮೂರು ದಶಕಗಳಿಂದ ಜಾನಪದ ಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲರಾಗಿರುವ ಡಾ। ಸಿ. ... ಜಾನಪದದ ಹತ್ತಾರು ಕೃತಿಗಳ ಮೂಲಕ, ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮೂರನೇ ತಲೆಮಾರಿನ ...ಲ್ಲಿ ಪ್ರಮುಖರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಇವರು ಬೆಳಗಾವಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಚೆನ್ನಮ್ಮ ರಾಣಿ ಕಿತ್ತೂರು ... ಗ್ರಾಮದ ಪ್ರತಿಭೆ(1956). ಇವರ ತಂದೆ ಕಲ್ಲಪ್ಪ, ತಾಯಿ ಬಸವಲಿಂಗವ್ವ; ... ಓರ್ವ ಪುತ್ರ ಭರತ. ಪದವಿ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಾಜಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪ್ರಧಾನ ... ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ, ಚಿನ್ನದ ಪದಕದೊಂದಿಗೆ ಪ್ರಥಮ ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮರಾಗಿ ... ಪದವಿ ಗಿಟ್ಟಿಸಲು ಇವರಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾಯಿತು. 'ಬಸವ' ಅಧ್ಯಯನದಲ್ಲಿ ... ಪದಕದೊಂದಿಗೆ ಪ್ರಥಮ ವರ್ಗ; ಪ್ರಥಮ ಸ್ಥಾನ) ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ, 'ವಚನ ... ಅಂಶಗಳು' – ಕುರಿತು ಸಂಶೋಧನಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲು ನೆರವಾಯಿತು. ಈ ...ಬಂಧಕ್ಕೂ ಚಿನ್ನದ ಪದಕ ಲಭಿಸಿದೆ. (ಕ.ವಿ.ವಿ. ಧಾರವಾಡ) ಈ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ... ವಿಚಾರವಿಮರ್ಶೆ, ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ ಹಾಗು ಸಂಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ವಚನ ಸಾಹಿತ್ಯ ... ಕುರಿತು ಹಲವಾರು ಲೇಖನಗಳು ನಾಡಿನ ಪ್ರಮುಖ ಪತ್ರಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ... ತನ್ನ ಹಿಂದಿನ ಜಾನಪದ ವಿದ್ವಾಂಸರುಗಳ ಜಾನಪದ ಅಧ್ಯಯನವನ್ನು ... ವ್ಯಾಪಕವಾದ ಕ್ಷೇತ್ರ ಕಾರ್ಯ, ಆಳವಾದ ಅಧ್ಯಯನ, ವ್ಯವಸ್ಥಿತ ಚಿಂತನೆ, ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ...ಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಜಾನಪದ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲೆಲ್ಲ ಇವರ ಅಧ್ಯಯನ ... ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಹಾಗು ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಯ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆಗಳು ಮುಪ್ಪುರಿಗೊಂಡು, ... ವಿಶೇಷ ಕೊಡುಗೆಯಾಗಿದೆ. ತಮ್ಮ ಜಾನಪದ ಬರೆಹಗಳನ್ನು ಅತ್ಯಂತ ಉತ್ಸಾಹ, ... ಶಿಸ್ತಿನಿಂದ ಮುನ್ನಡೆಸಿಕೊಂಡು ಬರುತ್ತಿರುವ ಸಿ. ಕೆ. ನಾವಲಗಿ ಕನ್ನಡ ...ದ್ದಾರೆ.

... ಕೃಷ್ಣಶರ್ಮರ, ಚಂದ್ರಶೇಖರ ಕಂಬಾರರ ಜಾನಪದ ಕಾಳಜಿ, ಲತ್ಥೆ, ... ಇಟ್ಟಣ್ಣವರ ಇವರ ಚಿಂತನ ಗ್ರಹಿಕೆಯನ್ನು ರೂಢಿಸಿಕೊಂಡು ತುಂಬ ...ದ್ದಾರೆ. ನಾವಲಗಿ ಒಬ್ಬ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲ ಜನಪದರ ನಡುವಿನ ಚಿಂತಕ, ... ಜಾನಪದ ಕೃತಿಗಳ ಮೂಲಕ ಹೊಸ ಹೊಸ ಸಾಮಗ್ರಿ ನೀಡುತ್ತಾರೆ. ಜಾನಪದ ... ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳಲು ತಮ್ಮ 'ಜಾನಪದ ಚಿಂತನ' ಕೃತಿಯ ಮೂಲಕ ...ದ್ದಾರೆ. ಆಕಾಶ ಜಾನಪದ(ಗಾಳಿ), ರೋಗ ಜಾನಪದ, ದೈವ ಜಾನಪದ, ವೈದ್ಯ ... ಜಾನಪದ, ಶರೀರ ಜಾನಪದ ಕುರಿತು ವಿಶೇಷ ಅಧ್ಯಯನ ಗೈದು ಜಾನಪದದ ...ಗಳನ್ನು ತೆರೆದು ತೋರುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ವಚನಗಳನ್ನು ಜಾನಪದದ ... ಪ್ರಯತ್ನದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ, ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಅಂತರ್ಗತವಾದ, ಜಾನಪದದ ... ಗುರುತಿಸುವ, ಸಮಗ್ರ ಅಧ್ಯಯನ ಕೈಕೊಂಡು ಯಶಸ್ವಿಗೊಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಮಗ್ರ ... ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಜಾನಪದ ಸಂವೇದನೆಯ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಮರುಚಿಂತನೆಗೆ

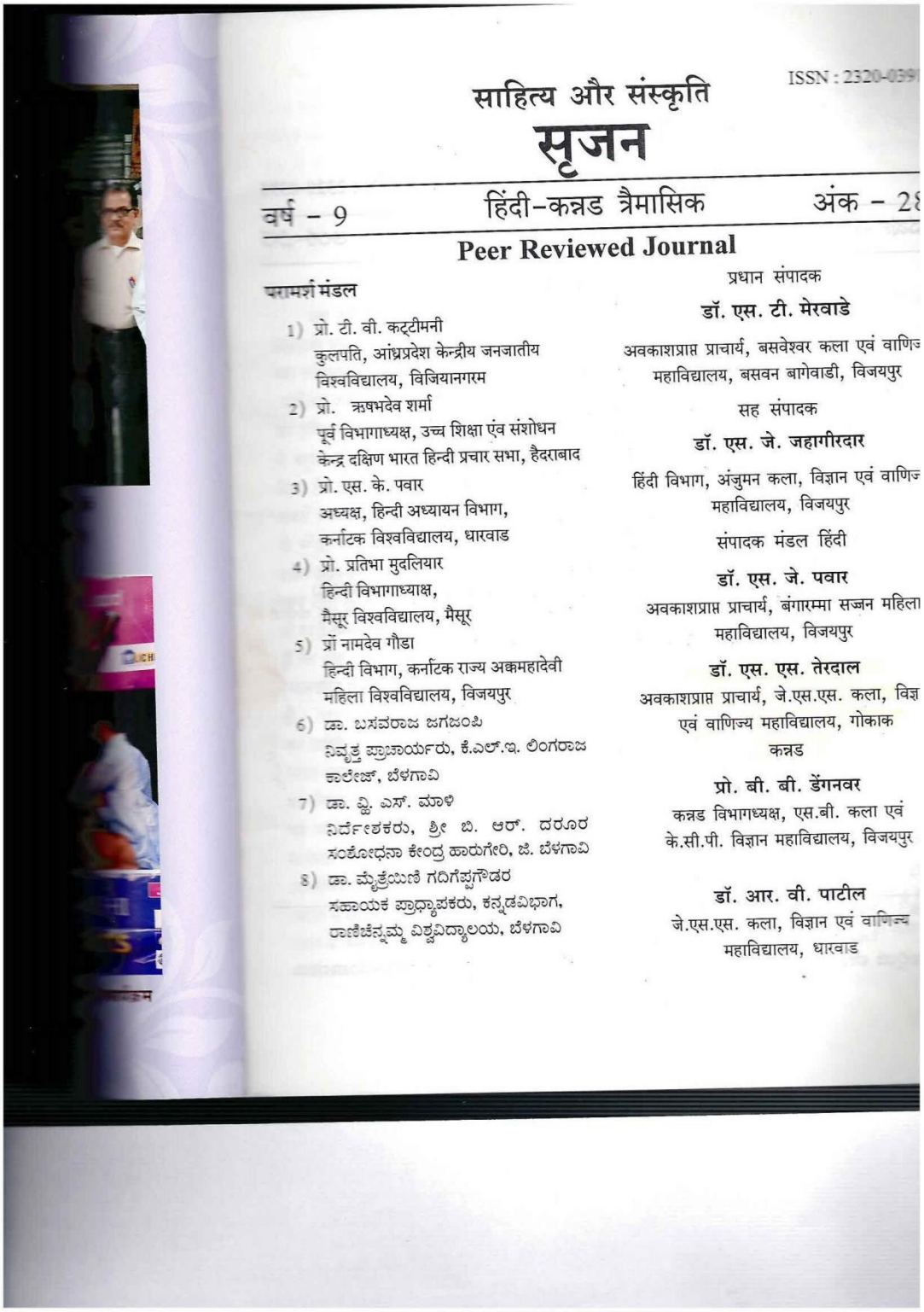

ISSN : 2320-039

साहित्य और संस्कृति

सृजन

वर्ष - 9 हिंदी-कन्नड त्रैमासिक अंक - 2

Peer Reviewed Journal

परामर्श मंडल

1) प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
कुलपति, आंध्रप्रदेश केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, विजियानगरम
2) प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा एंव संशोधन केन्द्र दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
3) प्रो. एस. के. पवार
अध्यक्ष, हिन्दी अध्यायन विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड
4) प्रो. प्रतिभा मुदलियार
हिन्दी विभागाध्याक्ष, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर
5) प्रों नामदेव गौडा
हिन्दी विभाग, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर
6) डा. बसवराज जगजंपि
निवृत्त प्राचार्यरु, के.एल्.इ. लिंगराज कालेज्, बेळगावि
7) डा. व्ही. एस्. माळी
निर्देशकरु, श्री बि. आर्. दरूर संशोधना केंद्र हारुगेरि, जि. बेळगावि
8) डा. मैत्रेयिणि गदिगेप्पगौडर
सहायक प्राध्यापकरु, कन्नडविभाग, राणिचेन्नम्म विश्वविद्यालय, बेळगावि

प्रधान संपादक

डॉ. एस. टी. मेरवाडे

अवकाशप्राप्त प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी, विजयपुर

सह संपादक

डॉ. एस. जे. जहागीरदार

हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी

डॉ. एस. जे. पवार

अवकाशप्राप्त प्राचार्य, बंगारम्मा सज्जन महिला महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल

अवकाशप्राप्त प्राचार्य, जे.एस.एस. कला, विज्ञ एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड

प्रो. बी. बी. डेंगनवर

कन्नड विभागध्यक्ष, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील

जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

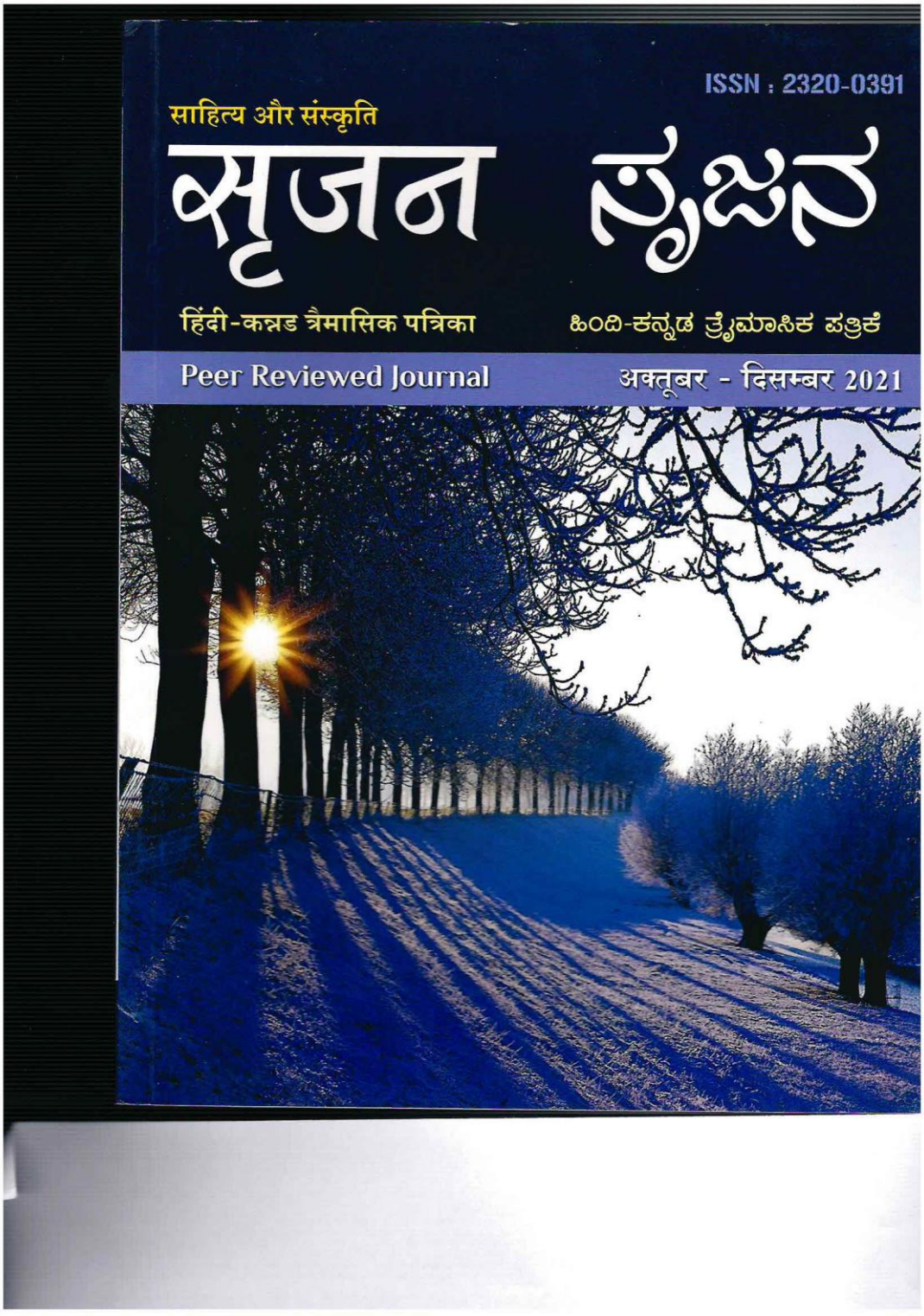

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -6
अंक - 21

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-

आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफ़सेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

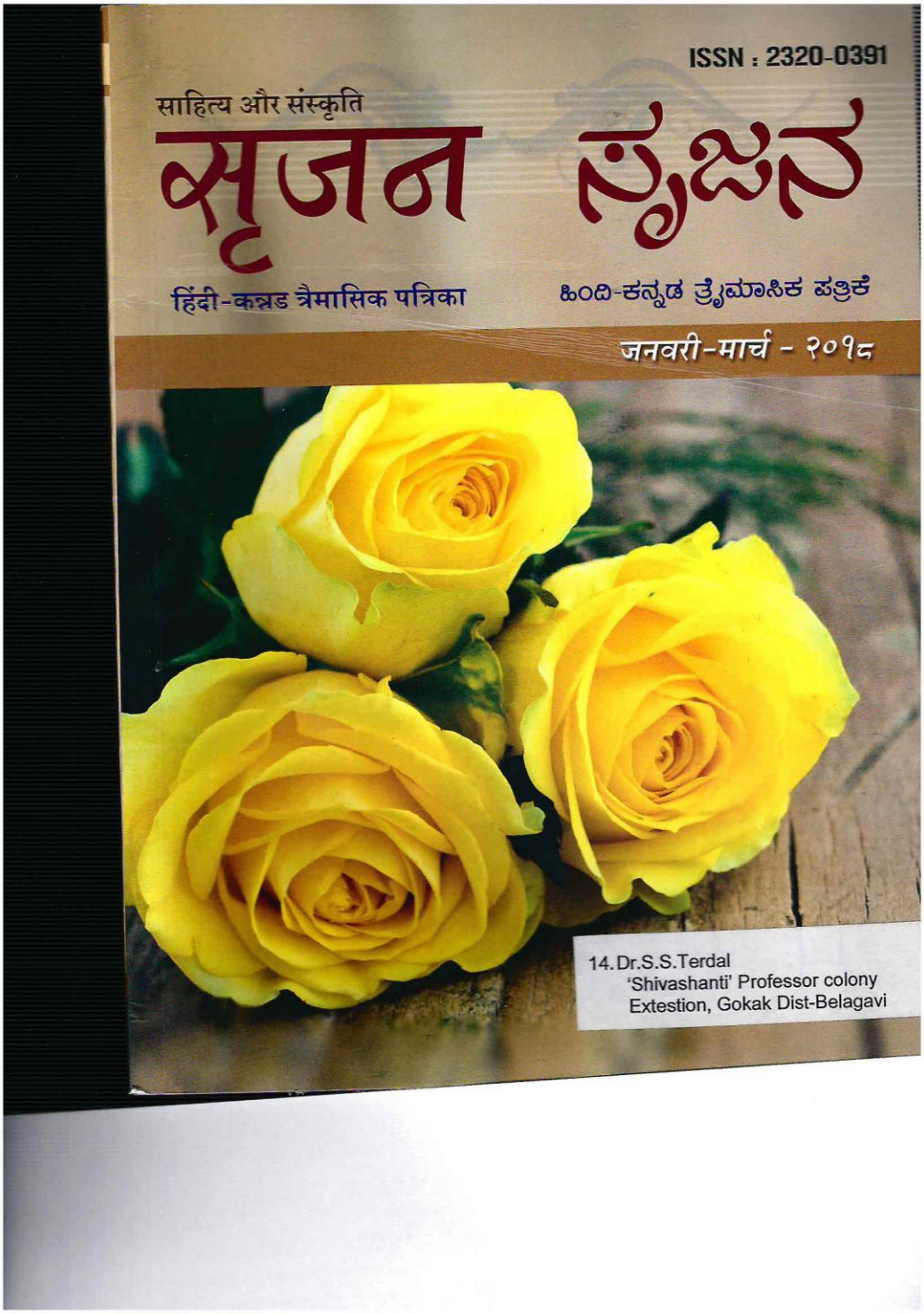

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 20

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-

आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

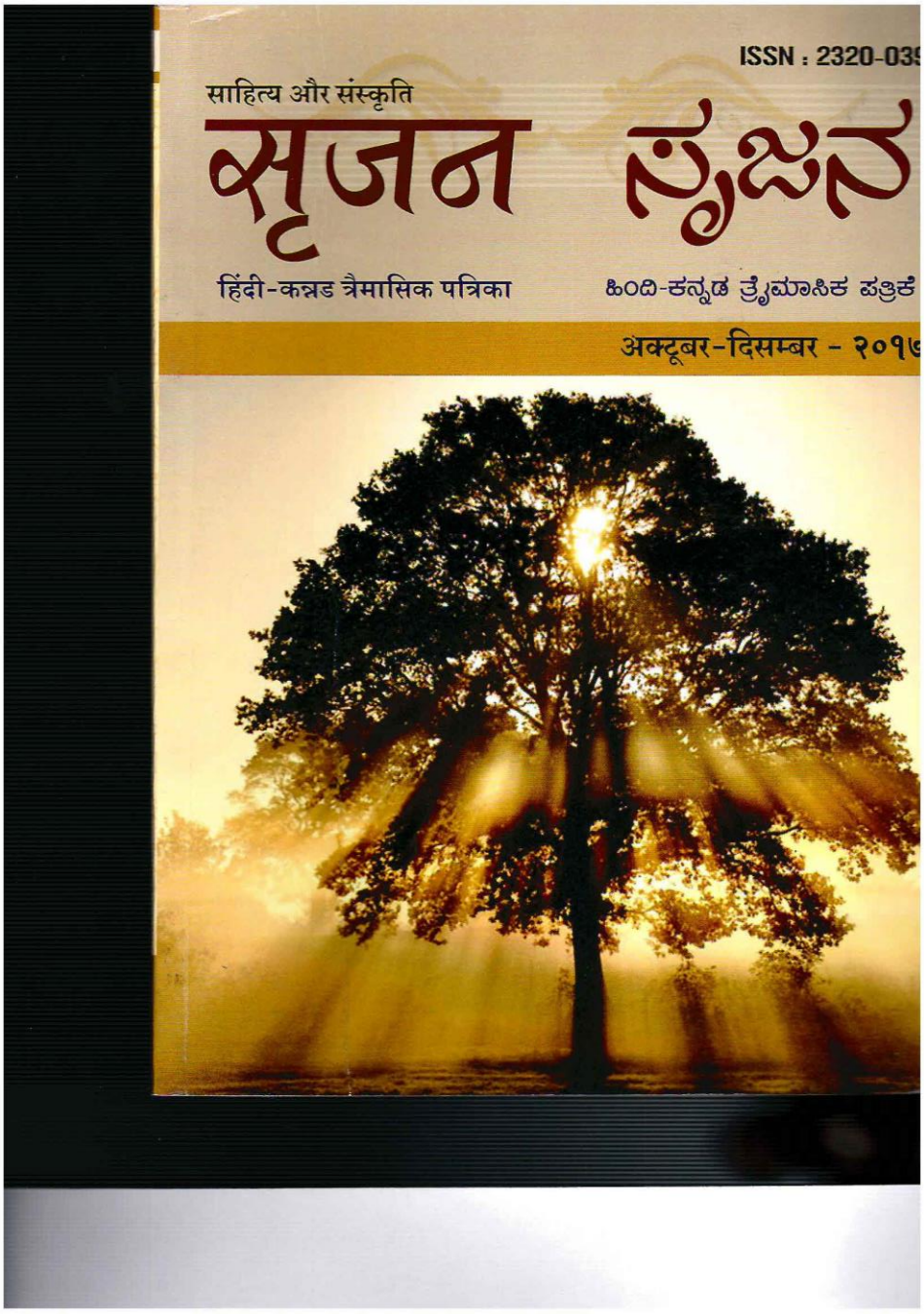

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 18

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-
आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
प्रो. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

सृजन ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अप्रैल-जून २०१७ त्रैमासिक पत्रिका

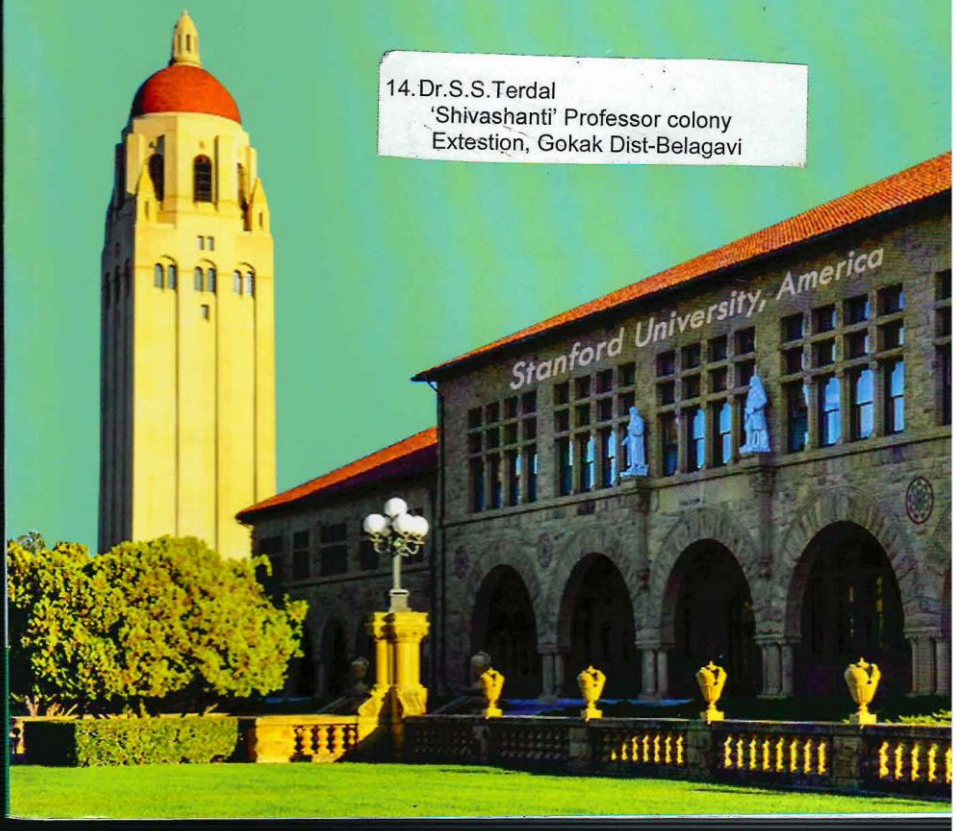

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -6
अंक - 22

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-

आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड

प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

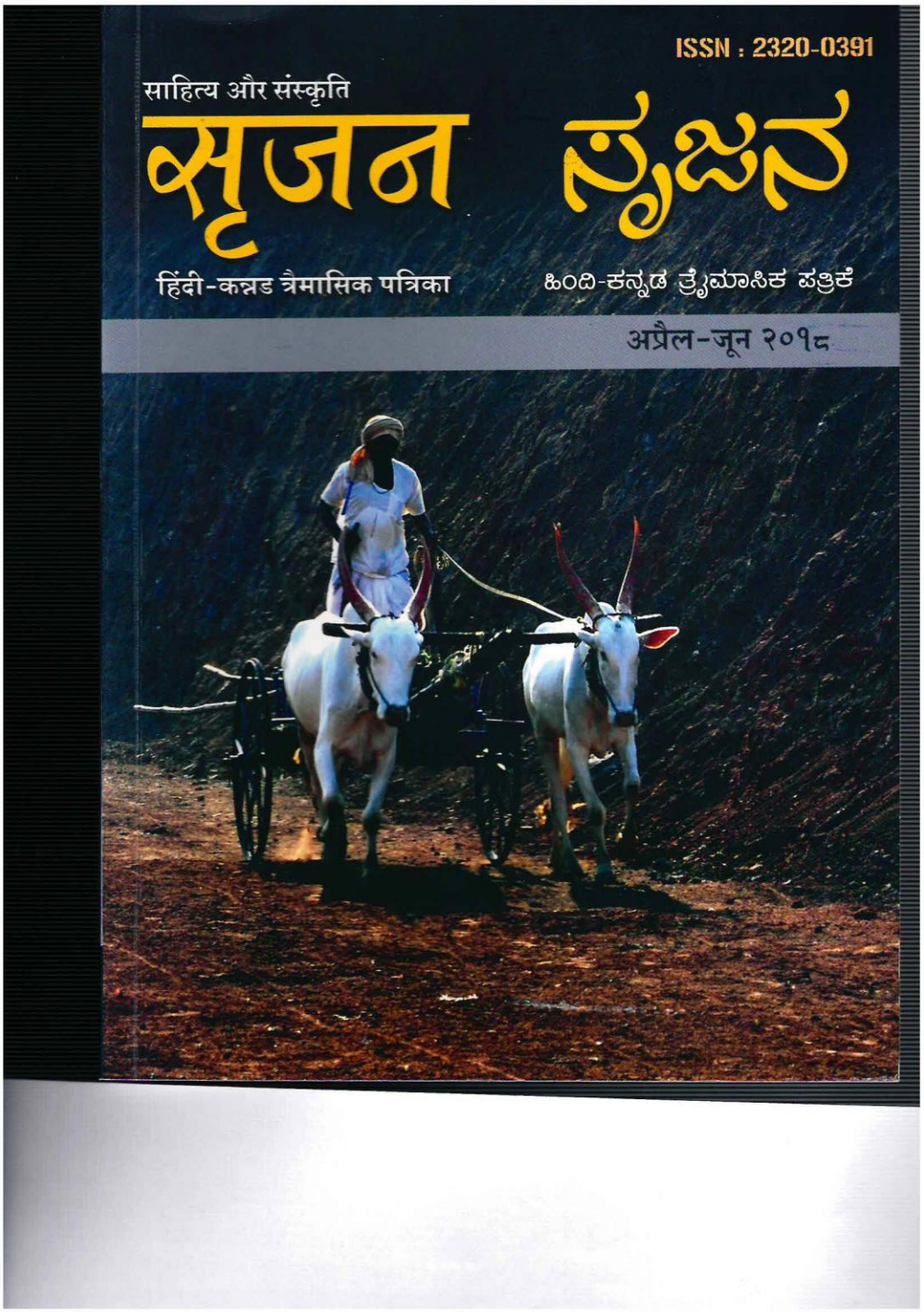

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति
सृजन

वर्ष - 9 हिंदी-कन्नड त्रैमासिक अंक - 27

Peer Reviewed Journal

सलाहकार मंडल

1) प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
कुलपति, आंध्रप्रदेश केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, विजियानगरम
2) प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा एंव संशोधन केन्द्र दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
3) प्रो. प्रभा भट्ट
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी अध्यायन विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड
4) प्रो. प्रतिभा मुदलियार
हिन्दी विभागाध्याक्ष, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर
5) प्रो नामदेव गौडा
हिन्दी विभाग, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर
6) डा. बसवराज जगजंपि
निवृत्त प्राचार्यरु, के.एल्.इ. लिंगराज कालेज्, बेळगावि
7) डा. पी. एस्. माळी
निर्देशकरु, श्री बि. आर्. दरूर संशोधना केंद्र हारुगेरि, जि. बेळगावि
8) डा. मैत्रेयिणि गदिगेप्पगौडर
सहायक प्राध्यापकरु, कन्नडविभाग, राणिचेन्नम्म विश्वविद्यालय, बेळगावि

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
अवकाशप्राप्त प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
अवकाशप्राप्त प्राचार्य, बंगारम्मा सज्जन महिला महाविद्यालय, विजयपुर
डॉ. एस. एस. तेरदाल
अवकाशप्राप्त प्राचार्य, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभागध्यक्ष, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

Peer Reviewed Journal

जनवरी-दिसम्बर २०२०

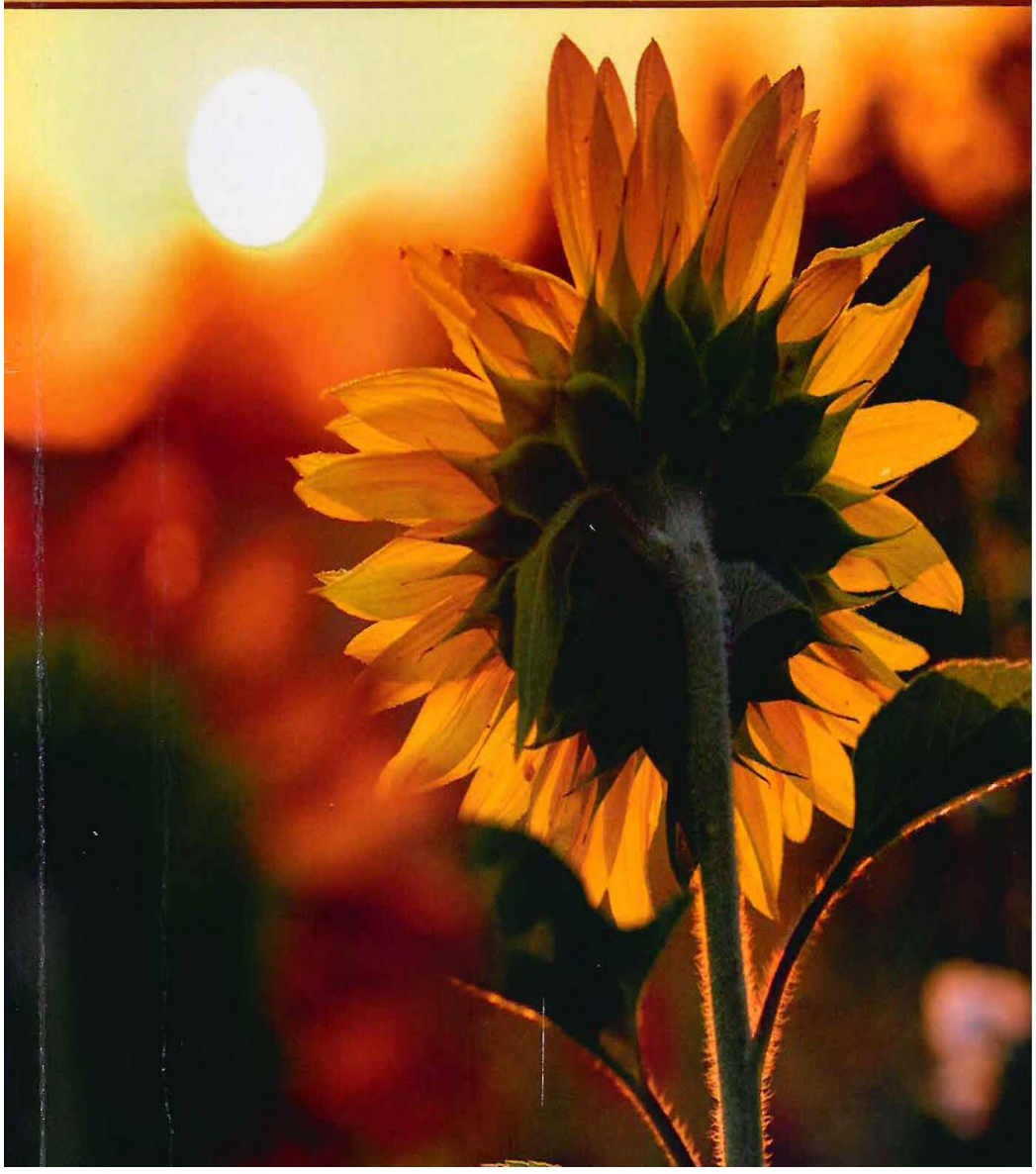

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति
सृजन

वर्ष - 8 हिंदी-कन्नड त्रैमासिक अंक - 25

Peer Reviewed Journal

परामर्श मंडल

1) प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
कुलपति, आंध्रप्रदेश केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, विजियानगरम
2) प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा एंव संशोधन केन्द्र दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
3) प्रो. प्रभा भट्ट
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी अध्यायन विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड
4) प्रो. प्रतिभा मुदलियार
हिन्दी विभागाध्याक्ष,
मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर
5) प्रों नामदेव गौडा
डीन, भाषा संकाय, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर
6) ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಜಗಜಂಪಿ
ನಿವೃತ್ತ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ಕೆ.ಎಲ್.ಇ. ಲಿಂಗರಾಜ ಕಾಲೇಜ್, ಬೆಳಗಾವಿ
7) ಡಾ. ಪ್ಹಿ. ಎಸ್. ಮಾಳಿ
ನಿರ್ದೇಶಕರು, ಶ್ರೀ ಬಿ. ಆರ್. ದರೂರ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರ ಹಾರುಗೇರಿ, ಜಿ. ಬೆಳಗಾವಿ
8) ಡಾ. ಮೈತ್ರೆಯಿಣಿ ಗದಿಗೆಪ್ಪಗೌಡರ
ಸಹಾಯಕ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರು, ಕನ್ನಡವಿಭಾಗ ರಾಣಿಚೆನ್ನಮ್ಮ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಬೆಳಗಾವಿ

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
प्राचार्य, बंगारम्मा सज्जन महिला महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
प्राचार्य, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभागध्यक्ष, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अक्टूबर-दिसम्बर - २०१७

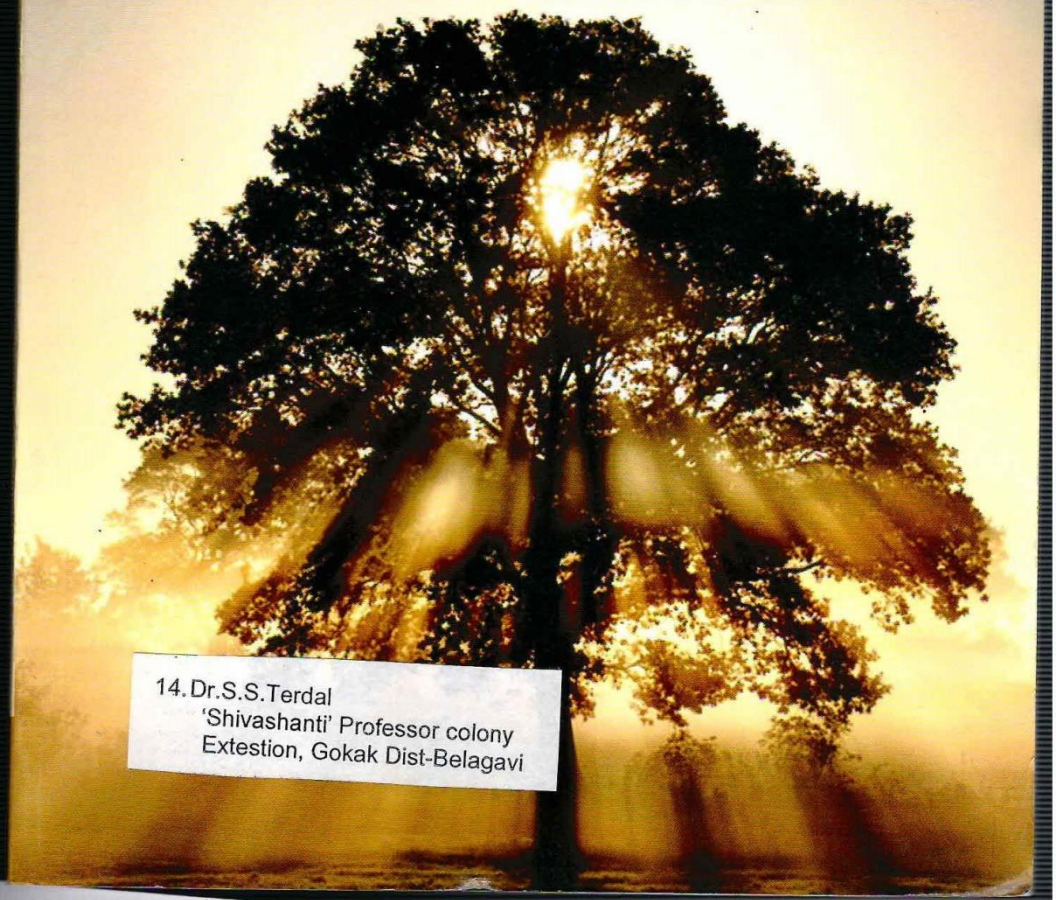

14. Dr.S.S.Terdal
'Shivashanti' Professor colony
Extestion, Gokak Dist-Belagavi

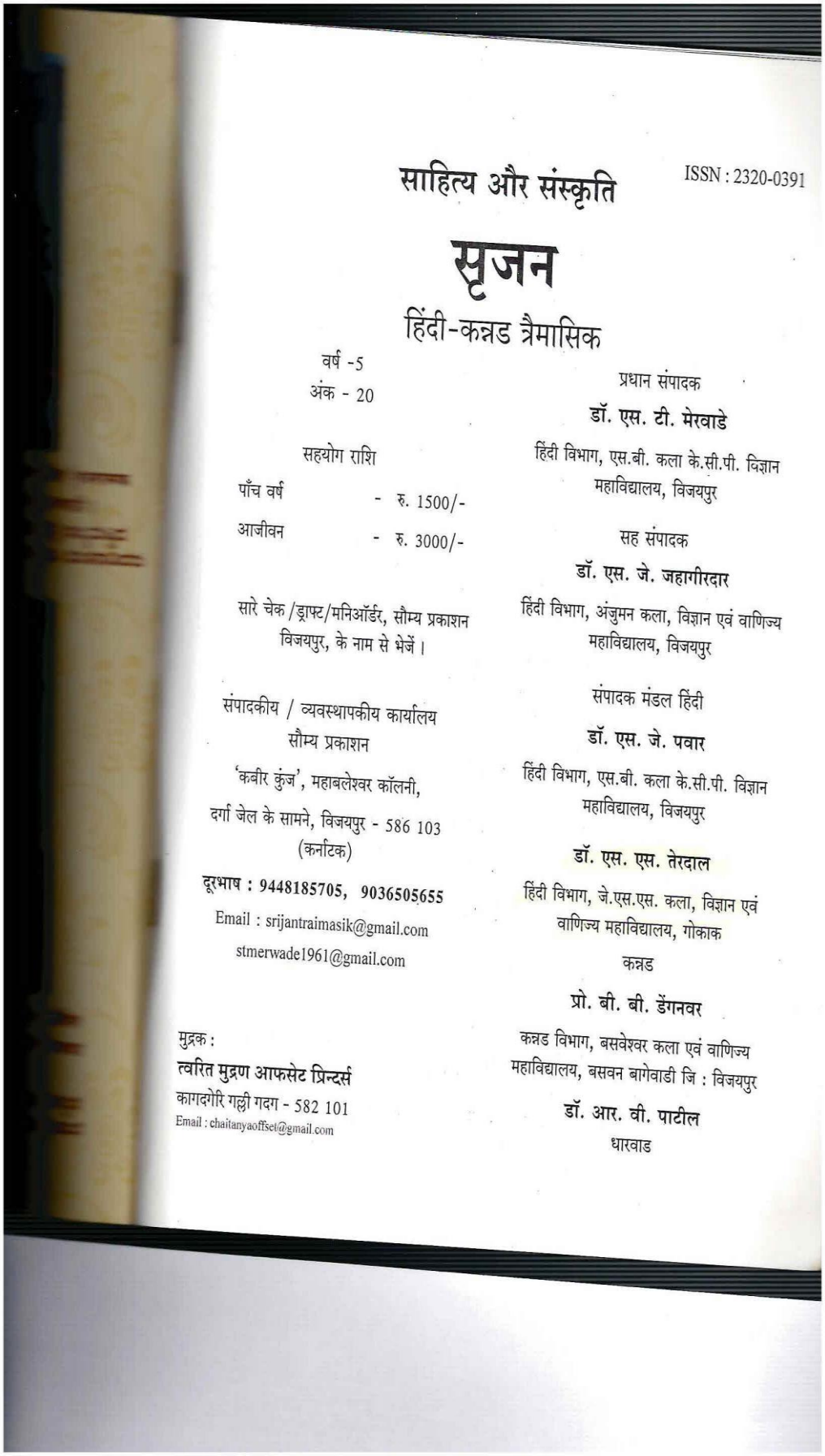

साहित्य और संस्कृति

ISSN : 2320-0391

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 20

सहयोग राशि
पाँच वर्ष - रु. 1500/-
आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

Peer Reviewed Journal

अप्रैल - सितंबर २०२१

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी–कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 17

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-

आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
प्रो. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अक्टूबर-दिसम्बर २०१८

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -6
अंक - 24

सहयोग राशि

दो वर्ष - रु. 1500/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
प्राचार्य जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, नूतन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, तिकोटा जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -6
अंक - 24

सहयोग राशि

दो वर्ष - रु. 1500/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कमादगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
डॉ. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
प्राचार्य जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, नूतन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, तिकोटा जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -5
अंक - 18

सहयोग राशि

पाँच वर्ष - रु. 1500/-
आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन विजयपुर, के नाम से भेजें ।

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने, विजयपुर - 586 103
(कर्नाटक)
दूरभाष : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com
stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
प्रो. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी
डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड
प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
धारवाड

1
3
8
6
9
2
5

न बूते पर अपनी एक
फल रही हैं। अपनी
टक विश्वविद्यालय
रसन (अध्यक्ष) भी
महिलाओं से जुडी
करते हुए भारतीय
में अनेक सेमिनार
योजन भी किया है।
हुई लेखिका भी हैं।
की गतिविधियों में
ो लेखनी की उपेक्षा
लगभग 23 हिन्दी
पादन भी किया है।
मुख पत्र-पत्रिकाओं
भाषणों को आपने
नारों में प्रस्तुत किए
नंदिनी गुंडुराव के
म भी प्रकट हुए हैं।
कार्य भी करती रहती
के. कुलकर्णी द्वारा
हिन्दी में अनुवाद
या रेडियो दिल्ली से
जिसको श्रोताओं ने
के उपरांत भी डॉ.
हिन्दी के रचनात्मक
ग्राओं से जुडी डॉ.
न धन से संलग्न हैं।
ी की एक आदर्श
गहिंदी क्षेत्र धारवाड

■■

. 9845231816

महानगरीय ग्लैमर की पड़ताल करता उपन्यास 'देशनिकाला'

• डॉ. शंकर एस. तेरदाल

धीरेन्द्र अस्थाना के उपन्यास 'देशनिकाला' एक ऐसी जीवन संघर्ष की कहानी है, जिसमें मुंबई की चकाचौंध भरी सिनेमा नगरी व् थियेटर एवं अभिनय की दुनिया में बसे हुए हों। इस उपन्यास में व्यक्ति की सफलता और सार्थकता के बीच मारक द्वंद्व एवं प्रतियोगिता तथा संघर्ष दिखाया है। इसमें मुंबई जैसे बड़े शहर, वहाँ के फिल्मी दुनिया का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। उपन्यास को पढकर यह भी लगता है कि जैसे वैभव, बाजार और लालसा आदि ने रिश्तों को आत्मनिर्वासिन के मोड़ पर ला खड़ा किया है। इस शहर के, इस महानगर के चमकते सुख और टिमटिमाते दुखों को लेखक के द्वारा हमें मानो गहराई से दिखलाने का प्रयास है। लेखक ने यहाँ स्त्री-पुरुषों के व्यक्तिगत संबंधों की जटिलता और विशिष्टताओं को प्रस्तुत करते हुए वैचारिक द्वंद्व को उभारने का प्रयास भी किया है। उपन्यास का मुख्य पात्र नायक गौतम जो एक कलाकार, एक नाट्यकर्मी और असफल अभिनेता के रूप में सामने आया है, उसका टूटता अहम, उसका करवट लेता भाग्य, थोड़ी सी कामयाबी, फिर जीवन के संघर्षों, द्वंद्वों में उलझते जाने का सजीव चित्रण भी किया है। दूसरी तरफ नायिका मल्लिका जो कथानायक गौतम से प्यार करती है, उसका स्वभाव, विचार एवं सोच गौतम से बिलकुल भिन्न है। गौतम में संयम, धैर्य और संवेदनशीलता की कमी है तो मल्लिका में कोमलता और मासूम आकांक्षाएँ युक्त है। मल्लिका को एक सुव्यस्थित जीवन चाहिए, जिसमें संबंधों की, प्यार एवं स्नेह की भावनाएँ समावेश हो, धन व् पैसों की नहीं। गौतम थियेटर का सुपरस्टार है। पृथ्वी थियेटर में जब उसका नाटक चलता है तो भीड़ रहती थी लेकिन बाद में उतना आकर्षित नहीं हो पाया। मल्लिका का गौतम के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के बाद उन्हें यह महसूस होने लगता है कि दोनों का एक साथ रहना गौतम को अपनी आजादी पर अंकुश लगता है। गौतम फिर अलग अलग रहने का फैसला करता है। कभी नायक बनने का सपना देखनेवाला गौतम जिंदगी के कई मोड़ों पर अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। उन्हें कुछ कामयाबी, कुछ सफलता भी मिलती हैं, साथ में बदनामी भी। श्रेया जो एक उभरती नायिका है जो दरअसल गौतम की ओर आकर्षित है, कई संघर्षों के बीच क्रूरता का शिकार बनकर अंततः आत्महत्या करने को बाध्य हो जाती है। इसी घटना से ऊपजी बदनामी गौतम के सामने भी आ जाति है। लेकिन बाद में गौतम मल्लिका के पास शादी का प्रस्ताव लेकर उपस्थित होता है। मल्लिका जो अब अभिनय छोड़ बच्चों को ट्यूशन पढ़ा रही थी, दो बड़ी बड़ी फिल्मों में मुख्य भूमिका के प्रस्ताव पाकर सफलता मिलती है। लेकिन वह फिल्मों के वैभव को छोडकर माँ बनना चाहती है। यह फैसला गौतम का

Co-ordinator, IQAC
J.S.S. Arts, Science & Commerce, College, Gokak.

J.S.S. ARTS, SC. & COM. COLLEGE GOKAK -591307

PRINCIPAL
J.S.S. ARTS, SCIENCE AND COMMERCE COLLEGE, GOKAK.

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

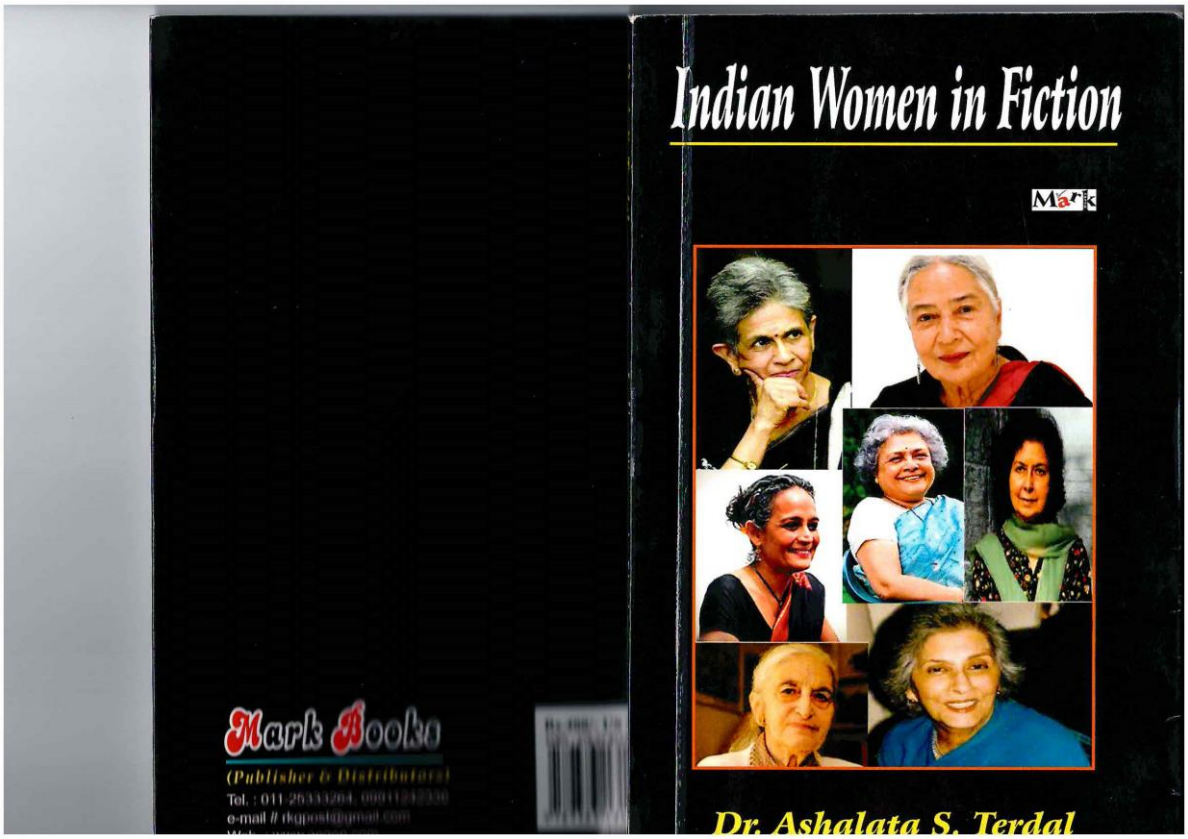

The concepts of New woman is noticed where women are free, assertive and trying to be liberated opposing the traditional life style. Protagonists make an attempt to attain independence within their social frame work. A balanced practical approach is accepted by women.

I profusely thank Dr. Shankar Terdal for the great inspiration. I am grateful to Management, Teaching and Non-Teaching Staff of JSS College, Gokak. A special thanks to Niranjan for his valuable suggestion and services which is memorable. I am extremely grateful to my parents Dr.K.B.Kattimani & Smt S.K.Kattimani and all my sweet sisters and brothers for their inspiration. I am thankful to my Angel daughter Netra and all the family members.

Dr. Ashalata S. Terdal

Contents

	Preface	5
1.	Indian Women Fiction	9
2.	Anita Desai ,Ruth Prawer Jhabvala, Nayantar Sahgal, Jay Nimbkar, Mrinal Pande & Others	21
3.	Shashi Despande & Anita Desai	42
4.	Kamala Markandaya	55
5.	Image of Jaya in Shashi Despande's Novel	59
6.	Saru in "The Dark Holds No Terror"	68
7.	Women Characters in Shashi Despande's Novels	81
8.	The Theme of Indianess in Roy's 'The God of Small Things'	90
9.	Beyond the Canon in Women Novels	99
10.	The Dark Holds No Terror	107

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

Published by

MARK BOOKS
(Publishers & Distributors)
Saraswati House, U-9, Subhash Park,
Near Solanki Road, Uttam Nagar, New Delhi - 110059
Ph. 011-25333264, 9911242336
e-mail # rkgpost@gmail.com
www.aegop.com

Indian Women in Fiction

Copyright — Author

1st Edition, 2017

INR 400/- US $ 22

ISBN : 978-93-83131-55-6

[All rights reserved. No part of this book can be reproduced in any manner or by any means without prior permission of the Publisher.]

PRINTED IN INDIA

Published by *Rajkumar for Mark Books,* Delhi Laser typeset at *Shivalaya Enterprises, Delhi and Printed at Sagar Print World, New Delhi*

PREFACE

Indian women writing in English is being recognized as a major contemporary current in English literature. These writers write in the adopted language to express love and better themes. Their literature suggests new routes and new modes of thinking in all this globalization and liberalization which is moving the world. Indian women writers tries to explain in their novels how the changes have taken place and presents the journey of a new woman. Their novels deal with woman's quest for self assertion. The inner turmoil tension and mental change of characters in the present issues explained. The protagonist tries to learn the truth about themselves deserting all the shadows that they had thought to be their real self. The characters assert their individuality and realize the liberty.

Most of the novels explore the female psyche and depict mysteries of this society and difficulty of middle class protagonist who are placed in it to suffer under pressure of male dominated society. This book projects the new image of the middle class protagonists who tries to be confident, independent and liberated female. This book throw light on the woman's dilemma in the patriarchy society in the post modern period.This book with the variety in manner and matter will certainly help the researchers and influence them to search for new woman's image in the patriarchy society. This book discusses the images of women in Indian women novels and presents women issues with deeper understanding. The inner turmoil, tension & mental change of characters especially the female protagonists are revealed in a more authentic way.

in 'The Truth About Marriage') Shashi Deshpnde's hero Mohan truly represents this.

Footnotes

1 Literary Criticism and Theory – P. B. Govani Feminism. Woman in the novels of S. Deshpande, A Study – S. Prasanna Sree page 11.

2 Indian writing in English – The women novelists page 436, 437.

3 Anita Desai, Shashi Deshpande and Bharati Mukharjee. Shashi Deshpande's novels: A Feminist Study, Siddhartha Sharma, page 85-86.

4 Indian women Novelists, Set III, vol 2 Edited by R. K. Dhawan. Exploration of corner space. Anita Desai and Bharati Mukharjee – S. Indira.

5 Indian women novelists. Set III, Vol 2, Edited by R. K. Dhawan. Exploration of Inner Space: Anita Desai and Bharati Mucharjee. S. Indira, page 73.

6 A companion To Indian Fiction in English. Edited by Pier Paolo Piciucco, Atlantic Publishers & Distributors, Anita Desai, D. Maya, page 139

7 A companion To Indian Fiction in English. Edited by Pier Paolo Piciucco, Atlantic Publishers & Distributors, Anita Desai, D. Maya, page 140

8 Atma Ram, "Anita Desai : The novelist who writer for herself". The journal.

9 A Companion to Indian Fiction in English – Anita Desai D. Maya page, 156

10 Woman in the novels of Shashi Deshpande – A Study Introduction, S. Prasanna Sree page 17

11 Woman in the novels of Shashi Deshpande – A Study Introduction, S. Prasanna Sree page 15

12 Contemporary Indian English novel Feminism in Nayantara Sahgal's novels page 69, edited by Brahma Dutta Sharma and Susheel Kumar Sharma.

13 Jashbir Jain, Nayantara Sehgal New Delhi, Arnold Heinemann, 1978, p-67

14 Life and works of Shashi Deshpande by Dr. S. K. Mishra Bhasker publications, Kanpur.

15 Life and works of Shashi Deshpande A Critical Study by Dr. S. K. Mishra Bhasker Publicvations.

16 Woman in the novels of Shashi Deshpande – A Study S. Prasanna Sree Swaru and sons.

17 Woman in the novels of Shashi Deshpande – A Critical Study Dr. S. K. Mishra.

18 Studies in women writers in English Arundhati Roy's The God of Small Things, page 82. edited Mohit K. Ray, Rama Kundu.

19 Studies in women writers in English A Reading of Arundhati Roy and Jhumpa Lahiri Edited by Mohit K Roy & Rama Kundu

20 Studies in women writers in English Feminism in Roy's 'The God of Small Things' R. S. Jain, page 96. Ed. Mohit K. Roy & Rama Kundu

21 Reference: Shashi Deshpande, The making of the Novelist. The fiction of Shashi Deshpande. By Dr. R. S. Pathak page - 19

22 Shashi Deshpnade's novels: A feminist study by Siddhartha Sharma, Atlantic Publisher and Distributors 2005. PP 13

23 Women in the novels of Shashi Deshpande by S. Prasanna Page 27

24 Roots and Shadows. Textural reference.

25 Gendered realities human spaces. The writing of Shashi Deshpande – Jasbir Jain.

26 Critical Studies in Indian writing. Ramesh Kumar Gupta.

27 Critical Studeis in Indian writing in English. Shashi

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

Dr. Ashalata S. Terdal is an Associate Professor Dept Of English at J.S.S Arts, Science ,Commerce, BBA & PG Dept, Gokak affiliated to Rani Chanamma University, Belgavi. She has studied MA in English Literature at Karnataka University Dharwad. Her Ph.D thesis is entitled "A Study Of Women Characters in the Fictional World Of Shashi Deshpande". She had a live experience of meeting Shashi Deshpande in one of the International Seminar conducted by the Karnataka University Dharwad.

Dr.Ashalata.S.Terdal has conducted many workshops on communication and presentation skills for students. She has participated in UGC sponsored workshops, seminars and conferences. She has published many articles in national and international books and journals. She has inspired many students through innovative teaching.. As of now, she has a rich teaching experience of 25 years at UG level and has contributed to the research on Indian Women English Fiction. She has provided social service to the mankind which made a difference in every needy's life.

Dr. Ashalata.S.Terdal is a Principal of J.S.S College, Gokak affiliated to Rani Chanamma University, Belgavi. She has studied MA in English Literature at Karnataka University Dharwad. Her Ph.D thesis is entitled "A Study Of Women Characters in the Fictional World Of Shashi Deshpande". She had a live experience of meeting Shashi Deshpande in one of the International Seminar conducted by the Karnataka University Dharwad.

Dr.Ashalata.S.Terdal has conducted many workshops on communication and presentation skills for students. She has participated in UGC sponsored workshops, seminars and conferences. She has published many articles in national and international books and journals. She has inspired many students through innovative teaching.. As of now, she has a rich teaching experience of 25 years at UG level and has contributed to the research on Indian Women English Fiction. She has provided social service to the mankind which made a difference in every needy's life.

Academic Excellence
(Publisher & Distributors)
New Delhi - 110059 (India)
Tel. : 011-25333264, 09911242337
E-mail # aegop19@gmail.com
Web. : imbpd.com

Rs. 400/- US $ 38
ISBN : 978-93-83246-85-4
9789383246854

Prized Possession

Dr. Ashalata S. Terdal

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

PRIZED POSSESSION

Dr. Ashalata Shankar Terdal
Principal, J. S. S. College,
Gokak (Karnataka)

ACADEMIC EXCELLENCE
Delhi - 110059

spellings and pronunciation;

(ii) list and tables of words generally confused and misused;

(iii) lists and tables of collocating words, fixed phrases, idioms and proverbs;

(iv) matchstick figures and diagrams used to clarify grammatical concepts;

(v) lists and tables of words which would add to the contextualized vocabulary of students as well as to their general knowledge; and

(vi) improvised rhymes which would enable pupils to pronounce words having difficult pronunciation.

Teaching aids, the main effort has been to provide the learners with an insight into the pattern or configuration of the English language. Care has been taken to make the matchstick figures and diagrams as innovative and attractive as possible.The book will fulfil a long-felt need in the domain of ELT and will be useful for pupil teachers, practising school teachers and teacher educators. Some of the most important research findings mentioned in this book are based on the analysis and interpretation of errors detected in the written and spoken language of B.Ed. and ETE students.

I profusely thank Dr. Shankar Terdal for the great inspiration. I am grateful to Management, Teaching and Non-Teaching Staff of JSS College, Gokak. I am thankful to my Angel daughter Netra and all the family members.

- **Dr. Ashalata S. Terdal**

Content (s)

Preface v

1. Teaching of English: The Communicative Perspective 9
2. Communicative Competence 14
3. Research in Teaching of ESL 37
4. The Art of Teaching Poetry 46
5. Teaching Grammar Funcionally 53
6. Spoken English: Essential Features 58
7. Writing Ability and Compositional Style 71
8. Handwriting: Importance and Characteristics 75
9. Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE): Teaching of English 81
10. Pedagogical Analysis: The Basic Concept 89
11. English Teaching Analysis & Research Approach 94
12. English at the Primary Level: The Emerging Secenario 98

Bibliography 103

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

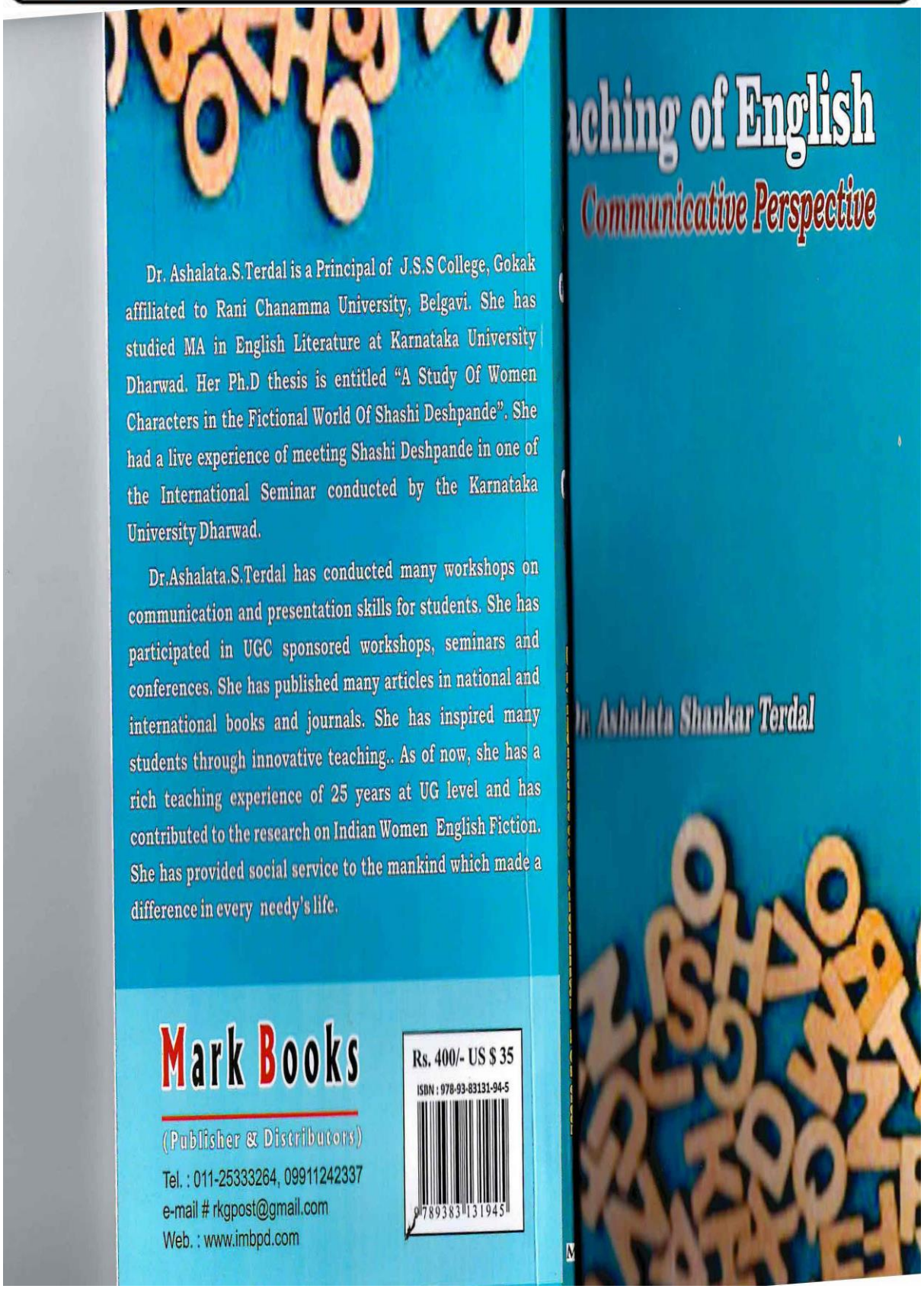

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

Published by

MARK BOOKS

(Publishers & Distributors)

Saraswati House, U-9, Subhash Park,
Near Solanki Road, Uttam Nagar, New Delhi - 110059
Ph. 011-25333264, 9911242337
e-mail # markbooksindia@gmail.com
www.imbpd.com

Teaching of English: Communicative Perspective

Copyright – Reserve

1st Edition, 2021

ISBN : 978-93-83131-94-5

[All rights reserved. No part of this book can be reproduced in any manner or by any means without prior permission of the Publisher.]

PRINTED IN INDIA

Published by *R. Gupta for Mark Books*, New Delhi Laser typeset at *Graphic Era, Delhi and Printed at Sharp Digital Prints Pvt. Ltd., N. Delhi.*

Preface

Identification and elimination/minimization of common errors in English.

Strengthening of properly contextualized vocabulary

Development of linguistic and communicative competence based on balanced and integrated development of the five basic language skills: listening, thinking**, speaking reading, and writing (LTSRW)

Grammar and usage with particular emphasis on collocations, fixed phrases, idioms and proverbs/sayings

Pronunciation and its concomitant aspects: stress, intonation and rhythm.

The students, teachers and teacher educators of various universities and also the recent trends in ELT syllabus design in deals comprehensively with the basic principles of Communicative Language Teaching (CLT) with specific reference to the teaching of English in India. It's covers those areas which relate to the most essential components of an ELT syllabus designed for B.Ed students. This book deals with the application of visual aids in the teaching of English. This part, planned out elaborately and showing a large number of teaching aids (in miniature forms) actually used in a research project, has been written with a view to establishing the fact that simple and inexpensive visual aids often have the potentiality to foster and sharpen pupils' communicative competence.

(i) lists and tables of commonly misspelt and mispronounced words along with their correct

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

TEACHING OF ENGLISH:
Communicative Perspective

Dr. Ashalata Shankar Terdal
Principal, J. S. S. College
Gokak, Karnataka

Mark
MARK BOOKS
Delhi - 110 059 (India)

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

Chief Editor

Dr. S. S. Terdal
Principal
JSS Arts, Science, Commerce, BBA College and PG Departments, Gokak

Editors

Dr. A. M. Gurav
Dean, Comm & Mmgt
Shivaji University, Kolhapur

Dr.S.D.Kore
HoD, MBA
KIT's IMER, Kolhapur

Dr.(Smt).A.S.Terdal
HoD, English Dept
JSS College, Gokak

Prof.V.C.Hunachyali
Dept. Of Comp.Sci
JSS College, Gokak

Prof.(Smt).J.S. Kothiwale
HoD, Economics Dept
JSS College, Gokak

Prof. M. M. Katti
HoD, Comp.Sci Dept
JSS College, Gokak

Sub Editors

B. H Swami
Dept. Of Comp Sci
JSS College, Gokak

Smt.V. V Muatlik Desai
BBA Coordinator
JSS College, Gokak

Rajat Pandit
BBA Dept.
JSS College, Gokak

Smt.R.A.Khaja
HoD, Comm Dept.
JSS College, Gokak

Arunkumar Patil
BBA Dept
JSS College, Gokak

Smt.S. P Kattimani
Comm. Dept
JSS College, Gokak

Smt.Sushma Mathew
BBA Dept
JSS College, Gokak

D. B. Venkannaavar
Comm. Dept
JSS College, Gokak

Smt. Sneha Murari
Physics. Dept
JSS College, Gokak

Employability Skills–Today's Need

Chief Editor

Dr. S. S. Terdal
Principal
JSS Arts, Science, Commerce, BBA College and PG Departments, Gokak

Quality Books Publishers & Distributors
Kalyanpur, Kanpur - 16
(U.P.)

ISBN : 978-93-83637-82-9

Book	: Employability Skills–Today's Need
Chief Editor	: Dr. S. S. Terdal
Published by	: Quality Books Publishers & Distributors 15, Shiddharthanager, Guba garden, Kalyanpur Kanpur - 208 016 (U.P.) Mob : 08960421760, 09044344050
Edition	: First, 2018
©	: Writer
Price	: 1495.00 Only
Type Setting	: Shashi Graphics, Naubasta, Kanpur
Printed by	: Sakshi offset, Kanpur

Preface

In the globalization era, there has been lot of inter dependency between company's expectation and individual's employability. The changing needs and expectation from corporate has given more emphasis on employability skills. Human Resource Management (HRM) is vital activity in organization's performance through employee skills and quality. India, at present, is recognized as one of the youngest nations (demographic dividend) of the world with over 50% of population under the age of 30 years. Considering this scenario, "Skilling India" is the buzz word in India. Considering this background, the College Management has decided to organize the International Conference on **"Employability Skills: Today's Need" with Sub Themes e.g.** Employability and Humanities, Employability and Social Sciences, Employability in Commerce and Management, Employability in Banking-Finance-Insurance, Entrepreneurship Development, Employability in Management, Higher Education and Employability, Employability in Information Technology, Employability in Agriculture and Agro Processing Industries, Employability in Travel and Tourism, Yoga-Spirituality-Meditation and Employability, Role of NGOs in Employability, Role of NAAC, IQAC, NBA, ISO, QS in Employability, Start up India, Make in India, Digital India, Skill India, Stand up India and Employability, Employability is Science Sector, Employability in Sport Field and other topic related to Employability. I feel very proud that this book includes 115 Papers which were written by Authors and Co-Authors. These papers have been written by academicians, research scholars, Professors and NGO's from India and Outside India. All papers are blind reviewed and the plagarum related issues is on the shoulder of the concern Author and Co-Author. About 150 participants have participated and presented papers and their thoughts. This conference includes key note address, one panel discussion and 10 Tracks for paper presentation which are organized in two sessions. One Panel Discussion is organized with 7+ Eminent

- Agrepreneurship a Means for Rural Development and Women Empowerment 66
  Mrs Shivali A. Ghatge
  Dr. Ranjana P. Shinde
- Occupational Aspirations Of Secondary School Boys And Girls Of Dharwad District In Relation To Certain Socio-Psychological Factors 72
  DR. R. H. Naik
- Employability Skills Today's Need Higher Education and Employability 76
  Channamma Talawar
  Dr. R.H. Naik
- Employment Generation and Entrepreneurship Development: an Economic View 80
  Mr. G S Chinagi
  Dr. H H Bharadi
- Employability in Criminology and Forensic Science 86
  Dr. G.S.Venumadhava
  Anil Mavarkar
- Role of Information Technology to Create Employability in Farmers 90
  Chandrashekhar K M
  Dr. S. B. Nari
- Repercussion of Human Capital on Employability in India 96
  Budihal Nikshep Basavaraj
  Dr. N. S. Mugadur
- Effects of Population on Employability in India 100
  Malati Shankar Patgar
  Budihal Nikshep Basavaraj
  Dr. (Smt) V. Sharda

- Implementation of Yoga in Workplace 104
  Dr.Jyoti Upadhye
  Dr.Shreekant Chavan
- The Role of Language as an Employability Skill 107
  Dr. S. S. Terdal
  Dr.Shashikant.D.Kore
- Enhancing Student's Employability through Higher Education 116
  D.N.Misale
  S.C.Kamule
- Role of NAAC in promoting Quality on Higher Education 123
  Dr. V. R. Sindhe
  Dr. U. M. Shagoti
- Employability Skills In Business Education: A Need Of Hour 133
  Chidanand H. Shinge
  Dr. S. O. Halasagi
- Graduate Employability And Career Resources 139
  Prof. K. I. Indikar
- Soft Skills As Employability 143
  Dr.Sujatha.K.Kattimani
- English As An Employability Skill 148
  Dr (Prof)Ashalata. S. Terdal
- Skills in India New hopes and Challenges 158
  Prof. P A LAXETTI
- Employability in Library and Information Science 163
  Arati D. Kabburi

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

PERSPECTIVES ON CONTEMPORARY LITERATURE AND LITERARY THEORIES IN ENGLISH

Editor :
Prof. P. Kannan

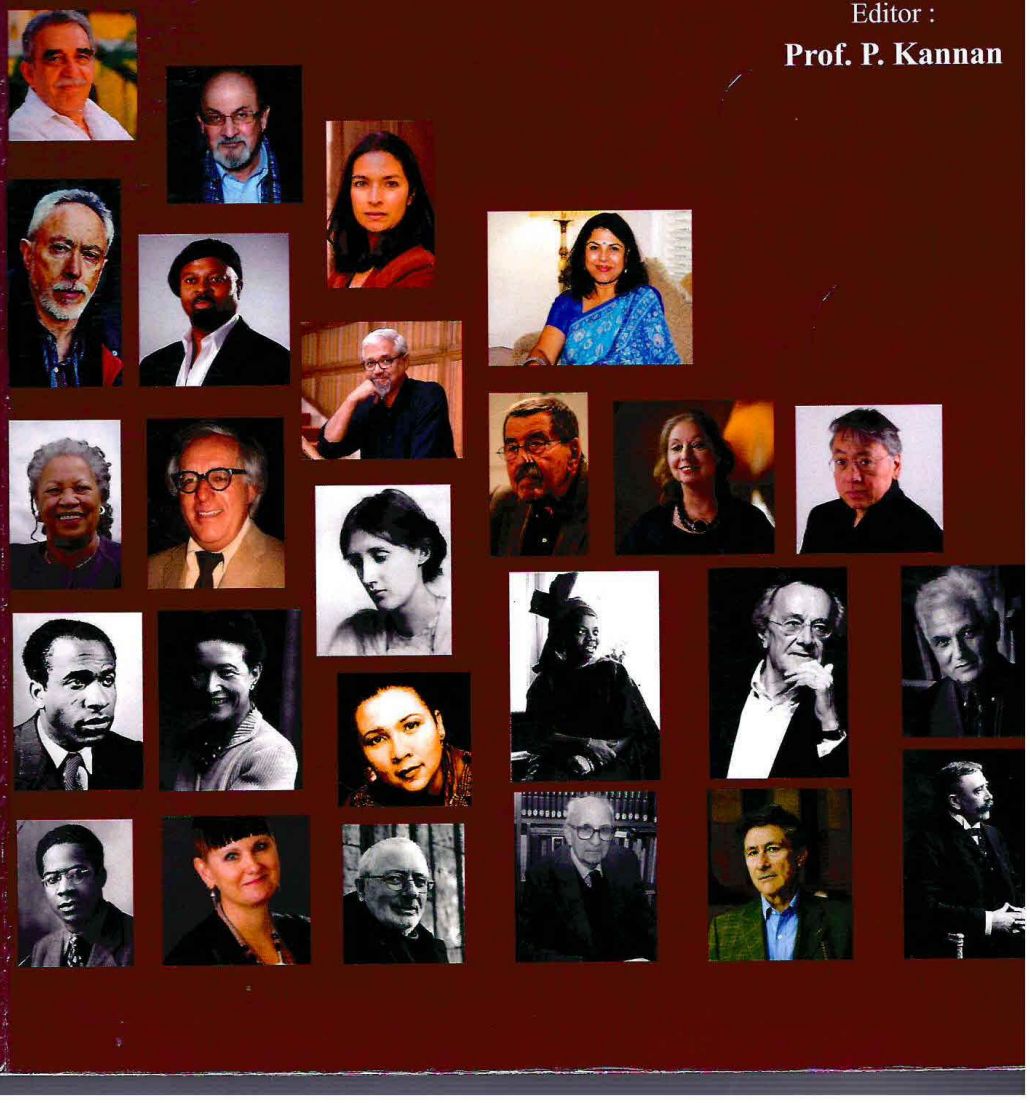

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com

Prof. P. Kannan is a versatile scholar and teacher in English Literature and Language. He was awarded M.Phil Degree from University of Madras for the dissertation entitled **Treatment of War Theme in Ernest Hemingway's Farewell to Arms and For Whom the Bell Tolls – A Comparative Study** in 1990 and Ph.D from Karnatak University Dharwad for the thesis entitled **Postmodernist Indian Fiction in English – A Study of Subversive Themes and Technique** in 2006. He obtained **PG Diploma in Teaching English** from **Central Institute of English & Foreign Languages Hyderabad** in 1997;**PG Diploma in Communicative English** and **PG Diploma in B.R. Ambedkar Studies** from **Karnataka State Open University, Mysore** in 2012 & 2014 respectively.

He has served as a teacher of English in various cadres for twenty nine years. He has participated and presented papers in several National and International seminars in India and abroad. He has published about twenty research articles in the National and International journals. He has held such positions as Chairman Dept of PG Studies & Research in English; Director KSAWU Regional Centre, Mandya; Director Dr. B.R. Ambedkar Studies Centre Karnataka State Akkamahadevi Women's University. He has served as Registrar of Davangere University Davangere. He is Registrar (Evaluation) of Kuvempu University, Shimoga presently.

PERSPECTIVES ON CONTEMPORARY LITERATURE AND LITERARY THEORIES IN ENGLISH

₹ 500/-

JEEVAN PUBLICATION

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

INDEX

Sl.No.	PAPERS	Page No.
	Vice-Chancellor's Message	03
	Registrar's Message	04
	Editor's Note	05
	Fashion – A Tool of Empowerment and Objectification of the Female in the Film The Devil Wears Prada - Aakanksha Ravindra Chopde	11
	Freewill of Akhila in Anita Nair's Ladies Coupe - Ms. G. Anantha Lakshmi,	16
	The Fluid Phases of Womanhood in the Short Stories of Alice Munro - Anita S.M.	20
	Depiction of Sacrificing Women in Shashi Deshpande's That Long Silence - Ms. T. A. Anisha Poorani	22
	The Divided Identities in The Gossamer Fly And Last Quadrant by Meira Chand: A Postcolonial Study - N. Annakamatchi and - Dr P. Jeyappriya	25
	Translating Purandara Dasa's Kriti into English using Direct and Oblique Translation Strategies - Anuradha Dorepally	29
	Centaurs and Humans: A Study of J. K. Rowling's Harry Potter Series - Anusha Hegde	35
	Issues in the Indian Diasporic Literature - Dr Ashalata S. Terdal	39
	In the Soil of Tears: A Window to Dalits' Pain - Asma K.	43
	Literature from the Arab and Islamic World and Anglo-Arab Novel in the Euro-American Literary World - Prof. P. Kannan - Athiya Sultana	45
	Indian Muslim Novelists - Dr Azara Tahasin S. Inamdar	51
	Black Beauty: A Representative of the Working Class - Bharath G C	53
	Analysis of Migration and Self-Identity in Bharati Mukherjee's Jasmine - Dr. S. Bhuvaneswari	55
	The Modern Tradition and Educational System in O. V. Vijayan's The Legends of Khasak - Ceazer Gonsalves	58
	The Unsung Heroes - Cassiana William Lawrence	61
	Children's Fiction - Dr. Cecilia S. D'Cruz	65
	Postcolonial Ecocriticism: Climate Crisis and Corporeality of British Raj in Gopinath Mohanty's Paraja And Amrutara Santana - Chaitra Nagammanavar	69
	Poverty, Identity Crisis and Sexual Exploitation in Sharankumar Limbale's The Outcaste - Dr. A. Chandra Bose	72
	Diasporic Concerns in So Good in Black by Sunetra Gupta: A Study - Ms. Deepa M. Madiwal	76

08

[illegible]ssues in the Indian Diasporic Literature

Dr Ashalata S.Terdal
AssociateProfessor
J.S.S Science, Arts & Commerce College
Gokak

Abstract:

[illegible] has issues that have been discussed in this paper. Diasporic literature [illegible] of alienation and a sense of loss which emerged as a result of migration and [illegible] types of Indian diaspora groups. The writings emerged from a forced migration [illegible] from voluntary migration. They have many diasporic issues to deal with. [illegible] are forced to move out of the country due to many reasons. Diasporic [illegible] issues like racial discrimination, alienation, intolerance, displacement, [illegible] nostalgia, quest of identity, ethnicity, amalgamation, the disintegration of culture, [illegible] globalization, multiculturalism, diasporic sensibility, erosion of ethical [illegible] feeling of loss, culture identity, and dislocation. We have Indo-British diasporic [illegible] Indian diaspora in the Caribbean island and the Indian diaspora community [illegible]

[illegible] culture, alienation, identity, multiculturalism, literature, Indo-British, Indo-[illegible] nostalgia, frustration

[illegible] of the Jewish experience. Culture needs to be defined and redefined. [illegible] The term diaspora extended to refer to situations other than the [illegible] the homeland of Jewish. Diaspora is a sort of group of people who [illegible] whose ancestors come from that particular nation but at present live in [illegible]

[illegible] the ones who write outside their country through their literary works. [illegible] the feeling of alienation and a sense of loss which emerged as a result [illegible] There are two types of Indian diaspora groups. The writings emerged [illegible] the writing emerged from voluntary migration. They have many [illegible] The Indian diasporic writers are forced to move out of the country due to [illegible] migration. When Indian writers voluntarily try to go out of India [illegible] have mixed feelings, some criticize the country and some praise [illegible] of migration has led to the emergence of a large number of writers [illegible] through their works and have contributed to the development of English [illegible]

[illegible] different issues like racial discrimination, alienation, intolerance, [illegible] nostalgia, quest of identity, ethnicity, amalgamation, the

social set up woman is conscious of her identity and self confidence. The cultural encounter help in enriching the diaspora experience it may imbibe new ideas and modify something strange.

Some Diaspora writers create some interesting characters who are non-complaing and competent to resolve. The anguish which is common some explore feminist ideas of both western and Indian system. The characters in search of the process at quest go for alternative and construct new identity sometimes which is strange.

Indo-American and Indo British women Diasporic writers suggests new routes and new modes of thinking in this changing global scenario. The diasporic writers tried conveying their feelings through writing rather they took solace in writings and won accolades for their work. These writes are emerging writers. They convey the diasporic consciousness and share extraordinary diversity of ethnicities religious traditional and language.

References :

Indian Diaspora, Women English writers Yking Book, 203, PP 1 to 3.

Gendered realities human spaces, the writing of Shashi Despande, Jasbir Jain

Ramesh Kumar Gupta, Critical Studies in Indian writing in English P.P. 69

The Panrama of South Asian Disaporic Literature | P 4 Mukesh Yadav Subshree YKing Books, Jaipur, India 2012

Mukesh Yadav Shubshre, The Panorama of South Asian Diasporic literature from explation to immigrants , PP 45

Indian Diaspora Woman English writer Novelty introduced; Synthesis /Antithesis P.P.112 & 113

Indian Diaspora – Women English Writers by Gauri Shankar Jha : Feminism Culture at stake : A ecculturation/Decultural P. 52 Ykin Books Pub. 2013.

Other References:

Women in the novels of Shashi Deshpande, Dr. S. Prasanna Sree 2003 Pub. By Sarup & Sons.

General realities human Spaces, The writing of Shashi Despande Jasbir Jain

Critical Studies Indian Writing in English – Rames Kumar Gupta 2005 Prakash Book Dept. Printed by Rehan Rassol ar Raza Barquil Press, Barelly.

Mohit K. Ray Rama Kundy Studies in Women Writes in English Volumes Atlantic Publication, Nice Printing Press Delhi.

Critical Studies in Indian writing in English Ramesh Kumar Gupter 2005, Printed Rehan Rasool reference – Traditional House , A Study on the Fire on the Mountain. Cr.

Indian Diaspora Woman English writer Novelty introduced; Synthesis /Antithesis P.P.112

52

INDIAN WOMEN'S DIASPORIC NOVELS IN ENGLISH

Dr. Ashalata S. Terdal

Abstract:

This paper focuses on the Indo-British women diasporic novels and Indo American women diasporic novels which [illegible] different ways where the identities constituted through exile, [illegible] displacement, colonialism, Nostalgia rootlessness, exile and refugees problems. The diasporic writing is a phenomenal feature in the post colonial literature. The Indian woman diasporic writers concerns are global as the present world is afflicted with the problems of immigrants, Homesick, homeless, rootless, racial discrimination, culture shock and language problem. Indian women diasporic writes have established their credentials by winning honours and literary awards. There is also shift in the concept the subject in the two generation. The inner needs of all human beings are the same. Alienation and metaphysical alienation is also a part of experience of the Indian women Diaspora. These writers write in the adopted language to express love for new home. [illegible]

Dr. Ashalata S. Terdal: Head & Associate Professor of English, J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak, Belgavi, Karnataka.

Indian women writes are equipped with the better themes. Their literature suggests new routes and new modes of thinking in all this globalization and liberalization which is moving the world; towards universalism. The generational culture clash is also presented through the novels. Identity crisis is the main theme of Diaspora writing. They engage in cultural transmission and double identification.

The Diaspric writing is a phenomenal feature in post colonial literature. The Indian women diasporic writers concerns are global. The Indian women diasporic writers are from different cultures, languages, faiths and place but the binding factor of all these writers is that they have the idea of Indian values. Overseas Indians are best educated and have added to the knowledge and economy. In the 20th century high skilled professional and semi skilled contract workers have migrated.

Indian women Diasporic writers are Anita Desai, Bharathi Mukhrjee, Suntra Gupta, Jhumpa Lahiri, Kamala Markanday, Anjana Appachana, Kiran Desai, Chitra Benrjee, Divakaruni, Sujata Massey and Meena Alexander. These writers generate the ways in which there is great search for the new identities. The novels of these writers are complex in the theme and technique. These diasporas are mostly termed as exiles or emigrant or expatriates women diaspora literature talks of nationality ethnicity and migrants.

Gauri Shankar Jha remarks that "The study of diaspora literature offers a new paradigm to the study of Indian cultural productions outside India and enables us for global approach with a new perspective, that of the unresolved tensions of diasporas consciousness, the ethno-histroical significance of the texts space for a variety of comparatives studies of different traditions made available on the platform of the Indian writing in English with a larges international outlook and broader ideology" (1).

Women write differently from men. They differ in their understanding of outer reality and reactions, response and solutions differ.

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

Dr. P. Kannan has got a rich profile of Educational qualifications, Teaching and Research experience. He has received higher education in five major Indian universities. He holds such Degrees and Diplomas as M.Phil, PG Diploma in Teaching English, PG Diploma in Communicative English, PG Diploma in Dr.B.R.Ambedkar Studies and Ph.D. He has got 26 years of experience of teaching English language and literature. He has presented research papers in 40 National and International seminars held in India and abroad. He has delivered Inaugural, Key-note and plenary addresses in 25 National and International seminars organized by the Departments of English in the colleges and universities across the country. He has held various academic positions like Chairman of Board of Examinations, Board of Studies and Department of English in Karnataka State Women's University. He has organized two National Seminars and one International Seminar in Karnataka State Women's University. His areas of specialization and interest are Contemporary Literary Theories; Indian Diasporic Novels in English; and Dalit Literature. He works as Professor & Chairman presently in Karnataka State Women's University, Vijayapur.

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
www.vishwabharati.in

ISBN 978-93-86242-58-7
₹ 1199 | $ 50

INDIAN WOMEN'S LITERATURE IN ENGLISH

Prof. P. Kannan

(15)

INDIAN WOMEN'S LITERATURE IN ENGLISH

(ORIGIN, GROWTH AND EVALUATION

Volume :

Editor
Prof. P. Kannan

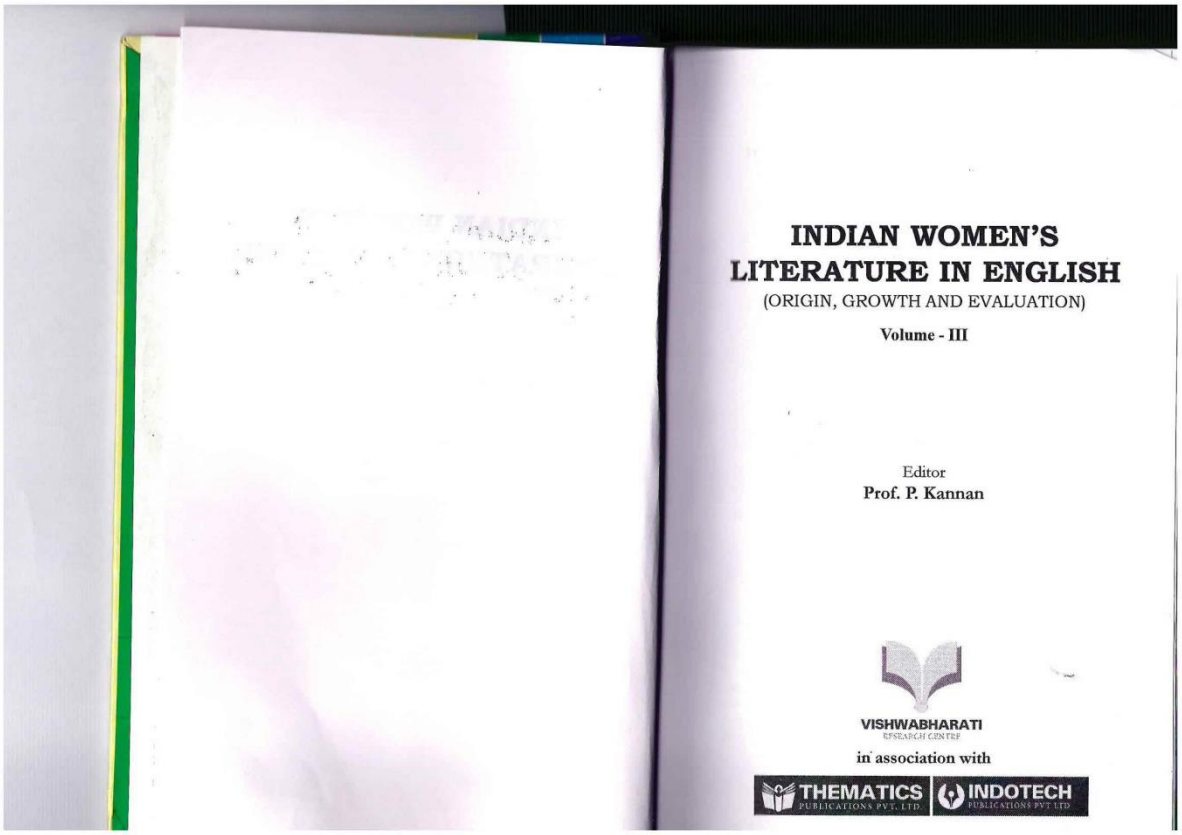

INDIAN WOMEN'S LITERATURE IN ENGLISH

(ORIGIN, GROWTH AND EVALUATION)

Volume - III

Editor
Prof. P. Kannan

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
in association with
THEMATICS PUBLICATIONS PVT. LTD
INDOTECH PUBLICATIONS PVT. LTD

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

INDIAN WOMEN'S LITERATURE IN ENGLISH
(ORIGIN, GROWTH AND EVALUATION)
Editor:
Prof. P. Kannan
Published by:
VISHWABHARATI
Registered Office:
Sunil Terrace, Block No.14, Near Central S.T. Bus Stand,
Latur-413512 (MS) India. Cell: 91-9422467462
e-mail: info@vishwabharati.in
www.vishwabharati.in
in association with
THEMATICS PUBLICATIONS PVT. LTD. INDOTECH PUBLICATIONS PVT. LTD
Corporate Office:
Office No. 413 A, 4637/20, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002 India.

ISBN: 978-93-86242-58-7

Price: ₹ 1199 | $ 50

Copyright ©Vishwabharati Research centre
First Edition 2017
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the Publisher and the Author, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other non-commerical uses permitted by copyright law. All legal matters concerning the Publication/Publisher shall be settled under the jurisdiction of Latur (MS) Court only. The views expressed in the papers are of the respective authors, not necessarily reflect the editor and publisher.

Printed, Typesetting, Cover Design by:
Diamond Printers & Papers
Rajiv Gandhi Chowk, Latur-413512 (MS) India.

Dedicated to...
Prof. Sabiha
Hon'ble Vice Chancellor,
KSWU Vijayapur.

PORTRAIT OF WOMEN IN KRUPABAI SATTHIANADHAN'S *KAMALA, A STORY OF HINDU LIFE*
B. Valliammal & Dr. M. Kannadhasan
316 - 322

FEMINISM IN NAYANTARA SAHGAL'S NOVEL *THIS TIME OF MORNING*
Kalyana Basava M.
323 - 333

DALIT WOMEN'S LITERATURE IN ENGLISH TRANSLATION
Jaladappa Pujari & Dr. F.H. Ilkal
334 - 338

POETRY OF CONFESSION: A STUDY OF KAMALA DAS
Ravindra Narayanrao Salunke & Farhath Naazneen
339 - 345

SUBVERTING HEGEMONIC PATRIARCHAL DISCOURSES: A STUDY OF MAHASHWETA DEVI'S *DRAUPADI*
Saroja K. Kamatagi
346 - 353

INDIAN FEMINIST LITERATURE IN ENGLISH
Shivasharan M. Biradar
354 - 357

ISMAT CHUGHTAI AND THE REPRESENTATION OF SECULAR PARADIGM
Dr. Shobha M
358 - 365

INDIAN WOMEN'S DIASPORIC NOVELS IN ENGLISH
Dr. Ashalata S. Terdal
366 - 377

1

CHITRA BANERJEE DIVAKARUNI'S *SISTER OF MY HEART*: INFLUENCE OF CULTURE TRADITION AND SOCIETY ON INDIAN WOMEN'S LIFE

Dr. Azara Tahasin S. Inamdar

Abstract:

This paper attempts to analyse the fact that Chitra Banerjee Divakaruni as a South Asian Diasporic writer represent India its legends folktale of myths the predominant role of class, caste discrimination customs, marriage and family through the story of two Bengali cousins which reflects the Indian culture tradition society since their birth to marriage and so on. Readers can peep into the views of characters mental status of the characters. Here the women characters are struggle for their identity.

Key Words: Myth, Indianness, Diaspora, Society.

Chitra Banerjee Divakaruni is the author of fifteen books including the award winning short story collection *Arranged Marriage* The Novels – *The Mistress of Spices, Sister Of My Heart, Queen Of Dreams, The Palace of Illusions*. Her works have been translated into eighteen languages and two of her works *The Mistress of Spices,*

G.E.Society's
J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak
(ACCREDITED AT 'A' WITH 3.10 CGPA IN 3rd CYCLE)
Website: www.jssgokak.in ☎ : 08332 – 225141 Email: jssgokak@gmail.com
1965-2015

INDEX

Sl.No.	PAPERS	Page No.
	Vice-Chancellor's Message	03
	Registrar's Message	04
	Editor's Note	05
	Fashion – A Tool of Empowerment and Objectification of the Female in the Film The Devil Wears Prada - Aakanksha Ravindra Chopde	11
	Downfall of Akhila in Anita Nair's Ladies Coupe - Ms. G. Anantha Lakshmi,	16
	The Fluid Phases of Womanhood in the Short Stories of Alice Munro - Anita S.M.	20
	Depiction of Sacrificing Women in Shashi Deshpande's That Long Silence - Ms. T. A. Anisha Poorani	22
	The Divided Identities in The Gossamer Fly And Last Quadrant by Meira Chand: A Postcolonial Study - N. Annakamatchi and - Dr P. Jeyappriya	25
	Translating Purandara Dasa's Kriti into English using Direct and Oblique Translation Strategies - Anuradha Dorepally	29
	Centaurs and Humans: A Study of J. K. Rowling's Harry Potter Series - Anusha Hegde	35
	Issues in the Indian Diasporic Literature - Dr Ashalata S. Terdal	39
	In the Soil of Tears: A Window to Dalits' Pain - Asma K.	43
	Literature from the Arab and Islamic World and Anglo-Arab Novel in the Euro-American Literary World - Prof. P. Kannan - Athiya Sultana	45
	Indian Muslim Novelists - Dr Azara Tahasin S. Inamdar	51
	Black Beauty: A Representative of the Working Class - Bharath G C	53
	Analysis of Migration and Self-Identity in Bharati Mukherjee's Jasmine - Dr. S. Bhuvaneswari	55
	The Modern Tradition and Educational System in O. V. Vijayan's The Legends of Khasak - Ceazer Gonsalves	58
	The Unsung Heroes - Cassiana William Lawrence	61
	Children's Fiction - Dr. Cecilia S. D'Cruz	65
	Postcolonial Ecocriticism: Climate Crisis and Corporeality of British Raj in Gopinath Mohanty's Paraja And Amrutara Santana - Chaitra Nagammanavar	69
	Poverty, Identity Crisis and Sexual Exploitation in Sharankumar Limbale's The Outcaste - Dr. A. Chandra Bose	72
	Diasporic Concerns in So Good in Black by Sunetra Gupta: A Study - Ms. Deepa M. Madiwal	76

08

Issues in the Indian Diasporic Literature

Dr Ashalata S.Terdal
AssociateProfessor
J.S.S Science, Arts & Commerce College
Gokak

Abstract:

[illegible] literature has issues that have been discussed in this paper. Diasporic literature [illegible] feeling of alienation and a sense of loss which emerged as a result of migration and [illegible]. There are two types of Indian diaspora groups. The writings emerged from a forced migration [illegible] emerged from voluntary migration. They have many diasporic issues to deal with. [illegible] writers are forced to move out of the country due to many reasons. Diasporic [illegible] different issues like racial discrimination, alienation, intolerance, displacement, [illegible] nostalgia, quest of identity, ethnicity, amalgamation, the disintegration of culture, [illegible] stress, globalization, multiculturalism, diasporic sensibility, erosion of ethical [illegible] feeling of loss, culture identity, and dislocation. We have Indo-British diasporic [illegible] and Indian diaspora in the Caribbean island and the Indian diaspora community [illegible]

[illegible] culture, alienation, identity, multiculturalism, literature, Indo-British, Indo-[illegible] nostalgia, frustration

[illegible] out of the Jewish experience. Culture needs to be defined and redefined. [illegible] The term diaspora extended to refer to situations other than the [illegible] outside the homeland of Jewish. Diaspora is a sort of group of people who [illegible] whose ancestors come from that particular nation but at present live in [illegible]

[illegible] the ones who write outside their country through their literary works. [illegible] in the feeling of alienation and a sense of loss which emerged as a result [illegible] There are two types of Indian diaspora groups. The writings emerged [illegible] and the writing emerged from voluntary migration. They have many [illegible] The Indian diasporic writers are forced to move out of the country due to [illegible] migration. When Indian writers voluntarily try to go out of India [illegible] writers have mixed feelings, some criticize the country and some praise [illegible] of migration has led to the emergence of a large number of writers [illegible] through their works and have contributed to the development of English [illegible]

[illegible] different issues like racial discrimination, alienation, intolerance, [illegible] rootlessness, nostalgia, quest of identity, ethnicity, amalgamation, the

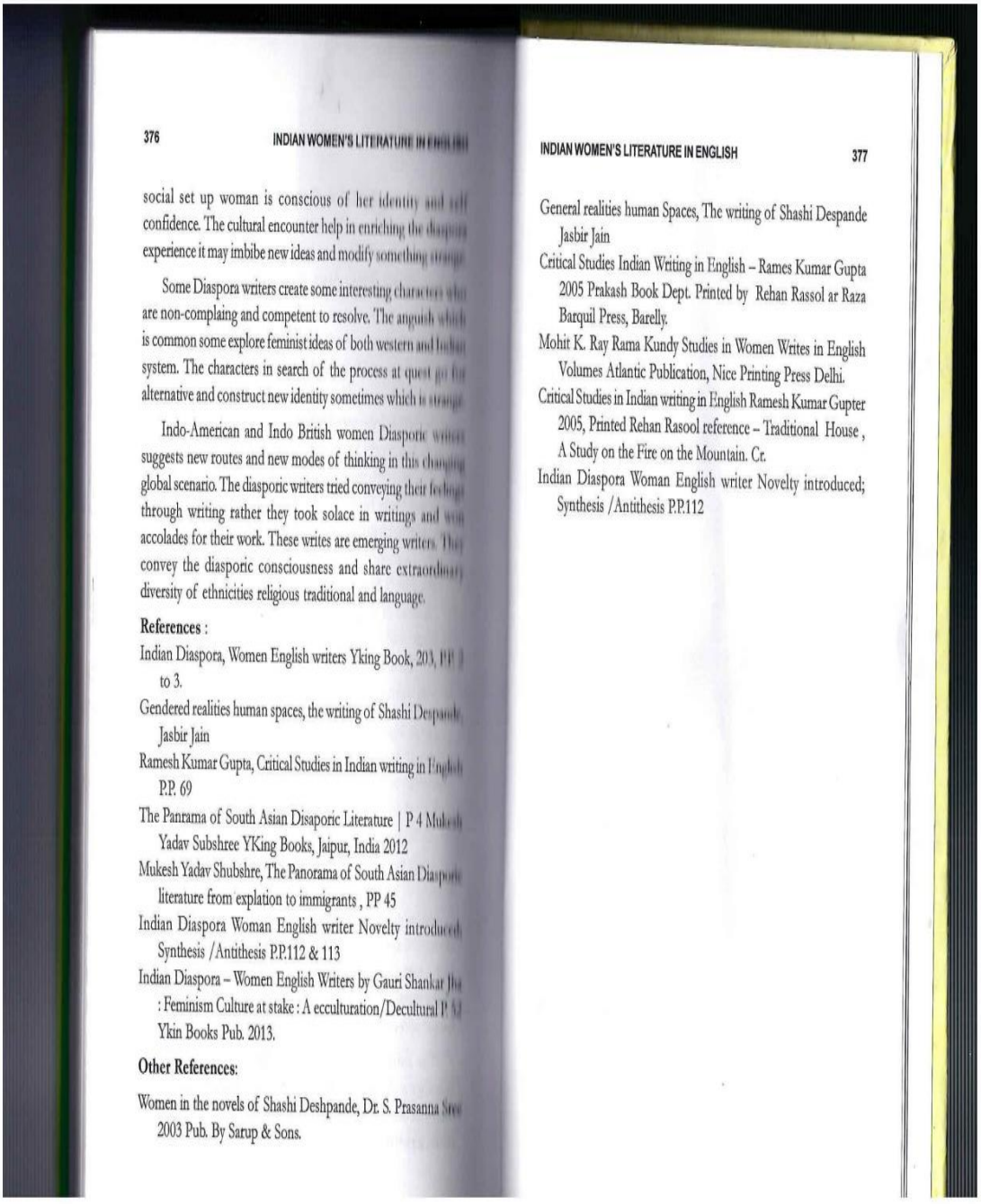

social set up woman is conscious of her identity and self confidence. The cultural encounter help in enriching the diaspora experience it may imbibe new ideas and modify something strange.

Some Diaspora writers create some interesting characters who are non-complaing and competent to resolve. The anguish which is common some explore feminist ideas of both western and Indian system. The characters in search of the process at quest go for alternative and construct new identity sometimes which is strange.

Indo-American and Indo British women Diasporic writers suggests new routes and new modes of thinking in this changing global scenario. The diasporic writers tried conveying their feelings through writing rather they took solace in writings and won accolades for their work. These writes are emerging writers. They convey the diasporic consciousness and share extraordinary diversity of ethnicities religious traditional and language.

References :

Indian Diaspora, Women English writers Yking Book, 203, PP 1 to 3.

Gendered realities human spaces, the writing of Shashi Despande, Jasbir Jain

Ramesh Kumar Gupta, Critical Studies in Indian writing in English P.P. 69

The Panrama of South Asian Disaporic Literature | P 4 Mukesh Yadav Subshree YKing Books, Jaipur, India 2012

Mukesh Yadav Shubshre, The Panorama of South Asian Diasporic literature from explation to immigrants , PP 45

Indian Diaspora Woman English writer Novelty introduced; Synthesis /Antithesis P.P.112 & 113

Indian Diaspora – Women English Writers by Gauri Shankar Jha : Feminism Culture at stake : A ecculturation/Decultural P. 52 Ykin Books Pub. 2013.

Other References:

Women in the novels of Shashi Deshpande, Dr. S. Prasanna Sree 2003 Pub. By Sarup & Sons.

General realities human Spaces, The writing of Shashi Despande Jasbir Jain

Critical Studies Indian Writing in English – Rames Kumar Gupta 2005 Prakash Book Dept. Printed by Rehan Rassol ar Raza Barquil Press, Barelly.

Mohit K. Ray Rama Kundy Studies in Women Writes in English Volumes Atlantic Publication, Nice Printing Press Delhi.

Critical Studies in Indian writing in English Ramesh Kumar Gupter 2005, Printed Rehan Rasool reference – Traditional House , A Study on the Fire on the Mountain. Cr.

Indian Diaspora Woman English writer Novelty introduced; Synthesis /Antithesis P.P.112

Co-ordinator, IQAC
J.S.S. Arts, Science & Commerce, College, Gokak.

J.S.S. ARTS, SC & COM. COLLEGE GOKAK -591307

PRINCIPAL
J.S.S. ARTS, SCIENCE AND COMMERCE COLLEGE, GOKAK.

Department of Political Science

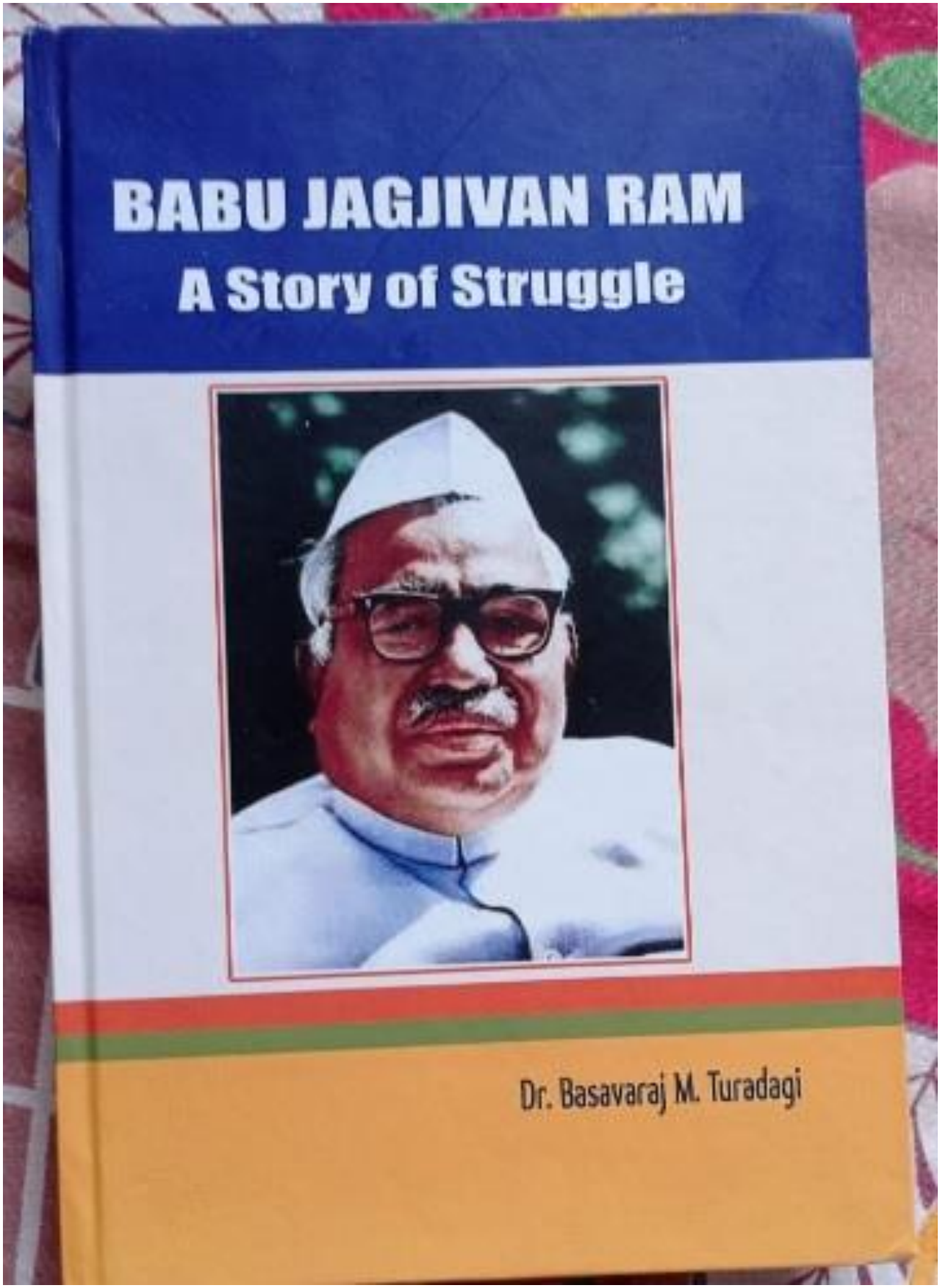

About the Author

Dr. Basavaraj M. Turadagi

Dr. Basavaraj M. Turadagi hails from Nagaral of Muddebihal taluka Vijayapur district. He was graduated from Basaveshwar Arts College, Bagalakote in 1990 and obtained M. A. in Political Science in 1992 from Karnataka University, Dharwad. He got M. Phil. degree in 2008 and awarded Ph. D. from Karnataka University, Dharwad in 2018.

He started his career as lecturer in Political Science in M.G.V.C. Degree College, Muddebihal. Presently he is working as head of the department of Political Science, J.S.S. Arts, Science and Commerce College, Gokak, a well reputed NAAC 'A' Grade institution in North Karnataka. He has 29 years of teaching and 12 years of research experience. He has participated in more than 75 national and international Seminars/ Conferences and presented papers. He has been invited as resource person on many platforms. His articles and research papers are published in leading journals. He has been working as member of Board of Studies (BOS) and Board of Examination (BOE) in Political Science, Rani Channamma University, Belagavi. He is well known and enthusiastic teacher and also he is known for his personality development classes and guides, motivates students for competitive examinations. His area of interest is in Political Leadership, Political Thought and Indian Government and Politics.

He has been associated with many associations and institutions. He worked as Vice-President of Kalidas Employees Co-operative Society, Muddebihal, Vice-President of KRMS, Belagavi and Treasurer of Rani Channamma University Colleges' Political Science Teachers' Association, Belagavi.

Published by

lulu.com
3101, Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

9 781716 147562

Price: 480/-

BABU JAGJIVAN RAM
A story of struggle

Dr. Basavaraj M. Turadagi

© 2021 Author
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

ISBN– 978-1-716-14756-2

Published by,
Lulu Publication
3101 Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

Printed by,
Laxmi Book Publication,
258/34, Raviwar Peth,
Solapur, Maharashtra, India.
Contact No. : 9595359435
Website: http://www.lbp.world
Email ID: apiguide2014@gmail.com

Department of URDU

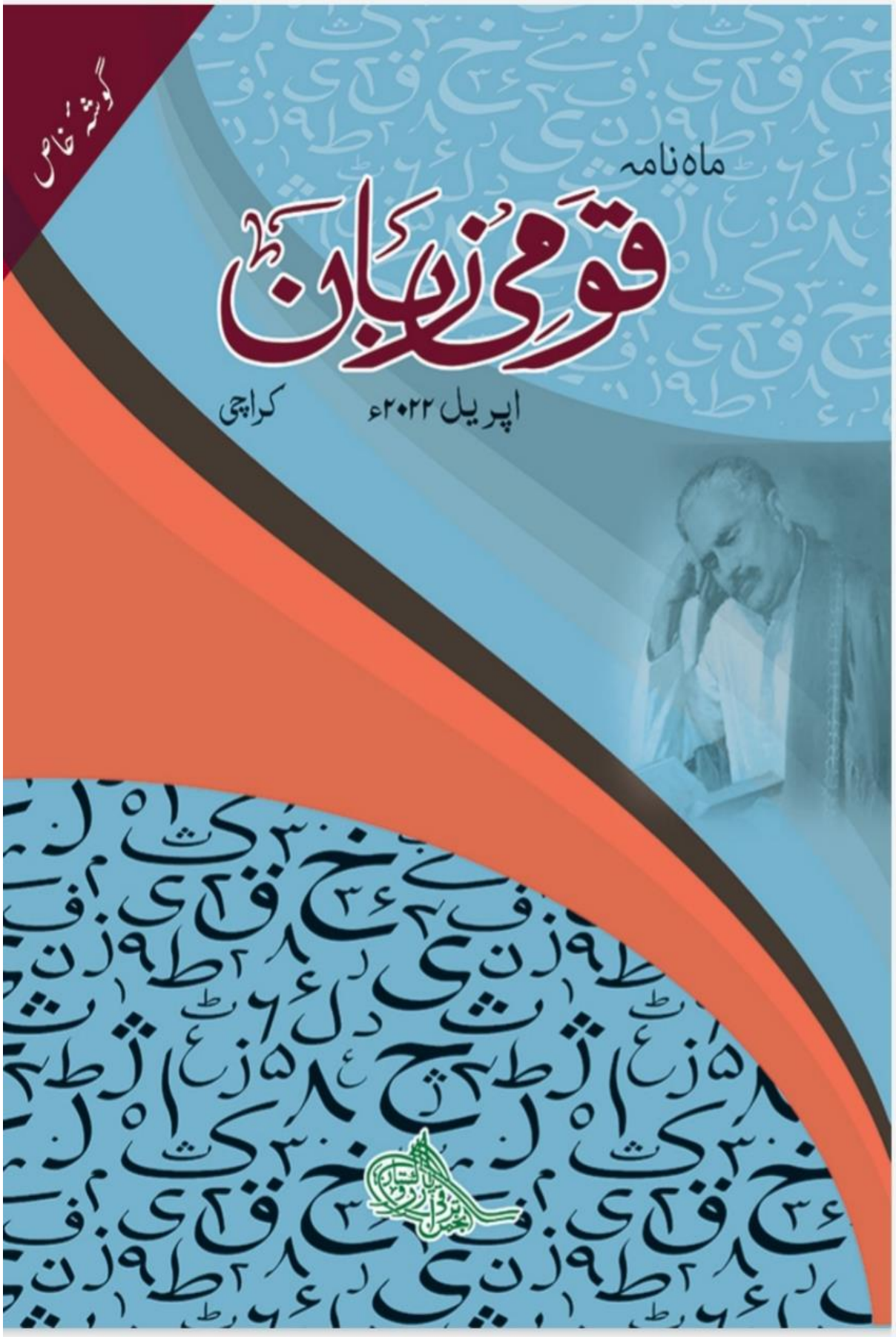

بانی: بابائے اردو ڈاکٹر مولوی عبدالحق

جاری شدہ: ۱۹۴۸ء

مدیرِ منتظم

سید عابد رضوی

مدیر

ڈاکٹر یاسمین سلطانہ فاروقی

نائب مدیر

ڈاکٹر عنبر فاطمہ عابدی

مجلسِ مشاورت

پروفیسر ڈاکٹر شاداب احسانی

واجد جواد

فی پرچہ: ۱۵۰ روپے

سالانہ (صرف رجسٹری سے): ۲۰۰۰ روپے

(عام ڈاک سے): ۱۶۰۰ روپے

سالانہ (ہوائی ڈاک سے) ۵۰ پونڈ/۱۰۰ ڈالر

کتب ورسائل کی خریداری کے لیے منی آرڈر/بنک ڈرافٹ بنام

انجمن ترقی اردو پاکستان ارسال کیجیے۔

انجمن ترقی اُردو پاکستان

شعبۂ تحقیق وتالیف وتصنیف

اُردو باغ، ایس ٹی۔۱۰، بلاک ۱، گلستان جوہر، کراچی

بطہ: ۰۲۱-۳۴۱۶۱۱۴۳ شعبۂ فروخت: ۰۳۳۲-۲۷۹۰۸۴۳

atup.khi@gmail.com http://www.atup.org.

، ایچ عابد رضوی، مدیر منتظم نے انجمن ترقی اردو پاکستان، اردو باغ، کراچی سے چھپوا کر شائع کیا۔

فہرست

اداریہ	ڈاکٹر یاسمین سلطانہ فاروقی	۳
سُرودِ انجم — علامہ اقبال کی شاہ کار نظم	ڈاکٹر شبیر احمد قادری	۵
غالبؔ اور اقبال	نجیب عمر	۱۱
اقبال کا وژن، سی پیک اور بلوچستان	ڈاکٹر عبدالرؤف رفیقی	۲۰
فکرِ اقبال کی روشنی میں صنفی مسائل کا حل	ڈاکٹر زیب النسا سرویا	۲۵
املا، ہجا، ہکاری مصمّتے اور تشدید کا عمل	ڈاکٹر سیّد یحییٰ نشیط	۴۰
شیخ ایازؔ کی اردو شاعری	مسلم شمیم	۴۶
منظر عباس نقوی — عالم میں تجھ سے لاکھ سہی تو مگر کہاں	پروفیسر صغیر افراہیم	۵۲
فیض کی محبت میں	ڈاکٹر نجیب جمال	۵۸
متنی تحقیق اور کلامِ فیضؔ	ڈاکٹر عظمیٰ فرمان	۶۱
چوّن (۵۴) اوزان رباعی اور شجرۂ اخرب و شجرۂ اشتر: تجزیاتی مطالعہ	ڈاکٹر خواجہ فرازؔ بادامی	۶۸
ایمرجنسی، فسادات اور پریم چند کی فرقہ وارانہ ہم آہنگی	ڈاکٹر ارشد اقبال	۸۷
اردو میں منظوم سیرت نگاری — ایک تعارفی جائزہ...	ڈاکٹر داؤد عثمانی	۹۷
رفتارِ ادب [ڈاکٹر سیّد قمر عباس]		۱۰۰
گرد و پیش		۱۰۳

اسرارِ ادب

• مرتبین •

• ڈاکٹر خواجہ فراز بادامی

ایم اے، پی ایچ ڈی، ایس ایل ای ٹی۔

• ڈاکٹر محمد اقبال آئی جرمن

ایم اے، پی ایچ ڈی، ایس ایل ای ٹی۔

فہرست

نمبر	عنوان	مقالہ نگار	مقام	صفحہ نمبر
۱	دکن کا کہنہ مشق شاعر۔ محبّ کوثر	ڈاکٹر عبدالرحیم اے۔ مُلا	Muddebihal	30
۲	جدید دکنی کا منفرد شاعر۔ سلیمان خطیب	ڈاکٹر سید تاج الہدیٰ محمد یوسف خطیب	Belagavi	37
۳	حامد اکمل کی غزل گوئی	ڈاکٹر سید علیم اللہ حسینی	Vijaypur	44
۴	حمید سہروردی بہ حیثیت نظم گو	ڈاکٹر محمد اقبال جاوید	Maharashtra	47
۵	کمال دکنی ۔۔ دکنی شاعری کا ایک باکمال شاعر	ڈاکٹر سمیع الدین	Vijaypur	55
۶	دکن کے کھن کا انمول ہیرا۔۔ سلیمان خطیب	ڈاکٹر قاضی شکیل الدین	Maharashtra	61
۷	آصف اقبال کی شعری فکر	ڈاکٹر ہاجرہ پروین	Vijaypur	72
۸	دبستانِ کرناٹک میں جدید اردو غزل کا آہنگ	ڈاکٹر بلقیس بیگم	West Bengal	78
۹	ہندو پاک کا ممتاز شاعر ۔۔حمید الماس	ڈاکٹر خواجہ بندہ نوازی انڈیلر	Gokak	85
۱۰	وحید انجم ۔۔فن و شخصیت	ڈاکٹر محمد اقبال جرمن	Kudchi	89
۱۱	سرگوشیوں کا شاعر۔۔ مظہر محی الدین	پروفیسر ذبیح اللہ	Bangalore	94

© جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ

کتاب : اسرارِ ادب

مرتبین : ڈاکٹر خواجہ فراز بادامی

ڈاکٹر محمد اقبال۔ آئی۔ جرمن

سنِ اشاعت : ستمبر ۲۰۲۰ء

صفحات : 126

سرِ ورق و کمپوزنگ : عمران عبدالوہاب لُنجے

ناشر : اشاعت پرنٹنگ، شولاپور۔

قیمت : -/170

کتاب ملنے کا پتہ

* Dr. Khwaja Faraz Badami

J.S.S. Degree College, Gokak - 591307

Mob. 7676056825

* Dr. M. I. Jarman

B.Shankaranand Arts and commerce Degree College Kudachi.
Belagavi Karnataka Mob. 9945786968

ISBN : 978-1-716-36577-5

فہرست

حصہ نثر

نمبر شمار	عنوان	صنف / قسم	مصنف	صفحہ نمبر
۱	وقت	مضمون	ڈپٹی نذیر احمد	10
۲	سیر پہلے درویش کی	داستان	میر امن دہلوی	13
۳	مولانا وحیدالدین سلیم	خاکہ	مولوی عبدالحق	17
۴	گل بانو	تاریخ	خواجہ حسن نظامی	21
۵	منظور	افسانہ	سعادت حسن منٹو	28
۶	سنیما کا عشق	طنز و مزاح	پطرس بخاری	38
۷	چھتری	ڈرامہ	غلام یزدانی	44
۸	چارپائی	انشائیہ	رشید احمد صدیقی	52
۹	انٹرنیٹ اور اردو	معلوماتی مضمون	ایم مبین	60
۱۰	گیسوئے اردو گیسو دراز	سفرنامہ	جاوید دانش	66
۱۱	عروض بہ فتح عین	عروض	ڈاکٹر خواجہ فراز بادامی	73

حصہ نظم

نمبر شمار	عنوان	صنف / قسم	شاعر	صفحہ نمبر
۱	اے خدا	نظم، دُعا	جوش ملیح آبادی	87
۲	شہادت حضرت امام حسین	مرثیہ	مرزا دبیر	89

ASRAR-E-ADAB

ISBN
9 781716 365775

Compiled by
Dr. Khwaja Faraz Badami
M. A., Ph.D., SLET.

Dr. Md. Iqbal I. Jarman
M. A., Ph.D., SLET.

POSTED AT LPC Delhi RMS
ON 24-25 March 2022
R.N.I No. 2186/57

POSTAL REGN. NO.
DL (C) - 01/1195/2021-23, Licensed to Post
Without Prepayment U (C) - 160/2021-23
ISSN: 2456-8511

اشاعت کا 82واں سال
ہفت روزہ
ہماری زبان
HAMARI ZABAN (Weekly)

انجمن ترقی اردو (ہند)

Date of Publication: 23-01-2022 • Price: 5/- • (01-28 April 2022, • Issue: 13, 14, 15, 16 • Vol: 81)

مورخہ: یکم تا ۲۸ اپریل ۲۰۲۲ • شمارہ نمبر: ۱۳ تا ۱۶ • جلد نمبر: ۸۱

قسط (1)

54 اوزانِ رباعی

اور شجرۂ اخرب و شجرۂ اشتر: تجزیاتی مطالعہ

ڈاکٹر خواجہ فراز بادامی

تفصیل ہائے اوزانِ رباعی

'**غلطاں غلطاں ہمی رود تالبِ گور**' کہتے ہیں یہ مصرع جوز بازی کھیلتے ہوئے سلطان یعقوب بن لیث صفار کا بیٹا گنگنا رہا تھا، جس نے لوگوں کو بہت متاثر کیا۔ یہ بات الگ کہ حقیقت یا حکایت، لیکن ایران کا نامی گرامی شخص ابوعبداللہ جعفر بن محمد سمرقندی متوفی 329ھ ہے، استاد رودکی کے نام سے مشہور زمانہ رہا۔ یہی وہ ذہین و متین شخص ہے کہ جس نے اسی مصرع کی بنیاد پر رباعی کے اوزان ایجاد کیے، اور بحر ہزج **مفاعیلن مفاعیلن مفاعیلن مفاعیلن** کو 'بحر رباعی' سے مخصوص کیا۔

فارسی ادبیات کے ممتاز مورخ اور دانشور ڈاکٹر ذبیح اللہ صفا 'تاریخ ادبیات در ایران' میں لکھتے ہیں کہ

''رودکی چوتھی صدی ہجری کے آغاز کا استاد اور ماہر شاعر ہے، جس کو شاعری میں اس کی بلند پایگی، فارسی گو شاعروں کی امامت و پیشوائی اور بہت سے اصناف کلام کا افتتاح و آغاز کرنے کی وجہ سے، بجا طور پر 'استاد شاعران' کا لقب دیا گیا ہے۔ جس قدیم ترین اور مستند ترین ماخذ میں اس کا تذکرہ ہے یعنی سمعانی اپنی کتاب 'الانساب' میں اس کی کنیت، نام اور نسب 'ابوعبداللہ جعفر بن محمد' لکھا ہے۔ 'رودکی' کے نام سے اس کی شہرت کی وجہ سمرقند کے ایک علاقے 'رودک' کی طرف اس کا انتساب ہے۔''

اوزانِ رباعی کے حوالے سے بیشتر عروض کی کتابوں میں ایک دلچسپ حکایت بیان کی جاتی ہے، یہ مانا جا سکتا ہے کہ کچھ حکایتوں کی کوئی فنی و ادبی حقیقت نہیں ہوتی، نہ سہی؛ لیکن کبھی کبھی ان سے چشم پوشی محال معلوم ہوتی ہے کہ کسی بھی خوب صورت فن پارے کے خلق کرنے میں ان کا بنیادی طور پر اہم رول ہوتا ہے، نیز تاریخ و تہذیب اور زمان و مکان سے ان کا تعلق گہرا ہوتا ہے۔ یہاں اس بات سے کوئی بحث نہیں، عرض صرف یہ کرنا ہے کہ وزنِ رباعی کے ایجاد کا معاملہ بھی اس سے کچھ الگ نہیں۔

پروفیسر عنوان چشتی 'قواعد العروض' کے حوالے سے لکھتے ہیں:

اوزان رباعی کے حوالے سے بیشتر عروض کی کتابوں میں ایک دلچسپ حکایت بیان کی جاتی ہے، یہ مانا جاسکتا ہے کہ کچھ حکایتوں کی کوئی فنی و ادبی حقیقت نہیں ہوتی، نہ سہی؛ لیکن کبھی کبھی ان سے چشم پوشی محال معلوم ہوتی ہے کہ کسی بھی خوب صورت فن پارے کے خلق کرنے میں ان کا بنیادی طور پر اہم رول ہوتا ہے، نیز تاریخ و تہذیب اور زمان و مکان سے ان کا تعلق گہرا ہوتا ہے۔ یہاں اس بات سے کوئی بحث نہیں، عرض صرف یہ کرنا ہے کہ وزن رباعی کے ایجاد کا معاملہ بھی اس سے کچھ الگ نہیں۔

''سلطان یعقوب بن لیث صفار کا لڑکا جوز بازی کر رہا تھا، اس کھیل میں اس کی زبان پر یہ کلمہ جاری ہوا۔ '**غلطاں غلطاں ہمی رود تالبِ گور**' جس کو سن کر لوگوں کے دلوں کو خوشی حاصل ہوئی، یعنی دماغوں کی خشکی تری میں تبدیل ہو گئی۔ اس لیے اس کا نام ترانہ رکھا گیا، اور اسی سے اوزانِ رباعی کو ماخوذ قرار دیا۔'' (عروضی اور فنی مسائل ص ۵۸)

اصل بات یہ ہے کہ رودکی نے اسی مذکورہ بالا مصرع پر مزید تین مصرعے اصولاً نظم کیے، یعنی چار مصرعوں والی مختصر نظم لکھی، اور وہ اس طرح تشکیل اوزانِ رباعی کے لیے کوئی بیپ زرڈ طریقہ نہیں اپنایا بلکہ اس سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ اس کے پیش نظر ایک واضح نظام شعر موجود تھا۔

تخریجِ اوزانِ رباعی کے بارے میں جاننے سے پہلے کچھ وضاحت بہت ضروری معلوم ہوتی ہے، اردو شاعری میں جن مختصر اصناف سخن کو فروغ حاصل ہوا، ان میں رباعی سب سے پہلے آتی ہے، اپنے مخصوص ہیئت و ترتیب، مخصوص انداز و اسلوب، اور مخصوص اصول و اوزان میں لکھی جانے والی یہ ایک چہار مصراعی نظم ہے، اور اس کے مختلف نام ہیں، بلکہ اسے یوں کہا جائے کہ اس نظم کو شروع شروع میں دو بیتی اور ترانہ بھی کہا جاتا رہا ہے، لیکن اردو میں اب یہ اصطلاح رائج نہیں ہے۔

اس نظم کو دو بیتی کہنے کے لیے اس کی وجہ یہ بتائی جاتی ہے کہ اس میں ایک مطلع اور ایک شعر ہوتا ہے، اور اس میں کمال درجے کی موسیقیت اور غنائیت پائی جاتی ہے، اسی لیے اسے ترانہ بھی کہا جاتا رہا ہے۔ قواعد العروض میں رباعی کی تعریف کچھ یوں ملتی ہے:

''ترانہ، رباعی کو کہتے ہیں اور وہ انھیں اوزان وافی میں شامل ہیں اور یہ لفظ ترے سے منسوب ہے۔''

بعض لوگوں نے اسے ایک مشکل ترین صنفِ نظم قرار دیا ہے۔ حبیب الرحمان شیروانی 'کلیاتِ عزیز' کے مقدمے میں یوں رقم طراز ہیں:

[جوش ملیح آبادی جیسے قد آور شاعر نے بھی اسے مشکل صنفِ سخن کہا ہے، 'رباعیاتِ محروم' کے دیباچے میں وہ لکھتے ہیں:

[رباعی کو لے کر بہت کچھ کہا جاتا رہا ہے، دراصل حقیقت یہ ہے کہ اس کے اوزان میں ہونے والے عمل کو نہیں سمجھنے کی وجہ سے اکثر شعرا حضرات لغزش کا شکار رہے ہیں، اور اپنی ہر چار مصرعوں والی نظم کو 'رباعی' کہہ گئے ہیں، جب کہ وہ رباعی نما نظم 'قطعہ' کے زمرے میں بہ خوبی آتی ہے۔ اسی طرح قطعہ کو رباعی سمجھ کر اپنی کتابوں میں غلط اندراج کیے ہیں۔ اس کی کئی مثالیں ملتی ہیں لیکن یہ مبحث طوالت کا باعث بنتی ہے، اس لیے اتنا سمجھ لیجیے کہ قطعہ اور رباعی میں جو ایک باہمی نمایاں فرق ہے، وہ اس کی ہیئتی ترکیب نہیں، اس کے تخصیصِ بحر و وزن کی وجہ سے ہے۔

جو لوگ قطعات کو رباعی لکھنے کے حق میں بضد نظر آتے ہیں، وہ جواز میں اقبالؔ اور بابا طاہر عریان ہمدانی کے قطعات یا دو بیتیاں پیش کرتے ہیں، باوجود اس کے کہ ان دونوں کو علمِ عروض میں دستگاہ حاصل نہیں تھی۔ ڈاکٹر عندلیب شادانی نے اپنی کتاب 'تحقیقات' میں ان کے قطعات کو رباعی کہنے کی پرزور

54 اوزانِ رباعی

دوسری قسط

اور شجرۂ اخرب و شجرۂ اشتر: تجزیاتی مطالعہ

علامہ سحرؔ عشق آبادی کے ایجاد کردہ بنیادی اوزان یہ ہیں:

۱) **مَفْعُولُ مُفَا عِلُنْ مُفَا عِلُنْ فَعَلْ** (بحر ہزج مثمن اخرب، مقبوض، مقبوض، مجبوب)

۲) **مَفْعُولُ مُفَا عِلُنْ مُفَا عِلُن فَعُولْ** (بحر ہزج مثمن اخرب، مقبوض، مقبوض، اہتم)

۳) **مَفْعُولُ مُفَا عِیلُ مُفَا عِلُنْ فَعَلْ** (بحر ہزج مثمن اخرب، مکفوف، مقبوض، مجبوب)

۴) **مَفْعُولُ مُفَا عِیلُ مُفَا عِلُنْ فَعُولْ** (بحر ہزج مثمن اخرب، مکفوف، مقبوض، اہتم)

ان مندرجہ بالا اوزان پر عمل تخنیق کرنے سے مروجہ بارہ (۱۲) اوزان دریافت ہوتے ہیں اس طرح سے رباعی چھتیس (۳۶) اوزان پر مشتمل ہوتی ہے۔ کچھ لوگ ہیں کہ اب بھی اپنی کوتاہ فہمی کی وجہ سے چوبیس (۲۴) اوزان رباعی ہی کہنے پر مسلسل مصر دکھائی دیتے ہیں۔ عنوان چشتی نے بھی اسے مغالطہ قرار دیا ہے:

"عروض کی کتابوں میں مرقوم ہے کہ رباعی کے ۲۴ اوزان ہیں، یہ ایک مغالطہ ہے۔ رباعی کے اوزان 36 ہیں۔" (عروضی اور فنی مسائل ص:59)

ایک بات یہ بھی یاد رہے کہ علامہ سحر عشق آبادی اور استاد رودکی کے ان اوزان رباعی میں چھے (6) زحافات کا استعمال ہوا ہے، جو یوں ہیں۔

1۔اخرب 2۔کف 3۔قبض 4۔جب 5۔ہتم 6۔تخنیق

عروض کی چند ہی کتابوں میں اس جانب ایک صحیح اشارہ ضرور ملتا ہے کہ

"رباعی کے مزاحف (1) اخرب، (2) مکفوف، (3) مقبوض، (4) مجبوب، (4) مجبوب وقلی، (6) مخنق اور بس!" (عروض خلیل متقی ص:133)

"وہ زحافات جو اوزان رباعی کے سلسلے میں استعمال کیے جا سکتے ہیں مثلاً (1) خرب (2) کف (3) قبض (4) جب (5) ہتم (6) تخنیق۔

(عروضی اور فنی مسائل ص:60)

اوزان رباعی میں جن چار غلط زحافات کا تذکرہ آتا ہے وہ یہ ہیں:

(1) خرم (2) شتر (3) بتر (4) زلل

رباعی کے اصل وزن پر ایک نظر ڈالیں۔

بحر ہزج مثمن سالم مَفَاعِیلُن مَفَاعِیلُن مَفَاعِیلُن مَفَاعِیلُن

اس کا مزاحف وزن (جو رباعی کا اصل وزن ہے) مع اصطلاحی نام،

مَفْعُولُ مَفَاعِیلُ مَفَاعِلُنْ فَعَلْ رفَعُولْ

اخرب مکفوف مقبوض مجبوب راہتم

رباعی کے اس مجوزہ وزن میں جن زحافات کا عمل ہوا ہے، وہ دیکھیے:

۱|**مَفْعُولُ** (اخرب)

مَفَاعِیلُن (سالم) پر زحاف 'خرب' سے حاصل ہوتا ہے یہ مرکب زحاف ہے۔ زحاف 'کف' اور زحاف 'خرم' کا مجموعہ ہے زحاف خرم کی وجہ سے صدر و ابتدا سے مخصوص پاتا ہے۔

زحاف کف: رکن سے ساتواں حرف ساقط کیا جاتا ہے بہ شرط یہ کہ وہ سبب خفیف کا ساکن ہو، یہ عام زحاف ہے۔

مَفَاعِیلُن (سالم) پر زحاف 'کف' کے عمل سے یعنی رکن سے ساتواں حرف ساقط کیا گیا اس طرح مَفَاعِیلُن سے 'ن' گر جاتا ہے مَفَاعِیلُ بچ رہتا ہے اس کا اصطلاحی نام 'مکفوف' کہلاتا ہے، مَفْعُولُ حاصل کرنے کے لیے اس پر زحاف خرم، کا عمل کیا جاتا ہے

'**زحاف خرم**': رکن مَفَاعِیلُن سے صدر و ابتدا کے وتد مجموع کا پہلا حرف 'م' گرایا جاتا ہے۔

نوٹ: ارکان عشرہ میں تین ارکان ایسے ہیں جن کے وتد مجموع کے حروف اول کو اسقاط کیا جاتا ہے، اس عمل کو خلیل بن احمد بصری نے زحاف خرم سے ہی کیا، لیکن بعد کے عروضیوں نے ان کے الگ الگ نام تجویز کیے فَعُولُن سے فَعْلُن (اثلم)، مَفَاعِیلُن سے مَفْعُولُن (اخرم)، مُفَاعَلَتُن سے مُفْتَعِلُن (اعضب) اور یہ تمام ارکان صدر و ابتدا کے لیے خاص ہیں۔

۲|**مَفَاعِیلُ** (مکفوف)

اس کی تعریف اوپر دیکھ چکے ہیں۔

۳|**مَفَاعِلُنْ** (مقبوض)

'**زحاف قبض**': رکن سے پانچواں حرف ساقط کیا جاتا ہے بہ شرط یہ کہ وہ سبب خفیف کا ساکن ہو اصطلاحی نام 'مقبوض' کہلاتا ہے، یہ عام زحاف ہے۔

مَفَاعِیلُنْ (سالم) پر زحاف 'قبض' کے عمل سے یعنی رکن سے پانچواں حرف ساکن ساقط کیا گیا، اس طرح مَفَاعِیلُن سے 'ی' گر جاتی ہے مَفَاعِلُن بچ رہتا ہے، اس لیے اصطلاحی نام 'مقبوض' کہلاتا ہے۔

۴|**فَعَلْ** (مجبوب) ر **مَفَاعِیلُن** (سالم) پر 'زحاف جب' کے عمل سے یعنی رکن کے آخر سے دو سبب خفیف کا اسقاط کرنا ہے یا دوسری معنی میں عمل حذف کا دو مرتبہ کیا جانا، اور یہ عروض و ضرب سے مخصوص ہے۔

۵|**فَعُوْلُ** (اہتم)

مَفَاعِیلُن (سالم) پر عمل ہتم محصول ہوتا ہے اور یہ حذف اور قصر کا مرکب ہے۔

'**زحاف حذف**: رکن کے آخر سے ایک سبب خفیف کا سقوط ہے۔

'**زحاف قصر**': رکن کے آخر سے ایک سبب خفیف کے حرف متحرک کو گرایا جاتا ہے۔ اس طرح حاصل شدہ رکن مختص بہ عروض و ضرب ہوتا ہے۔

عمل تخنیق:

اس کی تعریف یہ ہے کہ مابعد رکن کے پہلے متحرک حرف کو ساکن کر کے ماقبل رکن کے آخری متحرک حرف سے پیوست کرنا۔ مثلاً مَفْعُولُ + مَفَاعِیلُ (اخرب، مکفوف) یعنی مَفْعُولُم فَاعِیلُ جیسے مانوس رکن مَفْعُولُن۔ مَفْعُولُ (اخرب مکفوف مخنق) سے بدل لیا جاتا ہے۔ مندرجہ بالا وزن پر عمل تخنیق فرمانے سے مندرجہ ذیل وزن حاصل ہوتا ہے۔

مَفْعُولُن مَفْعُولُن فَاعِلُن فَعَلْ رفَعُولْ

اصطلاحی نام یوں ہے "بحر ہزج مثمن اخرب، مکفوف مخنق، مقبوض مخنق، مجبوب راہتم"

بعض عروض دانوں نے اوزان رباعی کو سمجھنے میں غلطی کی ہے، اور بلا تحقیق وتجزیے کے وہ یوں لکھتے ہیں، کہ اوزان رباعی میں استعمال ہونے والے زحافات نو ہیں۔

"خرب، کف، قبض، شتر، خرم، جب، ہتم، بتر، زلل"

اور یگانہ چنگیزی کل دس زحافات کی بات کرتے ہیں۔

"رباعی بحر ہزج سے مخصوص ہے، اس میں دس ارکان مستعمل ہیں۔ ایک سالم (**مَفَاعِیلُن**) نو مزاحف یعنی **مَفَاعِلُنْ** (مقبوض) **مَفَاعِیلُ** (مکفوف) **فَاعِلُن** (اشتر) **مَفْعُولُنْ** (اخرم) **مَفْعُولُ** (اخرب) **فَعُولُ** (اہتم) **فَاعْ** (ازل) **فَعَلْ** (مجبوب) **فَعْ** (ابتر)۔۔" (چراغ سخن - یاس یگانہ چنگیزی)

جب کچھ لوگ اس طرح سے مانتے ہیں تو یہ بات واضح ہے، کہ ان کے نزدیک صدر و ابتدا میں نظر آنے والا **مَفْعُولُنْ** کو 'اخرم، حشوین میں نظر آنے والے **فَاعِلُنْ** کو اشتر، **مَفْعُولُ** کو اخرب، **مَفَاعِیلُن** کو سالم اور عروض و ضرب کے **فَعْ** کو ابتر اور **فَاعْ** کو ازل۔

یہ بات ذہن نشین رہے کہ حشوین میں آنے والے **فَاعِلُنْ** کو اشتر اور **مَفْعُولُ** کو اخرب کہنا بالکل غلط ہے۔ یہ دونوں رکن زحاف تخنیق کے مرہون منت ہیں، اس **فَاعِلُنْ** کو 'مقبوض مخنق' اور **مَفْعُولُ** کو 'مکفوف مخنق' کہتے ہیں۔ اسی طرح صدر و ابتدا کا **مَفْعُولُنْ** 'اخرم' نہیں، بلکہ یہ اخرب ہی ہے جس پر زحاف تخنیق کا اثر ہے۔

وزن رباعی کے دوسرے رکن **مَفَاعِیلُ** (مکفوف) کا متحرک 'م' سے پہلے رکن کے **مَفْعُولُ** (اخرب) کے آخری متحرک 'لُ' سے پیوست ہو کر **مَفْعُولُنْ** بنتا ہے لہٰذا اس کو اخرب ہی کہنا چاہیے، اور یہی صحیح و درست ہے جو لوگ اسے 'اخرم' کہتے ہیں وہ زبردست مغالطے کا شکار ہیں۔

اوزان رباعی میں آنے والے '**فَعْ** کو ابتر (جب کہ 'بتر' کا عمل **مَفَاعِیلُنْ** پر ہوتا ہی نہیں) اور **فَاعْ** کو ازل کہنا بھی ناقص سمجھ کی غمازی ہی ہے، دراصل یہاں '**فَعْ** 'مجبوب مخنق اور '**فَاعْ** 'اہتم مخنق ہے۔

امام خواجہ حسن قطان خراسانی جیسے شش جہت شخصیت جن کی علمی عظمت کا دنیا اعتراف کرتی ہے، اوزان رباعی کو دو شجروں میں بانٹ دیا، یعنی **مَفْعُولُ** والے اوزان کو 'شجرۂ اخرب' اور **مَفْعُولُنْ** والے اوزان کو 'شجرہ اخرم' سے منسوب کیا۔ ایک ایسا مغالطہ بے احتیاطی اور ان کی کم توجہی کی وجہ سے پیدا ہوا تھا، اور آج بھی انھیں کی اتباع میں اکثر نام نہاد عروضی ان شجروں کو تسلیم کرتے ہیں، جس کے یہی معنی ہیں کہ وہ اس میں وردو مَفْعُولُن کو اخرم اور حشوین کے مَفْعُولُ کو اخرب ہی سمجھتے ہیں۔ یونیورسٹیوں کے نصابی کتب میں بھی یہی کچھ پڑھنے کو ملتا ہے یوں کہیے کہ اب یہ ایک عام روش بن چکی ہے۔ فن کی نزاکتوں سے ہم باشعور ہوتے تو یہ اندازہ لگانا ذرا مشکل نہیں تھا، کہ نظامِ عروض میں ان شجروں کی کیا حقیقت اور کیا حیثیت ہے۔

سچ تو یہ ہے کہ علم عروض میں کلام موزوں اور ناموزوں کی پرکھ کی جاتی ہے، اور بحر و زحافات کا مطالعہ ہوتا ہے، اس میں شجرہ ایجاد کرنا یا غیر حقیقی اصطلاحیں گھڑنا دامن عروض پر بار کے سوا اور کچھ بھی نہیں۔ خواجہ حسن قطان خراسانی نے غلط شجروں کو تشکیل دے کر ایک زبردست مغالطہ پیدا کیا۔ اوزان رباعی میں زحاف خرم کا عمل دخل ہی نہیں اس کے نام سے منسوب ایک شجرہ ترتیب دینا گمراہ کن بات تھی، اور یہیں سے اس طرح شجروں کو عروضی کتابوں میں لکھنے کی غلط روش شروع ہو گئی، اور یہی کچھ نصابوں میں بھی شامل ہو گیا۔

پروفیسر عنوان چشتی لکھتے ہیں کہ:

"رکن مَفْعُولُن کو اخرم قرار دینا صحیح نہیں ہے۔ رباعی کے اوزان میں زحاف خرم کا استعمال نہیں کیا جا سکتا۔ یہ رکن مَفْعُولُن تخنیق سے حاصل ہوتا ہے۔ اس لیے خواجہ حسن قطان خراسانی نے رباعی کے ۲۴ اوزان کو دو شجروں (دائرۂ اخرب اور دائرۂ اخرم) میں تقسیم کر کے زبردست مغالطہ پیدا کیا ہے جس سے اردو کے تمام بڑے عروضی مزید مغالطے کا شکار ہوئے ہیں۔ یہ دائرے فضول بھی ہیں اور غلط بھی۔" (عروضی اور فنی مسائل ص ۷۰)

(باقی اگلے شمارے میں ملاحظہ فرمائیں)

Co-ordinator, IQAC
J.S.S. Arts, Science &
Commerce, College, Gokak.

J.S.S. Arts Sc. Comm. Degree & P.G. College GOKAK

PRINCIPAL
J.S.S. ARTS, SCIENCE AND
COMMERCE COLLEGE, GOKAK